सम-सामयिक

घटना चक्र

परीक्षा संवाद के 31 वर्ष

To Get Current Affairs PDF,
WhatsApp "SSGC" to 8881445556

2024

केन्द्रीय एवं राज्य सिविल सेवा परीक्षाओं के 245 सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्रों के

अध्यायवार विभाजित **हल प्रश्न पत्र**

सीसैट सम्मिलित

प्रारम्भिक परीक्षा के सामान्य अध्ययन पाठ्यक्रम के अनुरूप व्यवस्थित

2 सामान्य अध्ययन

8 खण्डों में द्वितीय

पूर्वावलोकन®

(1990 से मार्च, 2024 तक के प्रश्न पत्र शामिल)

(UPPCS मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र भी शामिल)

विशेष आकर्षण
अध्यायवार
रिवीजन नोट्स

इस पुस्तक के साथ
NCERT सार
प्राचीन इतिहास
निःशुल्क

भारतीय इतिहास

CASH BACK ₹50

Scan, JOIN & FOLLOW
घटना चक्र CHANNEL
Get News Update, Free PDF, Free Coupon Code and Much more...

ssgcp.com
t.me/ssgcp
ssgc.gs.qa
ssghatnachakra
SamsamyikGhatna

ई-बुक पढ़ें अपडेटेड रहें

See Cover Page - 2

Validity upto April, 2025

© प्रकाशकाधीन :
संस्करण- 14वां
संस्करण वर्ष - 2024
ले.- SSGC
मूल्य : 675/-
ISBN : 978-93-95943-68-0
मुद्रक - कोर पब्लिशिंग सोल्यूशन
मुद्रण क्रम- प्रथम

संपर्क-
सम-सामयिक घटना चक्र
188A/128 एलनगंज, चर्चलेन,
प्रयागराज (इलाहाबाद) - 211002
Ph.: 0532-2465524, 2465525
Mob.: 9335140296
e-mail : ssgcald@yahoo.co.in
Website : ssgcp.com
e-shop : shop.ssgcp.com

■ इस प्रकाशन के किसी भी अंश का पुनः प्रस्तुतीकरण या किसी भी रूप में प्रतिलिपिकरण (फोटोप्रति या किसी भी माध्यम में ग्राफिक्स के रूप में संग्रहण, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिकीकरण द्वारा जहां कहीं या अस्थायी रूप से या किसी अन्य प्रकार के प्रसंगवश इस प्रकाशन का उपयोग भी) कॉपीराइट के स्वामित्व धारक के लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

किसी भी प्रकार से इसके भंग होने या अनुमति न लेने की स्थिति में बिना किसी पूर्व सूचना के उन पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

*इस प्रकाशन से संबंधित सभी विवादों का निपटारा न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज (इलाहाबाद) के न्यायालय न्यायाधिकरण के अधीन होगा।

संकलन सहयोग-
- **अजीत कुमार पाण्डेय**
- **पीयूष कुमार सिंह**
- **आलोक कुमार पाण्डेय**
- **फतेह बहादुर यादव**
- **पीयूष तिवारी**
- **ज्ञान प्रकाश**
- **शशिचन्द्र उपाध्याय**
- **दिग्विजय पाण्डेय**
- **विनोद त्रिपाठी**
- **फैज़ुल इस्लाम अंसारी**
- **आनंद कुमार प्रजापति**

अनुक्रमणिका

भारतीय इतिहास

(आठ खंडों में द्वितीय)

अध्याय		पृष्ठ संख्या
I. प्राचीन भारत का इतिहास		
1.	पाषाण काल	B9-B17
2.	सैंधव सभ्यता एवं संस्कृति	B18-B35
3.	वैदिक काल	B35-B52
4.	बौद्ध धर्म	B53-B74
5.	जैन धर्म	B74-B86
6.	शैव,भागवत धर्म	B86-B92
7.	छठी शती ई.पू. राजनीतिक दशा	B92-B103
8.	यूनानी आक्रमण	B104-B105
9.	मौर्य साम्राज्य	B105-B128
10.	मौर्योत्तर काल	B128-B140
11.	गुप्त एवं गुप्तोत्तर युग	B140-B169
12.	प्राचीन भारत में स्थापत्य कला	B169-B185
13.	दक्षिण भारत (चोल, चालुक्य, पल्लव एवं संगम युग)	B185-B201
14.	प्राचीन साहित्य एवं साहित्यकार	B201-B213
15.	पूर्व मध्य काल	B213-B223
II. मध्यकालीन भारतीय इतिहास		
1.	भारत पर मुस्लिम आक्रमण	B224-B230
2.	दिल्ली सल्तनत : गुलाम वंश	B231-B238
3.	खिलजी वंश	B238-B244
4.	तुगलक वंश	B244-B253
5.	लोदी वंश	B253-B255
6.	विजय नगर साम्राज्य	B255-B262
7.	दिल्ली सल्तनत : प्रशासन	B262-B267
8.	दिल्ली सल्तनत : कला एवं स्थापत्य	B268-B271
9.	दिल्ली सल्तनत : साहित्य	B271-B278
10.	दिल्ली सल्तनत : विविध	B278-B283
11.	उत्तर भारत एवं दक्कन के प्रांतीय राजवंश	B283-B290
12.	भक्ति एवं सूफी आंदोलन	B290-B307
13.	मुगल वंश : बाबर	B307-B312
14.	हुमायूं और शेरशाह	B312-B317
15.	अकबर	B317-B331
16.	जहांगीर	B332-B337
17.	शाहजहां	B337-B342
18.	औरंगजेब	B342-B347
19.	मुगलकालीन प्रशासन	B348-B354
20.	मुगलकालीन संगीत एवं चित्रकला	B354-B358
21.	मुगलकालीन साहित्य	B359-B363
22.	मुगल काल : विविध	B364-B371
23.	सिक्ख संप्रदाय	B372-B374
24.	मराठा राज्य और संघ	B375-B381
25.	मुगल साम्राज्य का विघटन	B381-B385
III. आधुनिक भारत का इतिहास		
1.	यूरोपीय कंपनियों का आगमन	B386-B397
2.	ईस्ट इंडिया कंपनी और बंगाल के नवाब	B397-B402
3.	क्षेत्रीय राज्य : पंजाब एवं मैसूर	B402-B407
4.	गवर्नर/गवर्नर जनरल/वायसराय	B407-B429
5.	ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	B429-B438
6.	1857 की क्रांति	B439-B454
7.	अन्य जन आंदोलन	B455-B470
8.	आधुनिक भारत में शिक्षा का विकास	B470-B477
9.	आधुनिक भारत में प्रेस का विकास	B477-B489
10.	सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन	B489-B513
11.	कांग्रेस से पूर्व स्थापित राजनीतिक संस्थाएं	B513-B518
12.	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	B518-B531
13.	कांग्रेस में गरम दल और नरम दल	B531-B538
14.	भारत में क्रांतिकारी आंदोलन	B538-B553
15.	भारत से बाहर क्रांतिकारी गतिविधियां	B553-B559
16.	बंगाल विभाजन (1905) तथा स्वदेशी आंदोलन	B559-B565
17.	कांग्रेस : बनारस, कलकत्ता एवं सूरत अधिवेशन	B565-B570
18.	मुस्लिम लीग का गठन (1906)	B570-B572

अध्याय		पृष्ठ संख्या
19.	मार्ले-मिंटो सुधार	B572-B573
20.	दिल्ली दरबार और राजधानी परिवर्तन	B573-B574
21.	कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन	B575-B576
22.	होमरूल लीग आंदोलन	B577-B579
23.	गांधी एवं उनके प्रारंभिक आंदोलन	B579-B597
24.	किसान आंदोलन एवं किसान सभा	B597-B602
25.	ट्रेड यूनियन एवं साम्यवादी दल	B603-B605
26.	रौलेट एक्ट और जलियांवाला बाग हत्याकांड (1919)	B605-B611
27.	खिलाफत आंदोलन	B611-B614
28.	असहयोग आंदोलन	B614-B622
29.	स्वराज पार्टी का गठन (1923)	B623-B626
30.	साइमन कमीशन (1927)	B626-B631
31.	कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन, पूर्ण स्वराज प्रस्ताव (1929)	B631-B634
32.	सविनय अवज्ञा आंदोलन	B635-B641
33.	गांधी-इरविन समझौता	B641-B643
34.	कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931)	B643-B645
35.	गोलमेज सम्मेलन	B645-B649
36.	सांप्रदायिक पंचाट एवं पूना पैक्ट (1932)	B649-B653
37.	कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (1934)	B653-B656
38.	प्रांतीय चुनाव और मंत्रिमंडल का गठन (1937)	B656-B659
39.	कांग्रेस का त्रिपुरी संकट (1939)	B659-B660
40.	देशी रियासतें	B661-B662
41.	द्वितीय विश्व युद्ध	B662-B663
42.	पाकिस्तान की मांग	B664-B666
43.	व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940)	B667-B668
44.	क्रिप्स मिशन (1942)	B668-B670
45.	भारत छोड़ो आंदोलन	B670-B681
46.	सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज	B681-B688
47.	कैबिनेट मिशन योजना (1946)	B688-B691
48.	संविधान सभा (1946)	B691-B694
49.	अंतरिम सरकार का गठन (1946)	B694-B696
50.	भारत का विभाजन एवं स्वतंत्रता	B696-B704
51.	भारत का संवैधानिक विकास	B705-B719
52.	आधुनिक इतिहास : विविध	B719-B769
53.	पत्रिकाएं, पुस्तकें और उनके लेखक	B769-B799
54.	कला एवं संस्कृति	B799-B820
55.	परंपरागत पुरस्कार	B820-B824

संशोधित एवं परिवर्धित

पूर्वावलोकन

2010 में समसामयिक घटना चक्र द्वारा सर्वप्रथम प्रस्तुत पूर्वावलोकन शृंखला की उपयोगिता एवं लोकप्रियता अब किसी परिचय की मोहताज नहीं है। तब से अब तक लाखों पाठक इस शृंखला में संकलित प्रश्नों एवं उनकी व्याख्या हेतु प्रस्तुत पाठ्य सामग्री से लाभान्वित हुए हैं। इसी बीच संघ एवं विभिन्न राज्यों में सीसैट सम्मिलित प्रारंभिक परीक्षा प्रणाली लागू किए जाने के बाद सामान्य अध्ययन के नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप पूर्वावलोकन शृंखला को व्यवस्थित किए जाने की तीव्र आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इस संबंध में सुधी पाठकों से भी हमें सुझाव प्राप्त हुए थे। इसी आवश्यकता के मद्देनजर 2013 में पूर्वावलोकन की पुनर्रचना की गई थी जिसमें सिविल सेवा (संघ एवं राज्य) परीक्षाओं के सामान्य अध्ययन के 140 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पत्रों को सीसैट सम्मिलित प्रारंभिक परीक्षा के सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम के अनुरूप अध्यायवार संकलित किया गया। 11 प्रश्न पत्र शामिल करके वर्ष 2014 में पूर्वावलोकन शृंखला का अद्यतन संस्करण प्रस्तुत किया गया था। अब 2015 में 13, 2016 में 13, 2017 में 9, 2018 में 8, 2019 में 10, 2020 में 6, 2021 में 9, 2022 में 6, 2023 में 8 तथा 2024 में 11 प्रश्न-पत्रों को शामिल कर नया संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है। अद्यतन संस्करण की मुख्य विशेषता यह है कि प्रश्नों के हल हेतु आयोगों द्वारा जारी उत्तर पत्रकों से मिलाकर व्याख्या प्रस्तुत की गई है। जहां आयोग के उत्तर त्रुटिपूर्ण पाए गए हैं वहां इसका उल्लेख किया गया है। नए संस्करण में प्रश्नों को विषयवार पाठ्यक्रमानुसार तो संयोजित किया ही गया है, नवीन पाठ्यक्रम में वर्णित उपशीर्षकों के अनुरूप भी व्यवस्थित किया गया है। संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोगों के नवीन पाठ्यक्रम का अवलोकन किया जाए तो यह विदित होता है कि सभी संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में कमोबेश समानता ही है। एक अंतर यह है कि संघ में अर्थात आई.ए.एस. की परीक्षा के पाठ्यक्रम में जहां भाग-1 के तहत राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम का उल्लेख किया गया है, वहीं राज्य लोक सेवा आयोगों ने राज्य से संबंधित घटनाक्रम को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। अपने संकलन में हमारे प्रकाशन ने अद्यतन घटनाक्रम के राज्य आधारित प्रश्नों को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम के साथ ही संयोजित किया है किंतु भूगोल, राजव्यवस्था, इतिहास, पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था से संबंधित राज्य आधारित प्रश्नों के लिए अलग खंड बनाया है। इस प्रकार कुल 8 खंडों में संपूर्ण प्रश्नकोश संकलित किया गया है जिनमें से 7 सिविल सेवा पाठ्यक्रम के अनुरूप हैं जबकि एक खंड 8वां राज्य आधारित प्रश्नों पर केंद्रित है।

सामान्य अध्ययन

पूर्वावलोकन

निर्माण-प्रक्रिया

पूर्वावलोकन शृंखला के इस 14वें संशोधित संस्करण के तहत शृंखला के सभी खंडों की पुनर्रचना नए प्रारूप में संघ लोक सेवा आयोग एवं राज्य लोक सेवा आयोगों की सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षाओं में सीसैट सम्मिलित परीक्षा प्रणाली लागू किए जाने के बाद सामान्य अध्ययन के नवीन पाठ्यक्रम (देखें-बॉक्स) के अनुरूप की गई है। प्रस्तुत संकलन- **'पूर्वावलोकन'** के निर्माण हेतु संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित निम्न परीक्षाओं के सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्रों को शामिल किया गया है–

1. संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित आई.ए.एस. प्रारंभिक परीक्षा - 1993 से 2023 तक।
2. उ.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस., लोअर सबार्डिनेट एवं यू.डी.ए./एल.डी.ए. (आर.ओ./ए.आर.ओ.) प्रारंभिक परीक्षा 1990 से 2023 तक (सामान्य एवं विशेष चयन) तथा यू.डी.ए./एल.डी.ए. (आर.ओ./ए.आर.ओ.) मुख्य परीक्षा 2010 से 2021 तक।
3. उ.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस. मुख्य परीक्षा (सामान्य एवं विशेष चयन) 2002 से 2017 तक, लोअर सबार्डिनेट मुख्य परीक्षा, 2013 एवं 2015 (सामान्य एवं विशेष चयन), GIC प्रवक्ता परीक्षा 2010, 2017 एवं राजस्व निरीक्षक परीक्षा 2014
4. उत्तराखंड लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस. एवं यू.डी.ए./एल.डी.ए. प्रारंभिक परीक्षा 2002 से 2007 तक तथा पी.सी.एस. प्रारंभिक परीक्षा 2010 से 2021 एवं लोअर सबार्डिनेट (प्रा.) परीक्षा 2010.
5. उत्तराखंड लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस. मुख्य परीक्षा 2002 एवं 2006 तथा यू.डी.ए./एल.डी.ए. मुख्य परीक्षा 2007.
6. म.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस. प्रारंभिक परीक्षा 1990 से 2023 तक।
7. झारखंड पी.सी.एस. प्रारंभिक परीक्षा 2003 से 2023 तक।
8. झारखंड पी.सी.एस. मुख्य परीक्षा 2016.
9. छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस. प्रारंभिक परीक्षा 2003 से 2008 तक एवं पी.सी.एस. प्रारंभिक परीक्षा 2011 से 2023 तक।
10. राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस. प्रारंभिक परीक्षा 1993 से 2023 (पुनर्परीक्षा प्रश्न-पत्र 2013 सहित) तक।
11. बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित बिहार पी.सी.एस. परीक्षा 1992 से 2023 (पुनर्परीक्षा प्रश्न-पत्र 2022 सहित) तक।

● उक्त परीक्षाओं के कुल 245 प्रश्न-पत्रों को इस संकलन में शामिल किया गया है। सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र के हल को दो तरीकों से प्रस्तुत किया जा सकता है -

1. सभी परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र, वर्षवार।
2. सभी प्रश्न-पत्रों को सम्मिलित रूप से अध्यायवार विभाजित स्वरूप में।

हमने परीक्षार्थियों के लाभार्थ दूसरा जटिल स्वरूप चुना है, जिससे उन्हें प्रत्येक अध्याय के प्रश्न एक स्थान पर प्रश्नकोश के रूप में प्राप्त हो सकें। प्रस्तुतीकरण हेतु निम्न प्रक्रिया अपनायी गई है।

❑ **प्रथम चरण-** सामान्य अध्ययन के 245 वस्तुनिष्ठ प्रश्न-पत्रों का एकत्रण।

सामान्य अध्ययन का नवीन पाठ्यक्रम

1. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व की सम-सामयिक घटनाएं
2. भारतीय इतिहास और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
3. भारत और विश्व भूगोल - भारत तथा विश्व का भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक भूगोल
4. भारतीय राजव्यवस्था और शासन - संविधान, राजनीतिक प्रणाली, पंचायती राज, लोक नीति, अधिकारों के मुद्दे आदि
5. आर्थिक और सामाजिक विकास - सतत विकास, निर्धनता, समावेशन, जनसांख्यिकी, सामाजिक क्षेत्र पहलें आदि
6. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, जैव - विविधता और जलवायु परिवर्तन पर सामान्य मुद्दे (विषय विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं)
7. सामान्य विज्ञान

नोट : उपर्युक्त पाठ्यक्रम संघ लोक सेवा आयोग एवं उ. प्र. राज्य लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा का है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि के लोक सेवा आयोगों ने अपने पाठ्यक्रमों में उपर्युक्त के साथ-साथ राज्य संबंधी जानकारी को भी समाहित किया है।

❑ **द्वितीय चरण-** 245 प्रश्न-पत्रों के प्रश्नों का संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोगों की सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा में सीसैट सम्मिलित होने के पश्चात सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र के नवीन पाठ्यक्रमानुसार विषयवार 8 शीर्षकों में विभाजन।

❑ **तृतीय चरण-** प्रत्येक विषय का पुनः नए पाठ्यक्रमानुसार अध्यायवार क्रमबद्ध संयोजन।

❑ **चतुर्थ चरण-** दुहराव वाले प्रश्नों को उनके परीक्षा उल्लेख के बाद अलग कर दिया जाना।

❑ **पंचम चरण-** सभी प्रश्नों की विस्तृत व्याख्या के साथ हल प्रस्तुतीकरण। सभी हल संबंधित विषयों पर उपलब्ध प्रख्यात लेखकों की पुस्तकों को संदर्भ के रूप में उपयोग करते हुए तथा इंटरनेट पर उपलब्ध विस्तृत तथ्यपरक सामग्रियों की सहायता से विशेषज्ञों के परीक्षणोपरांत प्रस्तुत किए गए हैं।

- विभिन्न अध्यायों के अंतर्गत प्रश्नों की वस्तुनिष्ठ प्रवृत्ति क्या कर रही है, उसका खुलासा यह संकलन बखूबी करता है।
- विभिन्न परीक्षाओं में दुहराव की प्रवृत्ति वाले प्रश्नों का विशेष उल्लेख किया गया है।
- यह संकलन सामान्य अध्ययन के विभिन्न अध्यायों पर एक ऐसा प्रश्नकोश है, जिससे आगामी परीक्षाओं में प्रश्न पूछे जाने की अत्यधिक संभावना है।
- संकलन में सभी प्रश्नों की विस्तृत व्याख्या की गई है। प्रत्येक प्रश्न के हल की शुद्धता का विशेष ध्यान रखा गया है।
- संकलन में प्रस्तुत पूर्व परीक्षा के प्रश्नों की प्रवृत्ति का अवलोकन कर आगामी परीक्षाओं हेतु दिशा का निर्धारण सरलता से किया जा सकता है।

इस प्रकार परीक्षार्थियों के हितार्थ अत्यंत दुरूह एवं जटिल प्रक्रिया अपनाते हुए लगभग 31000 प्रश्नों का एक प्रश्नकोश प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न परीक्षाओं में दुहराव की प्रवृत्ति के दृष्टिगत यह प्रश्नकोश आगामी परीक्षाओं हेतु निश्चित ही लाभकारी सिद्ध होगा। प्रश्नों का हल प्रस्तुत करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है, अनेक बार विषय-विशेषज्ञों से जांच कराई गई है, फिर भी यदि किसी उत्तर से आप संतुष्ट न हों अथवा वह आपको त्रुटिपूर्ण प्रतीत हो रहा हो तो हमें लिखें या दिन में 12 बजे से सायं 8 बजे तक (सोमवार से शुक्रवार) दूरभाष संख्या 9335140296 पर हमसे संपर्क करें। हम परीक्षणोपरांत संबंधित उत्तर की सत्यता से आपको अवगत करा देंगे।

सम-सामयिक **घटना चक्र**

परीक्षा संवाद के 31 वर्ष

पुस्तकें ऑनलाइन आर्डर करें।

shop.ssgcp.com

सभी पुस्तकें 10% डिस्काउंट पर उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट देखें या संपर्क करें।

9792276999, 9838932888

E-mail : ssgcpl@gmail.com

प्रश्न पत्र-विश्लेषण

इस संकलन में संघ एवं राज्य की सिविल सेवा प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षाओं के सामान्य अध्ययन के वस्तुनिष्ठ 245 प्रश्न-पत्रों को शामिल किया गया है। सामान्य अध्ययन के समस्त 245 प्रश्न-पत्र एवं उनमें शामिल प्रश्नों की कुल संख्या इस प्रकार है-

परीक्षा		प्रश्न-पत्र	कुल प्रश्न
आई.ए.एस. प्रा. परीक्षा	2011-2023	100 × 13	1300
आई.ए.एस. प्रा. परीक्षा	1993-2010	150 × 18	2700
उ.प्र. पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	1998-2023	150 × 27	4050
उ.प्र. पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	1990-1997	120 × 8	960
उ.प्र. पी.सी.एस. मुख्य परीक्षा	2002-2003	150 × 2	300
उ.प्र. पी.सी.एस. मुख्य परीक्षा (सामान्य एवं विशेष चयन)	2004-2017	150 × 31	4650
उ.प्र. पी.एस.सी.जी.आई.सी. परीक्षा	2010, 2017	150 × 3	450
उ.प्र. पी.एस.सी.बी.ई.ओ. परीक्षा	2019	120 × 1	120
उ.प्र. (यू.डी.ए/एल.डी.ए.) प्रा. परीक्षा	2001-2006	150 × 3	450
उ.प्र. (आर.ओ./ए.आर.ओ.) प्रा. परीक्षा (सामान्य एवं विशेष चयन)	2010-2023	140 × 9	1260
उ.प्र. (यू.डी.ए./एल.डी.ए.) मुख्य परीक्षा (सामान्य एवं विशेष चयन)	2010-2021	120 × 7	840
उ.प्र. लोअर सबार्डिनेट प्रा. परीक्षा (सामान्य एवं विशेष चयन)	1998-2009	100 × 11	1100
उ.प्र. लोअर सबार्डिनेट प्रा. परीक्षा (सामान्य एवं विशेष चयन)	2013-2015	150 × 2	300
उ.प्र. लोअर सबार्डिनेट मुख्य परीक्षा (सामान्य एवं विशेष चयन)	2013 & 2015	120 × 2	240
उ.प्र. पी.एस.सी.राजस्व निरीक्षक प्रा. परीक्षा	2014	100 × 1	100
उत्तराखंड पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	2002-2021	150 × 8	1200
उत्तराखंड (यू.डी.ए/एल.डी.ए.) प्रा. परीक्षा	2007	150 × 1	150
उत्तराखंड पी.सी.एस. मुख्य परीक्षा	2002 & 2006	150 × 2	300
उत्तराखंड (यू.डी.ए/एल.डी.ए.) मुख्य परीक्षा	2007	100 × 1	100
उत्तराखंड लोअर सबार्डिनेट प्रा. परीक्षा	2010	150 × 1	150
मध्य प्रदेश पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	1990-2006	75 × 15	1125
मध्य प्रदेश पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	2010	150 × 2	300
मध्य प्रदेश पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	2012-2023	100 × 12	1200
छत्तीसगढ़ पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	2003-2005	75 × 2	150
छत्तीसगढ़ पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	2008 & 2013-2023	100 × 12	1200
छत्तीसगढ़ पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	2011	150 × 1	150
राजस्थान पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	1992	120 × 1	120
राजस्थान पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	1993-2012	100 × 11	1100
राजस्थान पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	2013-2023	150 × 6	900
बिहार पी.एस.सी. प्रा. परीक्षा	1992-2023	150 × 23	3450
झारखंड पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	2003 & 2011	100 × 2	200
झारखंड पी.सी.एस. प्रा. परीक्षा	2013 - 2023	100 × 6	600
झारखंड पी.सी.एस. मुख्य. परीक्षा	2016	80 × 1	80
	कुल	245	31295

उपर्युक्त 245 परीक्षाओं के सामान्य अध्ययन के लगभग 31000 प्रश्नों को दुहराव वाले प्रश्नों को हटाते हुए निम्न भागों में विभाजित किया गया है-

- ❑ सम-सामयिक घटनाक्रम
- ❑ भारतीय इतिहास
- ❑ सामान्य भूगोल
- ❑ भारतीय राजव्यवस्था एवं शासन
- ❑ आर्थिक एवं सामाजिक विकास
- ❑ पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी
- ❑ सामान्य विज्ञान
- ❑ राज्य आधारित प्रश्न

पूर्वावलोकन शृंखला के 14वें संशोधित संस्करण के अंतर्गत **द्वितीय खंड** में **भारतीय इतिहास** पर प्रश्नों को प्रस्तुत किया जा रहा है। नए प्रारूप के तहत पुनर्रचित इस खंड के लिए संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोगों की विभिन्न परीक्षाओं के कुल 245 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्रों से भारतीय इतिहास संबंधी कुल 5233 प्रश्न लिए गए जिनमें से दुहराव वाले 541 प्रश्नों को अलग कर 4692 प्रश्नों को इस खंड में समाहित किया गया है। दुहराव वाले प्रश्नों का परीक्षा नाम मूल प्रश्नों के परीक्षा नाम के नीचे जोड़ दिया गया है ताकि परीक्षार्थी प्रश्नों के दुहराव की प्रकृति को समझ सकें।

I. प्राचीन भारत का इतिहास

पाषाण काल

नोट्स

*जिस काल का कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिलता है, उसे **'प्रागैतिहासिक काल'** कहते हैं। **'आद्य-ऐतिहासिक काल'** में लिपि के साक्ष्य तो हैं; किंतु उनके अपठ्य या दुर्बोध होने के कारण उनसे कोई निष्कर्ष नहीं निकलता। जब से लिखित विवरण मिलते हैं, वह **'ऐतिहासिक काल'** है। *प्रागैतिहास के अंतर्गत पाषाणकालीन सभ्यता तथा आद्य-इतिहास के अंतर्गत सिंधु घाटी सभ्यता एवं ताम्र-पाषाणकालीन सभ्यता (अहाड़, जोर्वे आदि) आती हैं, जबकि छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आस-पास से ऐतिहासिक काल का आरंभ होता है। *सर्वप्रथम 1863 ई. में भारत में पाषाणकालीन सभ्यता का अनुसंधान प्रारंभ हुआ। *पाषाण निर्मित उपकरणों की अधिकता के कारण संपूर्ण पाषाण युगीन संस्कृति को तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया गया। *ये हैं–पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल और नवपाषाण काल।

*उपकरणों की भिन्नता के आधार पर पुरापाषाण काल को भी तीन कालों में विभाजित किया जाता है –

1. पूर्व पुरापाषाण काल–क्रोड उपकरण (हस्तकुठार, खंडक एवं विदारिणी), 2. मध्य पुरापाषाण काल–फलक उपकरण तथा 3. उच्च पुरापाषाण काल–तक्षिणी एवं खुरचनी उपकरण। *सर्वप्रथम पंजाब की **सोहन नदी घाटी** (पाकिस्तान) से **चापर-चापिंग पेबुल संस्कृति** के उपकरण प्राप्त हुए। *सर्वप्रथम तमिलनाडु के चेन्नई के समीप **पल्लवरम** तथा **अत्तिरमपक्कम** से **हैंड-एक्स संस्कृति** के उपकरण प्राप्त किए गए। *इस संस्कृति के अन्य उपकरण क्लीवर, स्क्रेपर आदि हैं। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (Geological Servey of India) के वैज्ञानिक रॉबर्ट ब्रूस फुट ब्रिटिश भूवैज्ञानिक और पुरातत्वविद थे। 1863 ई. में **रॉबर्ट ब्रूस फुट** ने तमिलनाडु के चेन्नई के पास **'पल्लवरम'** नामक स्थान से **पहला हैंड-एक्स** प्राप्त किया था। उनके मित्र विलियम किंग ने अत्तिरमपक्कम से पूर्व पाषाण काल के उपकरण खोज निकाले। *वर्ष 1935 में **डी. टेरा** के नेतृत्व में येल कैम्ब्रिज अभियान दल ने सोहन घाटी में सबसे महत्वपूर्ण अनुसंधान किए। *बेलन घाटी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जी.आर. शर्मा के निर्देशन में अनुसंधान किया गया। पूर्व पुरापाषाण काल से संबंधित यहां 44 पुरास्थल प्राप्त हुए हैं। *उपकरणों के अतिरिक्त बेलन के लोंहदा नाला क्षेत्र से इस काल की अस्थि निर्मित मातृदेवी की एक प्रतिमा मिली है, जो संप्रति कौशाम्बी संग्रहालय में सुरक्षित है। *फलकों की अधिकता के कारण मध्य पुरापाषाण काल को **'फलक संस्कृति'** या 'फलक-ब्लेड-स्क्रेपर संस्कृति' भी कहा जाता है। इन उपकरणों का निर्माण क्वार्टजाइट पत्थरों से किया गया है। *पुरापाषाण कालीन मानव का जीवन पूर्णतया प्राकृतिक था। वे प्रधानत: शिकार पर निर्भर रहते थे तथा उनका भोजन मांस अथवा कंदमूल हुआ करता था। *अग्नि के प्रयोग से अपरिचित रहने के कारण वे कच्चा मांस खाते थे। *इस युग का मानव मुख्यत: **शिकारी** था। इस काल के मानव को पशुपालन तथा कृषि का ज्ञान नहीं था।

*भारत में मध्यपाषाण काल के विषय में जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में हुई, जब **आर्कीबाल्ड कैम्पबेल कार्लाइल** ने विंध्य क्षेत्र से **शैल चित्र** (Rock Painting) खोज निकाले। *मध्यपाषाण काल के विशिष्ट औजार सूक्ष्म पाषाण या पत्थर के बहुत छोटे औजार हैं। *भारत में **मानव अस्थि पंजर** सर्वप्रथम **मध्यपाषाण काल** से ही प्राप्त होने लगता है। *गुजरात स्थित **लंघनाज** एक महत्वपूर्ण मध्यपाषाणकालीन पुरास्थल है। यहां से लघु पाषाणोपकरणों के अतिरिक्त पशुओं की हड्डियां, कब्रिस्तान तथा कुछ मिट्टी के बर्तन भी प्राप्त हुए हैं। यहां से 14 मानव कंकाल भी मिले हैं। *मध्यपाषाणकालीन **महदहा (प्रतापगढ़, उ.प्र.)** से **हड्डी** एवं **सींग** प्राप्त हुए हैं। *जी. आर. शर्मा ने महदहा के तीन क्षेत्रों का उल्लेख किया है, जो **झील क्षेत्र, बूचड़खाना संकुल क्षेत्र** एवं **कब्रिस्तान निवास क्षेत्र** में बंटा था। बूचड़खाना संकुल क्षेत्र से ही हड्डी एवं सींग निर्मित उपकरण एवं आभूषण बड़े पैमाने पर पाए गए हैं। *डॉ. जयनारायण पाण्डेय द्वारा लिखित पुस्तक 'पुरातत्व विमर्श' में **महदहा, सराय नाहर राय** एवं **दमदमा** तीनों ही स्थलों से हड्डी के उपकरण एवं आभूषण पाए जाने का उल्लेख है। ***दमदमा** में किए गए उत्खनन के फलस्वरूप पश्चिमी तथा मध्यवर्ती क्षेत्रों से कुल मिलाकर **41 मानव शवाधान** ज्ञात हुए हैं। *इन शवाधानों में से 5 शवाधान युग्म-शवाधान हैं और एक शवाधान में 3 मानव कंकाल एक साथ दफनाए हुए मिले हैं। शेष शवाधानों में एक-एक कंकाल मिले हैं। इस प्रकार कुल 48 मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं। *सराय नाहर राय से ऐसी समाधि मिली है, जिसमें चार मानव शव एक साथ दफनाए गए थे। *यहां की कब्रें (समाधियां) आवास क्षेत्र के अंदर स्थित थीं। कब्रें छिछली तथा अंडाकार थीं। *विंध्य क्षेत्र के लेखहिया के शिलाश्रय संख्या 1 से मध्यपाषाणिक लघु पाषाण उपकरणों के अतिरिक्त 17 मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं, जिनमें से कुछ सुरक्षित हालत में हैं तथा अधिकांश क्षत-विक्षत अवस्था में हैं। *अमेरिका के **ओरेगॉन विश्वविद्यालय के जॉन आर. लुकास** के अनुसार, लेखहिया में कुल 27 मानव कंकालों की अस्थियां मिली हैं। ***पशुपालन का प्रारंभ मध्यपाषाण काल** में हुआ। *पशुपालन के साक्ष्य भारत में आदमगढ़ (नर्मदापुरम, म.प्र.) तथा बागोर (भीलवाड़ा, राजस्थान) से प्राप्त हुए हैं। *मध्यपाषाण काल के मानव

शिकार करके, मछली पकड़कर और खाद्य वस्तुओं का संग्रह कर पेट भरते थे। *मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित **भीमबेटका प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला का श्रेष्ठ उदाहरण** है। *अब तक 700 से अधिक शिलाश्रय प्राप्त हुए हैं, जिसमें से 500 में चित्रकारी प्राप्त हुई हैं। इनमें से यूनेस्को ने 243 को क्रमांक प्रदान किया है। ***यूनेस्को ने भीमबेटका शैल चित्रों को विश्व विरासत सूची में** सम्मिलित किया है।

*सर्वप्रथम **खाद्यान्नों का उत्पादन नवपाषाण काल में प्रारंभ** हुआ। इसी काल में गेहूं की कृषि प्रारंभ हुई। *नवीनतम खोजों के आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप में 'प्राचीनतम कृषि साक्ष्य वाला स्थल' उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले में स्थित **लहुरादेव** है। *यहां से 9000 ई.पू. से 7000 ई.पू. मध्य के चावल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। *उल्लेखनीय है कि इस नवीनतम खोज के पूर्व भारतीय उपमहाद्वीप का प्राचीनतम कृषि साक्ष्य वाला स्थल मेहरगढ़ (पाकिस्तान के बलूचिस्तान में स्थित; यहां से 7000 ई.पू. के गेहूं के साक्ष्य मिले हैं), जबकि प्राचीनतम **चावल (धान) के साक्ष्य** वाला स्थल कोलडिहवा (प्रयागराज जिले में बेलन नदी के तट पर स्थित; यहां से 6500 ई.पू. के चावल की भूसी के साक्ष्य मिले हैं) माना जाता था। *चीन के **यांग्त्जी नदी घाटी क्षेत्र** में लगभग 7000 ई.पू. चावल उगाया गया। ***मक्का** (लगभग 6000 ई.पू.) **का प्रथम साक्ष्य मेक्सिको** में पाया गया ।

*मेहरगढ़ से पाषाण संस्कृति से लेकर हड़प्पा सभ्यता तक के सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं। *मानव कंकाल के साथ कुत्ते का कंकाल **बुर्जहोम (जम्मू एवं कश्मीर)** से प्राप्त हुआ। *गर्त आवास के साक्ष्य भी यहीं से प्राप्त हुए। *इस पुरास्थल की खोज वर्ष 1935 में **डी. टेरा** एवं **पीटरसन** ने की थी। ***गुफकराल,** जम्मू एवं कश्मीर में स्थित **नवपाषाणिक स्थल** है। *गुफकराल का अर्थ होता है–कुलाल अर्थात कुम्हार की गुहा। *यहां के लोग कृषि एवं पशुपालन का कार्य करते थे। *चिरांद, बिहार के सारण जिले में स्थित है। यहां से नवपाषाणिक अवशेष प्राप्त हुए हैं। *यहां से हड्डी के अनेक उपकरण प्राप्त हुए हैं। *यहां से प्राप्त उपकरण हिरण के सींगों से निर्मित हैं। *नवपाषाण युगीन दक्षिण भारत में मृतक को दफनाने के स्थल के रूप में बृहत्पाषाण स्मारकों की पहचान की गई। *नवपाषाण काल से संबंधित **'राख के टीले' कर्नाटक में बेल्लारी** जनपद में स्थित **संगनकल्लू** नामक स्थान से प्राप्त हुए। *पिकलीहल, उतनूर आदि स्थलों से भी राख के टीले मिले हैं। ये राख के टीले नवपाषाण युगीन पशुपालक समुदायों के मौसमी शिविरों के जले अवशेष हैं। ***आग का उपयोग नवपाषाण काल की महत्वपूर्ण उपलब्धि** थी।

***धातुओं में सबसे पहले तांबे का प्रयोग** हुआ। इस चरण में पत्थर एवं तांबे के उपकरणों का साथ-साथ प्रयोग जारी रहा। इसी कारण इसे **ताम्रपाषाणिक** संस्कृति (कैल्कोलिथिक कल्चर) कहा जाता है। *ताम्रपाषाणिक का अर्थ है–पत्थर एवं तांबे के संयुक्त प्रयोग की अवस्था। *भारत में ताम्रपाषाण युग की बस्तियां दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिण-पूर्वी भारत में पाई गई हैं।

*दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में अनेक पुरास्थलों की खुदाई हुई है, ये हैं–**अहाड़, बालाथल, बागोर, ओजियाना एवं गिलुंद**। *ये पुरास्थल बनास घाटी में स्थित हैं। *बनास घाटी में स्थित होने के कारण इसे **बनास संस्कृति** भी कहते हैं।

*अहाड़ का प्राचीन नाम **तांबवती;** अर्थात तांबा वाली जगह है। *गिलुंद बालाथल, ओजियाना में घरों को चहारदीवारी से घेरा गया है। *अहाड़ के पास गिलुंद में मिट्टी की इमारत बनी है; किंतु कहीं-कहीं पक्की ईटें भी लगी हैं। ***गिलुंद में तांबे के टुकड़े** मिले हैं। *अहाड़ संस्कृति (2100-1500 ई.पू.) अन्य ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों से भिन्न है; क्योंकि जहां दूसरे केंद्रों में लाल व काले लेप के मृद्भांड बने हैं, वहीं यहां पर इस लेप के ऊपर सफेद रंग से चित्रकारी की गई 'कृष्ण लोहित मृद्भांड' परंपरा विशिष्ट रही है।

*पश्चिमी मध्य प्रदेश में मालवा, कायथा, एरण और नवदाटोली प्रमुख स्थल हैं। ***नवदाटोली**, मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणिक पुरास्थल है, जो खरगोन जिले में स्थित है। *इसका उत्खनन एच.डी. सांकलिया ने कराया था। *यहां से मिट्टी, बांस एवं फूस के बने चौकोर एवं वृत्ताकार घर मिले हैं। *यहां के मूल मृद्भांड लाल-काले रंग के हैं, जिन पर ज्यामितीय आरेख उत्कीर्ण है।

***कायथा संस्कृति** जो हड़प्पा संस्कृति की कनिष्ठ समकालीन है, इसके मृद्भांडों में कुछ प्राक् हड़प्पीय लक्षण दिखाई देते हैं, साथ ही इन पर हड़प्पाई प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। *इस संस्कृति की लगभग 40 बस्तियां मालवा क्षेत्र से प्राप्त हुई हैं, जो अत्यंत छोटी-छोटी हैं। ***मालवा संस्कृति अपनी मृद्भांडों की उत्कृष्टता** के लिए जानी जाती है। *मध्य प्रदेश में कायथा और एरण की तथा पश्चिमी महाराष्ट्र में इनामगांव की बस्तियां किलाबंद हैं। *पश्चिमी महाराष्ट्र के प्रमुख पुरास्थल हैं–अहमदनगर जिले में **जोर्वे, नेवासा और दैमाबाद**; पुणे जिले में चंदोली, सोनगांव, इनामगांव; प्रकाश (नंदुरबार जिला) और नासिक (नासिक जिला)। *ये सभी पुरास्थल **जोर्वे संस्कृति** (1400-700 ई.पू.) के हैं। *अब तक ज्ञात लगभग 200 जोर्वे स्थलों में प्रवरा नदी के तट पर स्थित **दैमाबाद सबसे बड़ा** है। ***नेवासा (जोर्वे संस्कृति स्थल) से पटसन** का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। टोटीदार पात्र परंपरा जोर्वे संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। *महाराष्ट्र की ताम्रपाषाण-कालीन संस्कृति (जोर्वे संस्कृति) के नेवासा, दैमाबाद, चंदोली, इनामगांव आदि पुरास्थलों में मृतकों को उत्तर से दक्षिण दिशा में घरों के फर्श के नीचे दफनाए जाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। *आरंभिक ताम्रपाषाण अवस्था के **इनामगांव स्थल** पर चूल्हों सहित बड़े-बड़े कच्ची मिट्टी के मकान और गोलाकार गड्ढों वाले मकान मिले हैं। *पश्चात अवस्था (1300-1000 ई.पू.) में **पांच कमरों वाला एक मकान** मिला है, जिसमें चार कमरे आयताकार हैं और एक वृत्ताकार। *इनामगांव में 100 से अधिक घर और अनेक कब्रें पाई गई हैं। *यह **बस्ती किलाबंद** है और **खाई से घिरी** हुई है। *यहां शिल्पी या पंसारी लोग पश्चिम छोर पर रहते थे, जबकि **सरदार प्रायः केंद्र स्थल** में रहता था जो मुख्यतः सामाजिक विभेद का सूचक है। यहां से अन्नागार भी मिला है।

*पूर्वी भारत में गंगा तटवर्ती चिरांद के अलावा, पश्चिम बंगाल के पूर्व बर्धमान (Purba Bardhaman) जिले के पांडु राजर ढिबि और पूर्व मेदिनीपुर (Purba Medinipur) जिले में महिषदल उल्लेखनीय ताम्रपाषाणकालीन स्थल हैं। *कुछ अन्य पुरास्थल जहां खुदाई हुई, वे हैं–बिहार में सेनुवार, सोनपुर और ताराडीह तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में खैराडीह और नरहन। *बिहार, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में रहने वाले लोग टोटी वाले जलपात्र, गोड़ीदार तश्तरियां और गोड़ीदार कटोरे बनाते थे।

*दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र और अन्यत्र रहने वाले ताम्रपाषाण युग के लोग मवेशी पालन और कृषि करते थे। *वे गाय, भेड़, बकरी और भैंस रखते थे और हिरण का शिकार भी करते थे। ***मुख्य अनाज गेहूं और चावल** के अतिरिक्त वे **बाजरे की भी खेती** करते थे।

*ताम्रपाषाण युग के लोग शिल्प-कर्म में निःसंदेह बड़े दक्ष थे और पत्थर का काम भी अच्छा करते थे। *वे कार्नेलियन, स्टेटाइट और क्वाट्र्ज क्रिस्टल जैसे अच्छे पत्थरों के मनके या गुटिकाएं भी बनाते थे। *वे लोग कताई और बुनाई जानते थे; क्योंकि **मालवा में चरखे और तकलियां** मिली हैं। *महाराष्ट्र में कपास, सन और सेमल की रूई के बने धागे भी मिले हैं। *इनामगांव में कुंभकार, धातुकार, हाथी-दांत के शिल्पी, चूना बनाने वाले और पकी हुई मिट्टी की मूर्ति (टेराकोटा) बनाने वाले कारीगर भी दिखाई देते हैं। ***इनामगांव में मातृ-देवी की प्रतिमा** मिली है, जो पश्चिमी एशिया में पाई जाने वाली ऐसी प्रतिमा की प्रतिरूप है। *मालवा और राजस्थान में मिली रूढ़ शैली से बनी मिट्टी की वृषभ-मूर्तिकाएं यह सूचित करती हैं कि वृषभ (सांड) धार्मिक पंथ का प्रतीक था।

*पश्चिमी महाराष्ट्र की चंदोली और नेवासा बस्तियों में कुछ बच्चों के गलों में तांबे के मनकों का हार पहनाकर उन्हें दफनाया गया है, जबकि अन्य बच्चों की कब्रों में सामान के तौर पर कुछ बर्तन मात्र हैं। *महाराष्ट्र में **मृतक को उत्तर-दक्षिण दिशा** में रखा जाता था; किंतु दक्षिण भारत में **पूर्व-पश्चिम दिशा** में। पश्चिमी भारत में लगभग संपूर्ण शवाधान (एक्सटेंडेड बरिअल) प्रचलित था, जबकि पूर्वी भारत में आंशिक शवाधान (फ्रैक्शनल बरिअल) चलता था। *सबसे बड़ी निधि मध्य प्रदेश के गुंगेरिया से प्राप्त हुई है। *इसमें 424 तांबे के औजार एवं हथियार तथा 102 चांदी के पतले प्लेट हैं।

*कायथा के एक घर में **तांबे के 28 कंगन** और दो अद्वितीय ढंग की कुल्हाड़ियां पाई गई हैं। *इसी स्थान में स्टेटाइट और कार्नेलियन जैसे कीमती पत्थरों की गोलियों के हार पात्रों में जमा पाए गए हैं। *गणेश्वर स्थल राजस्थान में खेतड़ी ताम्र-पट्टी के सीकर-झुंझुनू क्षेत्र के तांबे की समृद्ध खानों के निकट पड़ता है। *दक्षिण भारत में ब्रह्मगिरि, पिकलीहल, संगनकल्लू, मास्की, हल्लूर आदि से ताम्रपाषाण युगीन बस्तियों के साक्ष्य मिले हैं। **दक्षिण भारत में कृषक की अपेक्षा चरवाहा संस्कृति** का अधिक प्रमाण मिला है।

*भारत में सर्वप्रथम 1861 ई. में **अलेक्जेंडर कनिंघम** को पुरातत्व सर्वेक्षक के रूप में नियुक्त किया गया था। *1871 ई. में पुरातत्व सर्वेक्षण को सरकार के एक विभाग के रूप में गठित किया गया था। *वर्ष 1901 में लॉर्ड कर्जन के समय में इसे **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण** के रूप में केंद्रीकृत कर **जॉन मार्शल** को इसका नया **महानिदेशक** बनाया गया था। वर्ष 1902 में जॉन मार्शल ने कार्यभार ग्रहण किया।

प्रश्नकोश

1. रॉबर्ट ब्रूस फुट थे, एक–

(a) भूगर्भ-वैज्ञानिक (b) पुरातत्वविद्

(c) पुरावनस्पतिशास्त्री (d) इतिहासकार

U.P. Lower Sub. (Pre) 2015

उत्तर–(a & b)

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार, रॉबर्ट ब्रूस फुट ब्रिटिश भूगर्भ-वैज्ञानिक और पुरातत्वविद् थे। जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया से संबद्ध रॉबर्ट ब्रूस फुट ने 1863 ई. में भारत में पाषाणकालीन बस्तियों के अन्वेषण की शुरुआत की। अतः स्पष्ट है कि इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) और (b) दोनों ही हो सकते हैं।

2. कोपेनहेगन संग्रहालय की सामग्री से पाषाण, कांस्य और लौह युग का त्रियुगीय विभाजन किया था-

(a) थॉमसन ने (b) लुब्बाक ने

(c) टेलर (d) चाइल्ड ने

U.P. P.C.S. (Pre) 2010

उत्तर–(a)

डेनमार्क के कोपेनहेगन संग्रहालय में 1818 ई. और 1820 ई. में एक आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, सामग्री के आधार पर पाषाण, कांस्य और लौह युग का त्रियुगीय विभाजन क्रिश्चियन जर्गेनसन थॉमसन ने किया था। यद्यपि थॉमसन ने 1836 ई. में इसी वर्गीकरण के अनुसार, संग्रहालय की वस्तुओं का विवरण प्रकाशित किया था।

3. भारतीय इतिहास के संदर्भ में, अलेक्जेंडर री, ए.एच. लॉन्गहर्स्ट, रॉबर्ट स्वेल, जेम्स बर्गेस और वाल्टर इलियट किस गतिविधि से जुड़े थे?

(a) पुरातात्विक उत्खनन

(b) औपनिवेशिक भारत में अंग्रेजी प्रेस की स्थापना

(c) देशी रजवाड़ों में गिरजाघरों की स्थापना

(d) औपनिवेशिक भारत में रेल का निर्माण

I.A.S. (Pre) 2023

उत्तर–(a)

अलेक्जेंडर री, ए.एच. लॉन्गहर्स्ट, रॉबर्ट स्वेल, जेम्स बर्गेस और वाल्टर इलियट पुरातात्विक उत्खनन के लिए प्रसिद्ध थे। जिन्होंने मुख्य रूप से दक्षिण भारत के इतिहास के क्षेत्र में काम किया था।

4. उत्खनित प्रमाणों के अनुसार, पशुपालन का प्रारंभ हुआ था—

(a) निचले पूर्वपाषाण काल में (b) मध्य पूर्वपाषाण काल में

(c) ऊपरी एवं पाषाण काल में (d) मध्यपाषाण काल में

U.P.P.C.S. (Mains) 2006

उत्तर—(d)

मध्यपाषाण काल के अंतिम चरण में पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त होने लगते हैं। ऐसे पशुपालन के साक्ष्य भारत में आदमगढ़ (नर्मदापुरम, म.प्र.) तथा बागोर (भीलवाड़ा, राजस्थान) से मिले हैं।

5. मध्यपाषाणिक प्रसंग में पशुपालन के प्रमाण जहां मिले, वह स्थान है—

(a) लंघनाज (b) बीरभानपुर

(c) आदमगढ़ (d) चोपनी मांडो

U.P. P.C.S. (Spl.) (Pre) 2008

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. निम्नलिखित में से किस स्थल से हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं?

(a) चोपनी मांडो से (b) काकोरिया से

(c) महदहा से (d) सराय नाहर राय से

U.P.P.C.S. (Mains) 2010

उत्तर—(c&d)

मध्यपाषाणकालीन महदहा (उ.प्र. के प्रतापगढ़ जिले में स्थित) से बड़ी मात्रा में हड्डी एवं सींग निर्मित उपकरण प्राप्त हुए हैं। जी.आर. शर्मा महदहा में तीन क्षेत्रों का उल्लेख करते हैं, जो झील क्षेत्र, बूचड़खाना संकुल क्षेत्र एवं कब्रिस्तान निवास क्षेत्र में बंटा था। बूचड़खाना संकुल क्षेत्र से ही हड्डी एवं सींग निर्मित उपकरण एवं आभूषण बड़े पैमाने पर पाए गए हैं। सराय नाहर राय से भी अल्प मात्रा में हड्डी के उपकरण मिले हैं।

7. हड्डी से निर्मित आभूषण भारत में मध्यपाषाण काल के संदर्भ में प्राप्त हुए हैं—

(a) सराय नाहर राय से (b) महदहा से

(c) लेखहिया से (d) चोपनी मांडो से

U.P.R.O./A.R.O. (Mains) 2013

उत्तर—(a&b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. निम्नलिखित मध्यपाषाणिक स्थलों को भौगोलिक दृष्टि से पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित करें—

1. पैसरा 2. लेखहिया

3. बीरभानपुर 4. महदहा

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

कूट :

(a) 4, 2, 3 और 1 (b) 1, 4, 3 और 2

(c) 4, 2, 1 और 3 (d) 2, 4, 1 और 3

U.P.R.O./A.R.O (Mains) 2021

उत्तर—(c)

भौगोलिक दृष्टि से पश्चिम से पूर्व के क्रम में मध्यपाषाणिक स्थल हैं- महदहा (प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश), लेखहिया (मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश), पैसरा (बिहार) एवं बीरभानपुर (पश्चिम बंगाल)।

9. एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल निकले हैं—

(a) सराय नाहर राय से (b) दमदमा से

(c) महदहा से (d) लंघनाज से

U.P.P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर—(b)

उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में स्थित सराय नाहर राय, महदहा तथा दमदमा का उत्खनन हुआ है। दमदमा में लगातार पांच वर्षों तक किए गए उत्खनन के फलस्वरूप पश्चिमी तथा मध्यवर्ती क्षेत्रों से कुल मिलाकर 41 मानव शवाधान ज्ञात हुए हैं। इन शवाधानों में से 5 शवाधान युग्म-शवाधान हैं और एक शवाधान में 3 मानव कंकाल एक साथ मिले हैं। शेष शवाधानों में एक-एक कंकाल मिले हैं।

10. खाद्यान्नों की कृषि सर्वप्रथम प्रारंभ हुई थी -

(a) नवपाषाण काल में (b) मध्यपाषाण काल में

(c) पुरापाषाण काल में (d) प्रोटोऐतिहासिक काल में

U.P.P.C.S. (Mains) 2005

उत्तर—(a)

खाद्यान्नों का उत्पादन सर्वप्रथम नवपाषाण काल में हुआ। यही वह समय है, जब मनुष्य कृषि कर्म से परिचित हुआ।

11. भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य कहां मिलता है?

(a) नीलगिरि पहाड़ियां (b) शिवालिक पहाड़ियां

(c) नल्लमाला पहाड़ियां (d) नर्मदा घाटी

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2006

उत्तर—(d)

भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य नर्मदा घाटी में अवस्थित 'हथनौरा' (सिहोर, म.प्र.) नामक पुरास्थल से प्राप्त हुआ। इसकी खोज पुरातत्वविद् अरुण सोनकिया द्वारा वर्ष 1982 में की गई थी।

12. प्रथम मानव जीवाश्म भारत की किस नदी घाटी से प्राप्त हुआ था?

(a) गंगा नदी (b) यमुना घाटी

(c) नर्मदा घाटी (d) ताप्ती घाटी

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं / उपर्युक्त में से एक से अधिक

66th B.P.S.C. Re-Exam 2020

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. मानव द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त अनाज था—

(a) गेहूं (b) चावल
(c) जौ (d) बाजरा

U.P.P.C.S. (Pre) 1997

उत्तर—(c)

आधुनिक मानव समाज द्वारा मुख्य रूप से 8 खाद्य अनाजों का उपभोग किया गया है—जौ, गेहूं, चावल, मक्का, बाजरा, सोरघम, राई एवं जई। अनाजों के पौधे विभिन्न क्षेत्रों में जंगली घास के रूप में विद्यमान थे, जिन्हें बीजों के रूप में अलग-अलग क्षेत्र में, अलग-अलग समय पर मानव ने उगाया। वैश्विक दृष्टि से देखा जाए, तो सर्वप्रथम जौ (Barley) 8000 ई.पू. के आस-पास भूमध्य सागर एवं ईरान के मध्य स्थित पश्चिमी एशिया के देश में मानव द्वारा उगाया गया। बाद में लगभग इन्हीं क्षेत्रों में 8000 ई.पू. के आस-पास ही गेहूं (Wheat) भी उगाया जाने लगा।

14. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं—

(a) कोलडिहवा से (b) लहुरादेव से
(c) मेहरगढ़ से (d) टोकवा से

U.P. Lower Sub. (Pre) 2004
U.P. Lower Sub. (Pre) 2008

उत्तर—(b)

नवीनतम खोजों के आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीनतम कृषि साक्ष्य वाला स्थल उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले में स्थित लहुरादेव है। यहां से 9000 ई.पू. से 7000 ई.पू. तक के बीच चावल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। उल्लेखनीय है कि इस नवीनतम खोज के पूर्व भारतीय उपमहाद्वीप का प्राचीनतम कृषि साक्ष्य वाला स्थल मेहरगढ़ (पाकिस्तान के बलूचिस्तान में स्थित; यहां से 7000 ई.पू. के गेहूं के साक्ष्य मिले है), जबकि प्राचीनतम चावल के साक्ष्य वाला स्थल कोलडिहवा (प्रयागराज जिले में बेलन नदी के तट पर स्थित; यहां से 6500 ई.पू. के चावल की भूसी के साक्ष्य मिले हैं) माना जाता था। उपर्युक्त संदर्भों में अब यदि विकल्प में लहुरादेव रहता है, तो उपयुक्त विकल्प वही होगा; परंतु लहुरादेव के विकल्प में न होने की स्थिति में इसका उत्तर मेहरगढ़ होगा।

15. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं—

(a) ब्रह्मगिरि से (b) बुर्जहोम से
(c) कोलडिहवा से (d) मेहरगढ़ से

U.P.P.C.S. (Mains) 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य कहां से प्राप्त हुए हैं?

(a) लोथल (b) हड़प्पा
(c) मेहरगढ़ (d) मुंडिगाक

U.P.P.C.S. (Mains) 2007

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. नवपाषाण युग में भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में निम्नलिखित में से किस स्थान पर कृषि के अभ्युदय के प्रारंभिक प्रमाण प्राप्त हुए हैं?

(a) मुंडिगाक (b) मेहरगढ़
(c) दम्ब सादात (d) बालाकोट
(e) अमरी

Chhattisgarh P.S.C. (Pre) 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. भारत में पशुपालन एवं कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं-

(a) अंजिरा से (b) दम्ब सादात से
(c) किले गुल मुहम्मद से (d) मेहरगढ़ से
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

64th B.P.S.C. (Pre) 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

1. इस प्रदेश के अनेक उत्खनित पुरास्थलों से वैश्विक संदर्भ में कृषि के प्राचीनतम प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

2. प्राचीनतम प्राप्त कृषि अन्न जौ और धान हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए—

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

U.P.R.O./A.R.O. (Pre.) 2021

उत्तर—(c)

उत्तर प्रदेश प्रागैतिहासिक काल से ही समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का धनी रहा है। ध्यातव्य है कि प्रदेश की बेलन नदी घाटी क्षेत्र में स्थित कोल्डिहवा को लंबे समय तक विश्व में धान की खेती का प्राचीनतम प्रमाण माना जाता रहा है। इसी तरह वर्तमान में धान की खेती का प्राचीनतम प्रमाण प्रस्तुत करने वाला लहुरादेव भी उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले का ही भाग है। अतः कथन (1) सही है। उत्तर प्रदेश के अनेक उत्खनित स्थलों से प्राप्त प्राचीनतम कृषि अन्न जौ एवं धान के साक्ष्य महगड़ा एवं धान के साक्ष्य कोल्डिहवा से प्राप्त हुए हैं।

20. उस स्थल का नाम बताइए, जहां से प्राचीनतम स्थायी जीवन के प्रमाण मिले हैं?

(a) धौलावीरा (b) किले गुल मुहम्मद

(c) कालीबंगा (d) मेहरगढ़

U.P.P.C.S. (Spl.) (Mains) 2008

उत्तर—(d)

दिए गए विकल्पों में प्राचीनतम स्थायी जीवन के प्रमाण सर्वप्रथम बलूचिस्तान के कच्छी मैदान स्थित मेहरगढ़ से मिले हैं। जिसकी प्रामाणिक तिथि लगभग सातवीं सहस्राब्दी ईसा पूर्व (7000 ई.पू.) है, जबकि किले गुल मुहम्मद एवं कालीबंगा की प्राचीनतम तिथि क्रमशः 4000 ई.पू. एवं 3500 ई.पू. है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर है।

21. निम्नलिखित में से किन स्थानों से मध्यपाषाण काल में पशुपालन के प्रमाण मिलते हैं?

(a) औदे (b) बोरी

(c) बागोर (d) लखनियां

U.P.P.C.S. (Pre) 2018

उत्तर—(c)

मध्यपाषाण काल से पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त होने लगते हैं। पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्य मध्य प्रदेश में नर्मदापुरम के निकट आदमगढ़ पुरास्थल और राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित बागोर से मिलते हैं।

22. निम्नलिखित में से किसको चालकोलिथिक युग भी कहा जाता है?

(a) पुरापाषाण युग (b) नवपाषाण युग

(c) ताम्रपाषाण युग (d) लौह युग

44th B.P.S.C. (Pre) 2000

उत्तर—(c)

ताम्रपाषाण युग को चालकोलिथिक (कैल्कोलिथिक) युग भी कहा जाता है।

23. आहड़ सभ्यता के बारे में निम्न कथनों पर विचार कीजिए—

1. आहड़वासी तांबा गलाना जानते थे।

2. ये लोग चावल से परिचित नहीं

3. धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक साधन था।

4. यहां से काले-लाल रंग के मृद्भांड मिले हैं, जिन पर सामान्यतः सफेद रंग से ज्यामितीय आकृतियां उकेरी गईं हैं।

सही विकल्प का चयन कीजिए—

(a) 1, 3 एवं 4 सही हैं। (b) 1 एवं 2 सही हैं।

(c) 1, 2 एवं 3 सही हैं। (d) 3 एवं 4 सही हैं।

R.AS./R.T.S. (Pre) 2021

उत्तर—(a)

आहड़ दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में स्थित एक प्रमुख ताम्रपाषाणिक संस्कृति स्थल है। आहड़ संस्कृति के लोग मूलतः कृषक एवं पशुपालक थे। वे गेहूं, जौ तथा चावल से परिचित थे। आहड़ का एक अन्य नाम 'तांबवती' (तांबा वाला स्थान) भी मिलता है, जिससे सूचित होता है कि यहां तांबा बहुतायत में उपलब्ध था। यहां के निवासी तांबे को गलाकर मनचाही वस्तुएं तैयार करते थे। धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख साधन था। यहां से काले-लाल रंग के मृद्भांड की प्राप्ति हुई है, जिन पर सामान्यतः सफेद रंग से ज्यामितीय आकृतियां उकेरी गई हैं। इस प्रकार विकल्प (a) सही उत्तर है।

24. निम्न में से किस एक पुरास्थल से पाषाण संस्कृति से लेकर हड़प्पा सभ्यता तक के सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं?

(a) आम्री (b) मेहरगढ़

(c) कोटदीजी (d) कालीबंगा

U.P.P.C.S. (Pre) 2008

उत्तर—(b)

बलूचिस्तान (पाकिस्तान) में स्थित पुरास्थल मेहरगढ़ से पाषाण संस्कृति से लेकर हड़प्पा सभ्यता तक के सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं।

25. नवदाटोली का उत्खनन किसने किया था?

(a) के.डी. बाजपेयी ने (b) वी.एस. वाकंकड़ ने

(c) एच.डी. सांकलिया ने (d) मार्टिमर ह्वीलर ने

U.P. Lower Sub. (Spl.) (Pre) 2009

उत्तर—(c)

नवदाटोली (मध्य प्रदेश) का उत्खनन डेक्कन कॉलेज, पूना के प्रोफेसर एच.डी. सांकलिया ने कराया था। यह स्थल इस महाद्वीप का सबसे विस्तृत उत्खनित ताम्रपाषाणिक स्थल है, जिसकी तिथि लगभग ई. पू. 1500 से 1300 के मध्य निर्धारित की गई है।

26. नवदाटोली किस राज्य में अवस्थित है?

(a) गुजरात (b) महाराष्ट्र

(c) छत्तीसगढ़ (d) मध्य प्रदेश

U.P.P.C.S. (Mains) 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. वृहत्पाषाण स्मारकों की पहचान की गई है -

(a) संन्यासी गुफाओं के रूप में

(b) मृतक को दफनाने के स्थान के रूप में

(c) मंदिर के रूप में

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Mains) 2005

उत्तर—(b)

नवपाषाण युगीन दक्षिण भारत में शवों को विभिन्न प्रकार की समाधियों में दफनाने की परंपरा विद्यमान थी। इन समाधियों को जो विशाल पाषाण खंडों से निर्मित हैं, वृहत्पाषाण या मेगालिथ (Megalith) के नाम से जाना जाता है। इनके विभिन्न प्रकार हैं; जैसे- सिस्ट-समाधि, पिट सर्किल, कैर्न-सर्किल, डोल्मेन, अंब्रेला-स्टोन, हुड-स्टोन, कंदराएं, मेहिर।

28. 'राख का टीला' निम्नलिखित किस नवपाषाणिक स्थल से संबंधित है?

(a) बुदिहाल (b) संगनकल्लू
(c) कोलडिहवा (d) ब्रह्मगिरि

U.P.P.C.S. (Mains) 2009

उत्तर—(b)

कर्नाटक में मैसुरू के पास बेल्लारी जनपद में स्थित संगनकल्लू नामक नवपाषाणकालीन पुरास्थल से 'राख के टीले' प्राप्त हुए हैं।

29. 'भीमबेटका' किसके लिए प्रसिद्ध है?

(a) गुफाओं के शैल चित्र (b) खनिज
(c) बौद्ध प्रतिमाएं (d) सोन नदी का उपागम स्थल

M.P.P.C.S. (Spl.) (Pre) 2004

उत्तर—(a)

मध्य प्रदेश के रायसेन जिले के अब्दुल्लागंज के समीप स्थित भीमबेटका प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला का श्रेष्ठ उदाहरण है। इन गुफाओं में जीवन के विविध रंगों को पेंटिंग के रूप में उकेरा गया, जिनमें हाथी, सांभर, हिरन आदि के चित्र हैं। अब तक लगभग 700 शिलाश्रय की पहचान की जा चुकी हैं, जिसमें 500 में चित्र पाए गए हैं।

30. निम्न में से कौन-सा स्थल प्रागैतिहासिक चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है?

(a) अजंता (b) भीमबेटका
(c) बाघ (d) अमरावती

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Mains) 2007
U.P.P.C.S. (Mains) 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. भीमबेटका की गुफाएं कहां स्थित हैं?

(a) भोपाल (b) पंचमढ़ी
(c) सिंगरौली (d) अब्दुल्लागंज-रायसेन

M.P.P.C.S. (Pre) 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. भारत में किस शिलाश्रय से सर्वाधिक चित्र प्राप्त हुए हैं?

(a) घघरिया (b) भीमबेटका
(c) लेखाहिया (d) आदमगढ़

U.P.P.C.S. (Pre) 2008

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. निम्नलिखित में से किस भारतीय पुरातत्ववेत्ता ने पहली बार 'भीमबेटका गुफा' को देखा और उसके शैलचित्रों के प्रागैतिहासिक महत्व को खोजा?

(a) माधो स्वरूप वत्स (b) एच.डी. सांकलिया
(c) वी.एस. वाकणकर (d) वी.एन. मिश्रा

U.P.P.C.S. (Pre) 2020

उत्तर—(c)

मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित भीमबेटका प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसकी खोज वर्ष 1957 में वी.एस. वाकणकर ने की थी। यूनेस्को ने भीमबेटका शैल चित्रों को विश्व विरासत स्थल की सूची में सम्मिलित किया है।

34. भीमबेटका को किसने खोजा था?

(a) डॉ. एच. डी. सांकलिया (b) डॉ. श्याम सुंदर निगम
(c) डॉ. विष्णुधर वाकणकर (d) डॉ. राजबली पाण्डेय

M.P.P.C.S. (Pre) 2020

उत्तर—(c)

भीमबेटका की खोज डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर ने की थी। मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग ने विष्णु श्रीधर के स्थान पर 'विष्णुधर' दिया है। अतः इसका निकतम उत्तर विकल्प (c) होगा।

35. गैरिक मृद्भांड पात्र (ओ.सी.पी.) का नामकरण हुआ था—

(a) हस्तिनापुर में (b) अहिच्छत्र में
(c) नोह में (d) लाल किला में

U.P.P.C.S. (Mains) 2006

उत्तर—(a)

गंगा-यमुना दोआब की सांस्कृतिक परंपरा संभवतः उस संस्कृति के साथ शुरू होती है, जिसे अपने अत्यंत विशिष्ट मृद्भांड के नमूने के कारण गैरिक मृद्भांड (OCP) कहा गया। इस मृद्भांड परंपरा के पात्र सर्वप्रथम हस्तिनापुर की खुदाई के दौरान प्रकाश में आए थे। वर्ष 1950-52 के दौरान हस्तिनापुर नामक पुरास्थल की खुदाई बी.बी. लाल के निर्देशन में हुई थी।

36. ताम्राश्म काल में महाराष्ट्र के लोग मृतकों को घर के फर्श के नीचे किस तरह रखकर दफनाते थे?

(a) उत्तर से दक्षिण की ओर (b) पूर्व से पश्चिम की ओर
(c) दक्षिण से उत्तर की ओर (d) पश्चिम से पूर्व की ओर

U.P.P.C.S. (Pre) 1997

उत्तर—(a)

महाराष्ट्र की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति (जोर्वे संस्कृति) के नेवासा, दैमाबाद, चंदोली, इनामगांव आदि पुरास्थलों में मृतकों को उत्तर से दक्षिण दिशा में घरों के फर्श के नीचे दफनाए जाने के साक्ष्य मिले हैं। कब्र में मिट्टी की हंडियां और तांबे की कुछ वस्तुएं भी रखी जाती थीं।

37. निम्नलिखित में से किस स्थल से मानव कंकाल के साथ कुत्ते का कंकाल भी शवाधान से प्राप्त हुआ है?

(a) ब्रह्मगिरि (b) बुर्जहोम

(c) चिरांद (d) मास्की

U.P. Lower Sub. (Pre) 2008

उत्तर—(b)

जम्मू एवं कश्मीर में श्रीनगर के निकट स्थित बुर्जहोम से नवपाषाणिक अवस्था में मानव कंकाल के साथ कुत्ते का कंकाल भी शवाधान से प्राप्त हुआ है। गर्तावास (गड्ढों वाले घर) भी यहां की प्रमुख विशेषता है।

38. निम्नलिखित में से किस स्थान पर मानव के साथ कुत्ते को दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है?

(a) बुर्जहोम (b) कोलडिहवा

(c) चोपानी-मांडो (d) मांडो

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. गर्त आवास के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं-

(a) बुर्जहोम से

(b) कोलडिहवा से

(c) ब्रह्मगिरि से

(d) संगनकल्लू से

U.P.P.C.S. (Mains) 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. निम्न का सही मिलान करें -

I	II
A. पुरापाषाण काल	**(i) भीमबेटका गुफा**
B. मध्यपाषाण काल	**(ii) बुर्जहोम**
C. नवपाषाण काल	**(iii) बनास घाटी**
D. ताम्रपाषाण काल	**(iv) सोहन/सोन नदी घाटी**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(b)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(c)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2022

उत्तर—(b)

सही मिलान है-

(I)	(II)
पुरापाषाण काल	सोहन/सोन नदी घाटी
मध्यपाषाण काल	भीमबेटका गुफा
नवपाषाण काल	बुर्जहोम
ताम्रपाषाण काल	बनास घाटी

41. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए-

सूची-I (पुरातात्विक स्थल)	**सूची-II (वर्तमान स्थान)**
A. नेवासा	**(1) राजस्थान**
B. ईसमपुर	**(2) तमिलनाडु**
C. डीडवाना	**(3) महाराष्ट्र**
D. गुडियाम गुफा	**(4) कर्नाटक**

(a) A-(4), B-(3), C-(1), D-(2)

(b) A-(3), B-(2), C-(4), D-(1)

(c) A-(3), B-(4), C-(1), D-(2)

(d) A-(3), B-(4), C-(2), D-(1)

U.P.P.C.S. (Pre) 2023

उत्तर—(c)

सूची-I का सूची-II का सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I (पुरातात्विक स्थल)		**सूची-II (वर्तमान स्थान)**
नेवासा	–	महाराष्ट्र
ईसमपुर	–	कर्नाटक
डीडवाना	–	राजस्थान
गुडियाम गुफा	–	तमिलनाडु

42. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए—

(ऐतिहासिक स्थान)		**(ख्याति का कारण)**
1. बुर्जहोम	:	**शैलकृत देव मंदिर**
2. चंद्रकेतुगढ़	:	**टेराकोटा कला**
3. गणेश्वर	:	**ताम्र कलाकृतियां**

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/कौन-से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 (b) 1 और 2

(c) केवल 3 (d) 2 और 3

I.A.S. (Pre) 2021

उत्तर—(d)

बुर्जहोम नामक नवपाषाणिक पुरास्थल जम्मू एवं कश्मीर केंद्रशासित प्रदेश में अवस्थित है। इस पुरास्थल की खोज वर्ष 1935 में डी. टेरा एवं पीटरसन ने की थी। इस पुरास्थल से 'गर्तावास' के साक्ष्यों की प्राप्ति हुई है। चंद्रकेतुगढ़ पश्चिम बंगाल प्रांत में स्थित एक प्रमुख ऐतिहासिक पुरातात्विक पुरास्थल है, जो विद्याधरी नदी के तट पर अवस्थित है। यहां से ऐतिहासिक काल के टेराकोटा कला के कई उदाहरण प्राप्त हुए हैं, जो तत्कालीन शिल्प कौशल की एक असामान्य विशेषता प्रदर्शित करता है। गणेश्वर, राजस्थान प्रांत में स्थित एक प्रमुख ताम्रपाषाणिक पुरास्थल है। इस पुरास्थल की खोज राजस्थान विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर रतनचंद्र अग्रवाल ने की थी। इस पुरास्थल से दोहरी पेंचदार शिरेवाली ताम्र बाणाग्र, मछली पकड़ने का कांटा तथा विभिन्न प्रकार के मृद्भांड प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार विकल्प (d) सही उत्तर है।

43. विंध्य क्षेत्र के किस शिलाश्रय से सर्वाधिक मानव कंकाल मिले हैं?

(a) मोरहना पहाड़ (b) घघरिया

(c) बघही खोर (d) लेखहिया

U.P.P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर—(d)

डॉ. जे.एन. पाण्डेय की पुस्तक 'पुरातत्व विमर्श' के अनुसार, विंध्य क्षेत्र के लेखहिया के शिलाश्रय संख्या 1 से मध्यपाषाणिक लघुपाषाण उपकरणों के अतिरिक्त 17 मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं, जिनमें से कुछ सुरक्षित हालत में हैं तथा अधिकांश क्षत-विक्षत अवस्था में प्राप्त हुए हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के ओरेगॉन विश्वविद्यालय के जॉन आर. लुकास के अनुसार, लेखहिया में कुल 27 मानव कंकालों की अस्थियां मिली हैं।

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) कहा गया है।

अभिकथन (A) : विंध्य क्षेत्र के पाषाण युगीन लोगों ने नूतन भूतल काल के अंत में गंगा घाटी में प्रव्रजन किया।

कारण (R) : जलवायु परिवर्तन के कारण इस काल में शुष्कता का चरण था।

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या करता है।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं; परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(c) (A) सही है; परंतु (R) गलत है।

(d) (A) गलत है; परंतु (R) सही है।

U.P.R.O./A.R.O. (Mains) 2016

उत्तर—(a)

जी.आर. शर्मा ने सराय नाहर राय में खुदाई के बाद यह अवधारणा दी कि नूतन भूतल काल के अंत में सूखे के कारण विंध्यन क्षेत्र में भोजन की कमी के कारण लोगों ने गंगा घाटी क्षेत्र में प्रवास किया था।

45. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण निम्नलिखित विभागों/मंत्रालयों में से किसका संलग्न कार्यालय है?

(a) संस्कृति

(b) पर्यटन

(c) विज्ञान और प्रौद्योगिकी

(d) मानव संसाधन विकास

Jharkhand P.C.S. (Pre) 2011

उत्तर—(a)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India) भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक विभाग है।

46. 'भारतीय पुरातत्व का जनक' किसे कहा जाता है?

(a) अलेक्जेंडर कनिंघम (b) जॉन मार्शल

(c) मार्टीमर ह्वीलर (d) जेम्स प्रिंसेप

M.P.P.C.S. (Pre) 2017

उत्तर—(a)

अलेक्जेंडर कनिंघम (1814-1893 ई.) को एक ब्रिटिश सेनाधिकारी के रूप में बंगाल इंजीनियर ग्रुप के साथ काम करने के लिए तैनात किया गया था। उन्हें ही 'भारतीय पुरातत्व के जनक' के रूप में जाना जाता है।

47. राष्ट्रीय मानव संग्रहालय कहां पर है?

(a) गुवाहाटी (b) बस्तर

(c) भोपाल (d) चेन्नई

M.P. P.C.S. (Pre) 1997

उत्तर—(c)

राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, जिसका नाम बदलकर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय कर दिया गया है, भोपाल (म.प्र.) में स्थित है। यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्तशासी संगठन है।

48. मानव सभ्यता के विकास की कहानी दर्शाने वाला, देश का सबसे बड़ा संग्रहालय, इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय कहां स्थित है?

(a) भोपाल (b) नई दिल्ली

(c) मुंबई (d) अहमदाबाद

M.P.P.C.S. (Pre) 2019

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

सैंधव सभ्यता एवं संस्कृति

नोट्स

*सैंधव सभ्यता के लिए साधारणतः तीन नामों का प्रयोग होता है– 'सिंधु-सभ्यता', 'सिंधु-घाटी की सभ्यता' और 'हड़प्पा सभ्यता'। *हड़प्पा सभ्यता की खोज वर्ष 1921 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक सर जॉन मार्शल के निर्देशन में रायबहादुर दयाराम साहनी ने किया था। *हड़प्पा, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के साहीवाल जिले में स्थित है, जबकि मोहनजोदड़ो सिंध प्रांत के लरकाना जिले में स्थित है। *पिग्गट महोदय ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो को **'एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वां राजधानियां'** कहा है। *हड़प्पा रावी नदी के बाएं तट पर, जबकि मोहनजोदड़ो सिंधु नदी के दाहिने तट पर स्थित है। * सर जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इस सभ्यता को 'सिंधु सभ्यता' का नाम दिया।

*रेडियो कार्बन-14 (C-14) जैसी नवीन विश्लेषण पद्धति के द्वारा हड़प्पा सभ्यता की तिथि 2300 ई.पू.-1700 ई.पू. मानी गई है, जो सर्वाधिक मान्य तिथि है। *लगभग 2300 ई.पू. से 1900 ई.पू. तक यह सभ्यता अपने विकास की पराकाष्ठा पर थी। *यह सभ्यता मेसोपोटामिया तथा मिस्र की सभ्यताओं की समकालीन थी।

*विभिन्न विद्वानों ने सैंधव सभ्यता की कालावधि का निर्धारण निम्नवत किया है–

विद्वान		निर्धारित कालावधि
जॉन मार्शल	-	3250 ई.पू.- 2750 ई.पू.
अर्नेस्ट मैके	-	2800 ई.पू.- 2500 ई.पू.
माधो सरूप वत्स	-	3500 ई.पू.-2000 ई.पू.
गैड	-	2350 ई.पू.-1700 ई.पू.
मार्टीमर ह्वीलर	-	2500 ई.पू.-1500 ई.पू.
फेयर सर्विस	-	2000 ई.पू.-1500 ई.पू.

*अब तक इस सभ्यता के अवशेष मुख्यतः अफगानिस्तान में (शोर्तघुई एवं मुंडीगाक), पाकिस्तान में पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान और भारत में पंजाब, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पश्चिमी उ.प्र., जम्मू एवं कश्मीर, पश्चिमी महाराष्ट्र में पाए जा चुके हैं। *इस सभ्यता का सर्वाधिक पश्चिमी पुरास्थल सुत्कागेनडोर (बलूचिस्तान), पूर्वी पुरास्थल आलमगीरपुर (पश्चिमी उ.प्र.), उत्तरी पुरास्थल मांडा (जम्मू एवं कश्मीर) तथा दक्षिणी पुरास्थल दैमाबाद (महाराष्ट्र) है। *इसका **आकार त्रिभुजाकार** है तथा वर्तमान में लगभग 13 लाख वर्ग किमी. क्षेत्रफल में विस्तृत है।

*प्राप्त साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि हड़प्पा सभ्यता की जनसंख्या एक मिश्रित प्रजाति की थी, जिसमें मुख्यतः चार प्रजातियां थीं। * 1. प्रोटो ऑस्ट्रेलॉयड (काकेशियन), 2. भूमध्य सागरीय (इंडो-यूरोपियन या कैस्पियन), 3. अल्पाइन और 4. मंगोलॉयड। *मोहनजोदड़ो के निवासी अधिकांशतः भूमध्य सागरीय प्रजाति के थे।

*सिंधु सभ्यता के संस्थापकों के संबंध में विभिन्न विद्वानों के विचार-

विद्वान		सिंधु सभ्यता के निर्माता
1. डॉ. लक्ष्मण स्वरूप	-	आर्य
2. गार्डन चाइल्ड एवं मार्टीमर ह्वीलर	-	सुमेरियन
3. राखालदास बनर्जी	-	द्रविड़

*सिंधु घाटी के जिन नगरों की खुदाई की गई उन्हें निम्नलिखित वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है–1.केंद्रीय नगर, 2. तटीय नगर और पत्तन एवं 3.अन्य नगर एवं कस्बे। * हड़प्पा के टीले या ध्वंसावशेषों के विषय में सर्वप्रथम जानकारी 1826 ई. में चार्ल्स मेसन ने दी। *जनवरी, 1921 में दयाराम साहनी के नेतृत्व पंजाब (पाकिस्तान) के वर्तमान साहीवाल जिले में रावी नदी के बाएं तट पर स्थित हड़प्पा का सर्वेक्षण आरंभ हुआ। वर्ष 1926-27 और 1933-34 में माधो सरूप वत्स ने तथा वर्ष 1946 में मार्टीमर ह्वीलर ने व्यापक स्तर पर उत्खनन कराया। *हड़प्पा से प्राप्त दो टीलों में पूर्वी टीले को **'नगर टीला'** तथा पश्चिमी टीले को **'दुर्ग टीला'** के नाम से संबोधित किया गया है। *यहां से 6-6 कक्षों की दो पंक्तियों में निर्मित कुल बारह **अन्नागार के अवशेष** प्राप्त हुए हैं। *हड़प्पा के सामान्य आवास क्षेत्र के दक्षिण में एक ऐसा कब्रिस्तान स्थित है, जिसे **समाधि R-37** नाम दिया गया है। *नगर की रक्षा के लिए पश्चिम की ओर स्थित दुर्ग टीले को ह्वीलर ने **माउंड A-B** की संज्ञा दी है। *इसके अतिरिक्त यहां से प्राप्त कुछ अन्य महत्वपूर्ण अवशेषों में एक बर्तन पर बना मछुवारे का चित्र, शंख का बना बैल, स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौधा (जिसे उर्वरता की देवी माना गया है), तांबे का बना इक्का, ईंटों के वृत्ताकार चबूतरे, गेहूं तथा जौ के दानों के अवशेष प्रमुख हैं।

*मोहनजोदड़ो सिंधी भाषा का एक शब्द है जिसका हिंदी रूपांतरण **'मृतकों का टीला'** है। सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाहिने तट पर स्थित मोहनजोदड़ो की सर्वप्रथम खोज **राखालदास बनर्जी** ने वर्ष **1922 में** की थी। *मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक उल्लेखनीय स्मारक **बृहत स्नानागार** है। इसकी लंबाई उत्तर से दक्षिण की ओर लगभग 55 मीटर और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर लगभग 33 मीटर है। इसके मध्य निर्मित स्नानकुंड की उत्तर से दक्षिण लंबाई 39 फीट (11.88 मी.), चौड़ाई 23 फीट (7.01 मी.) तथा गहराई 8 फीट (2.43 मी.) है। *यह विशाल स्नानागार धर्मानुष्ठान संबंधी स्नान के लिए था। ***मार्शल** ने इसे **तत्कालीन विश्व का एक आश्चर्यजनक** निर्माण कहा।*सिंधु सभ्यता में अभिलेख युक्त मुहरें सर्वाधिक मोहनजोदड़ो से मिली हैं।

*मोहनजोदड़ो की एक अन्य इमारत **विशाल अन्नागार** है, जो 45.72 मीटर लंबा तथा 22.86 मीटर चौड़ा है। *बृहत स्नानागार के उत्तर-पूर्व में 70.1 × 23.77 मीटर के आकार का एक विशाल भवन के अवशेष मिले हैं। संभवतः यह पुरोहितावास था तथा यहां **'पुरोहितों का विद्यालय'** स्थित रहा हो। *मोहनजोदड़ो की प्रमुख विशेषता उसकी सड़कें थीं। मुख्य सड़क 9.15 मी. चौड़ी थी, जिसे राजपथ कहा गया। *सड़कें सीधी दिशा में एक-दूसरे को समकोण पर काटती हुई नगर को अनेक वर्गाकार अथवा चतुर्भुजाकार खंडों में विभाजित करती थीं। *सड़कों के एक-दूसरे को समकोण पर काटने को 'ऑक्सफोर्ड सर्कस' नाम दिया गया है। *मोहदजोदड़ो के पश्चिमी भाग में स्थित दुर्ग टीले को **'स्तूपटीला'** भी कहा जाता है; क्योंकि यहां पर कुषाण शासकों ने एक स्तूप का निर्माण करवाया था। *मोहनजोदड़ो से प्राप्त अन्य अवशेषों में कांसे की बनी नृत्यरत नारी की मूर्ति, पुजारी (योगी) की मूर्ति, मुद्रा पर अंकित पशुपतिनाथ (शिव) की मूर्ति, कुंभकारों के छः भट्ठे, सूती कपड़ा, गले हुए तांबे के ढेर, सीपी की बनी हुई पटरी, अंतिम स्तर पर बिखरे हुए एवं कुएं से प्राप्त नर कंकाल, घोड़े के दांत एवं गीली मिट्टी पर कपड़े के साक्ष्य मिले हैं।

*मोहनजोदड़ो से लगभग 130 किमी. दक्षिण में स्थित चन्हूदड़ो की खोज सर्वप्रथम वर्ष 1931 में एन.जी. मजूमदार ने की थी। वर्ष 1935-36 में इसका उत्खनन मैके ने किया। *यहां सैंधव संस्कृति के अतिरिक्त उत्तरवर्ती हड़प्पा संस्कृति, जिसे **झूकर** और **झांगर संस्कृति** कहते हैं, के अवशेष मिले हैं। *संभवतः यह एक औद्योगिक केंद्र था जहां मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखरे बनाने का काम होता था। *मैके को यहां से **मनका बनाने का कारखाना** (Bead Factory) तथा भट्ठी प्राप्त हुई थी। *यहां से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख हैं–अलंकृत हाथी, खिलौना एवं कुत्ते के बिल्ली का पीछा करते हुए पद-चिह्न, सौंदर्य प्रसाधनों में प्रयुक्त लिपस्टिक आदि। ***चन्हूदड़ो** एकमात्र पुरास्थल है, जहां से **वक्राकार ईंटें** मिली हैं। *यहां किसी दुर्ग का अवशेष नहीं मिला है।

*गुजरात में अहमदाबाद जिले में भोगवा नदी के तट पर स्थित लोथल की खोज सर्वप्रथम डॉ. एस.आर. राव ने की थी। *खंभात की खाड़ी के तट पर स्थित यह स्थल पश्चिमी एशिया से व्यापार के लिए एक प्रमुख बंदरगाह था। *नगर योजना तथा अन्य भौतिक वस्तुओं के आधार पर लोथल एक **'लघु हड़प्पा'** या **'लघु मोहनजोदड़ो'** नगर प्रतीत होता है। *यहां से फारस की मुद्रा/सील और पक्के रंग में रंगे हुए पात्र प्राप्त हुए हैं। *लोथल में गढ़ी तथा नगर दोनों एक रक्षा प्राचीर से घिरे हैं। *लोथल की सबसे प्रमुख विशेषता **'जहाजों की गोदी'** (डॉक-यार्ड) है। *यहां से प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण अवशेष हैं– धान (चावल) और बाजरे का साक्ष्य, फारस की मुहर, घोड़े की लघु मृण्मूर्ति, तीन द्विशव समाधियां आदि।

*कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ (पूर्व में हनुमानगढ़ जिला, गंगानगर का भाग था) जिले में स्थित है। इस स्थल की खोज इटली के लुइगी पिओ तेस्सीटोरी ने की; हड़प्पा स्थल के रूप में पहचान अमलानंद घोष ने की थी। *वर्ष 1960-61 में बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर ने उत्खनन आरंभ किया। यहां पूर्वी और पश्चिमी टीला अलग-अलग सुरक्षा प्राचीर से घिरे थे। *यहां पर पश्चिम दिशा में स्थित दुर्ग वाले टीले पर सैंधव सभ्यता के नीचे प्राक्-सैंधव संस्कृति के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। *मोहनजोदड़ो के भवन पक्की ईंटों के बने थे, जबकि कालीबंगा के भवन कच्ची ईंटों के बने थे। *पक्की ईंटों का प्रयोग केवल नालियों, कुओं एवं स्नानागार बनाने में ही किया गया है। *यहां से **जुते हुए खेत के साक्ष्य** मिले हैं, जिसकी जुताई आड़ी-तिरछी की गई है। *मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा के समान यहां से दो टीले मिले हैं, जो सुरक्षा दीवारों से घिरे हैं। *पूर्व की ओर स्थित टीला बड़ा, जबकि पश्चिम की तरफ स्थित टीला छोटा था। *पश्चिमी टीले को 'कालीबंगा प्रथम' नाम दिया गया है। *यहां से भूकंप आने का साक्ष्य मिला है। *दुर्ग या गढ़ी वाले टीले के दक्षिणी अर्धभाग में चार या पांच कच्ची ईंटों के चबूतरे बने थे। *एक चबूतरे पर अग्निकुंड, कुआं तथा पक्की ईंटों का बना एक आयताकार गर्त था, जिसमें पशुओं की हड्डियां थीं। *दूसरे चबूतरे पर सात अग्निकुंड या वेदिकाएं एक पंक्ति में बनी थीं। *यहां से सेलखड़ी तथा मिट्टी की मुहरें एवं मृद्भांड के टुकड़े मिले हैं।

*धौलावीरा गुजरात के कच्छ के रन में अवस्थित है। *सर्वप्रथम वर्ष 1967-68 में इसकी खोज जे.पी. जोशी ने की। *वर्ष 1990-91 के दौरान आर.एस. बिष्ट द्वारा व्यापक पैमाने पर उत्खनन कार्य प्रारंभ किया गया। *यह नगर आयताकार बना था। *इस नगर को तीन भागों-किला, मध्य नगर तथा निचला नगर में विभाजित किया गया था। *यहां से एक विशाल जलाशय मिला है। *यहां के निवासी एक **उन्नत जल प्रबंधन व्यवस्था** से परिचित थे। *यहां से हड़प्पा लिपि के बड़े आकार के 10 चिह्नों वाला एक शिलालेख मिला है।

*सुरकोटडा, गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है। यह नगर दो दुर्गीकृत भागों–गढ़ी तथा आवास क्षेत्र में विभाजित था। *यहां के कब्रिस्तान से कलश शवाधान के साक्ष्य मिले हैं। *यहां घोड़े की कुछ हड्डियों के साक्ष्य मिले हैं।

*दैमाबाद महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में प्रवरा नदी के बाएं किनारे पर स्थित है। *यह सैंधव सभ्यता का सबसे दक्षिणी स्थल है। *यहां से रथ चलाते हुए मनुष्य, सांड़, गैंडे आदि की आकृतियां प्राप्त हुई हैं। *यहां से कुछ मृद्भांड, सैंधव लिपि की एक मुहर, तश्तरी, प्याले आदि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

*राखीगढ़ी, हरियाणा के हिसार जिले में घग्गर नदी के किनारे स्थित है। * यह नवीनतम शोधों के अनुसार सबसे बड़ा सैंधव स्थल है।

*रोपड़ (पंजाब) सतलुज नदी के बाएं तट पर स्थित है। *इसका आधुनिक नाम रूपनगर है। *वर्ष 1950 में इसकी खोज बी.बी. लाल ने तथा वर्ष 1953-55 के दौरान यज्ञदत्त शर्मा ने इसकी खुदाई करवाई। *यहां से

मृद्भांड, सेलखड़ी की मुहर, चर्ट के बटखरे, एक छुरा, तांबे के बाणाग्र तथा कुल्हाड़ी आदि प्राप्त हुए हैं। *यहां से मनुष्य के साथ पालतू कुत्ता के दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है।

*रंगपुर, गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में है। *यहां से प्राक्-हड़प्पा, हड़प्पा और उत्तर हड़प्पाकालीन सभ्यता के साक्ष्य मिले हैं। *यहां से प्राप्त वनस्पति अवशेष के आधार पर कहा जा सकता है कि वे लोग चावल, बाजरा एवं ज्वार की खेती करते थे।

सैंधव सभ्यता के प्रमुख स्थल एवं उनसे संबंधित नदी

स्थल	नदी
हड़प्पा	रावी
मोहनजोदड़ो	सिंधु
कालीबंगा	घग्गर
लोथल	भोगवा
रोपड़	सतलुज
मांडा	चिनाब
दैमाबाद	प्रवरा
आलमगीरपुर	हिंडन
सुत्कागेनडोर	दास्त/दाश्क
भगवानपुरा	सरस्वती

*आलमगीरपुर, उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हिंडन नदी के किनारे स्थित है। *यहां से खुदाई में मृद्भांड एवं मनके मिले हैं। *कुछ बर्तनों पर त्रिभुज, मोर, गिलहरी आदि की चित्रकारियां मिलती हैं।

*हुलास, उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में स्थित है। *यहां से कांचली मिट्टी के मनके, चूड़ियां, खिलौना-गाड़ी आदि मिले हैं। *सैंधव लिपियुक्त एक ठप्पा का भी साक्ष्य मिला है। *देसलपुर से एक रक्षा प्राचीर मिला है।

*सुत्कागेनडोर स्थल दक्षिण बलूचिस्तान में दास्त/दाश्क नदी के किनारे स्थित है। *इसकी पहचान हड़प्पा स्थल के रूप में वर्ष 1927 में **आरेल स्टीन** ने की थी। *इसका दुर्ग एक प्राकृतिक चट्टान के ऊपर स्थित था। *यहां से मृद्भांड, एक ताम्रनिर्मित बाणाग्र, ताम्र निर्मित ब्लेड के टुकड़े, तिकोने ठीकरे तथा मिट्टी की चूड़ियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

*सोत्काकोह, सुत्कागेनडोर के पूर्व में स्थित है। *वर्ष 1962 में इसकी खोज जी.एफ. डेल्स द्वारा की गई। *यहां से दो टीले मिले हैं, जिसके आकार सुत्कागेनडोर जैसे ही हैं।

*बलूचिस्तान के दक्षिण तटवर्ती पट्टी पर स्थित बालाकोट एक बंदरगाह के रूप में कार्य करता था। *यहां से हड़प्पा पूर्व एवं हड़प्पाकालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं। *इसकी नगर योजना सुनियोजित थी।*भवनों के निर्माण में कच्ची ईंटों का, जबकि नालियों के निर्माण में पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था। *यहां का सबसे समृद्ध उद्योग सीप उद्योग था। *यहां से काफी मात्रा में सीप से बनी चूड़ियों के टुकड़े मिले हैं।

*बनावली हरियाणा के फतेहाबाद (पूर्व में हिसार का भाग था) जिले में स्थित है। *वर्ष 1974-77 में आर.एस. बिष्ट द्वारा इस स्थल का उत्खनन करवाया गया। *यहां से संस्कृति के तीन स्तर प्रकाश में आए हैं–प्राक् सैंधव, विकसित सैंधव एवं उत्तर सैंधव। *यहां की **सड़कें नगर को तारांकित (Star Shaped) भागों में विभाजित** करती हैं। *यहां से मुहरें, बटखरे, लाजवर्द तथा कार्नेलियन के मनके, हल की आकृति के खिलौने, तांबे के बाणाग्र आदि के साक्ष्य मिले हैं। *भगवानपुरा हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले में सरस्वती नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। *जे.पी. जोशी ने इसका उत्खनन करवाया था। *यहां प्राप्त प्रमुख अवशेषों में सफेद, काले तथा आसमानी रंग की कांच की चूड़ियां, तांबे की चूड़ियां, कांच की मिट्टी के चित्रित मनके आदि हैं।

*मांडा जम्मू एवं कश्मीर में चिनाब नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। * वर्ष 1982 में इसका उत्खनन जे.पी. जोशी तथा मधुबाला द्वारा करवाया गया था। *उत्खनन से यहां तीन सांस्कृतिक स्तर प्राप्त हुए हैं–प्राक् सैंधव, विकसित सैंधव एवं उत्तरकालीन सैंधव। *यहां से मिट्टी के ठीकरे, हड्डी के नुकीले बाणाग्र, चर्ट ब्लेड, कांस्य निर्मित पेंचदार पिन तथा एक आधी-अधूरी मुहर आदि के अवशेष प्राप्त हुए हैं। *उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में बारोट तहसील के सिनौली नामक हड़प्पन पुरास्थल से क्रमबद्ध रूप से 125 मानव शवाधान प्राप्त हुए हैं, जिनकी दिशा उत्तर से दक्षिण है। *मिस्र की सभ्यता का विकास नील नदी की द्रोणी में हुआ। * **मिस्र को नील नदी का उपहार** कहा जाता है; क्योंकि इस नदी के अभाव में यह भू-भाग रेगिस्तान होता। * **सुमेरिया सभ्यता** के लोग प्राचीन विश्व के **प्रथम लिपि-आविष्कर्ता** थे।

*खुदाई से प्राप्त बहुसंख्यक नारी मूर्तियों से अनुमान लगाया जाता है कि सैंधव सभ्यता मातृसत्तात्मक थी। *सैंधव लोग शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। *उनके वस्त्र ऊनी और सूती दोनों प्रकार के होते थे। *कंठहार, कर्णफूल, कड़ा, भुजबंद, अंगूठी, हंसुली, करधनी आदि आभूषण पहने जाते थे। *नौसारो से स्त्रियों के मांग में सिंदूर के प्रमाण मिले हैं, जो हिंदू धर्म में सुहाग का प्रतीक है। *सैंधव काल में पासा प्रमुख खेल था।

*सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों के मुख्य खाद्यान्न गेहूं और जौ थे। *रंगपुर से धान की भूसी तथा लोथल से चावल के अवशेष मिले हैं। *लोथल से वृत्ताकार चक्की के दो पाट मिले हैं। *सूती वस्त्रों के अवशेषों से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि यहां के निवासी कपास उगाना जानते थे। *सर्वप्रथम सैंधव निवासियों ने कपास की खेती प्रारंभ किया था। *भारत से कपास ग्रीस गई, जिसे वहां के लोग 'सिंडन' के नाम से पुकारते थे। *भारत में कपास की खेती का प्रारंभ 3000 ई.पू. में किया गया, जबकि मिस्र में इसकी खेती 2500 ई.पू. के लगभग शुरू की गई। *हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, सुरकोटडा के स्थलों से कूबड़दार

ऊंट के जीवाश्म मिले हैं। *सुरकोटडा, लोथल, कालीबंगा से घोड़े की मृण्मूर्तियां, हड्डियां, जबड़े आदि के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

*सिंधु सभ्यता का प्रमुख उद्योग वस्त्र उद्योग था। *मोहनजोदड़ो से तांबे के दो उपकरणों से लिपटा हुआ सूती धागा एवं कपड़ा प्राप्त हुआ है। *लोथल तथा चन्हूदड़ो में मनके बनाने का कार्य होता था। ***लोथल तथा बालाकोट सीप उद्योग** के लिए प्रसिद्ध थे।

प्रमुख धातु एवं प्राप्ति स्थल

कच्चा माल	प्राप्ति स्थल
तांबा	खेतड़ी (राजस्थान), बलूचिस्तान एवं ओमान
लाजवर्द	बदख्शां (अफगानिस्तान)
टिन	ईरान, अफगानिस्तान
चांदी	राजस्थान की जावर एवं अजमेर खानों से, अफगानिस्तान एवं ईरान
सीसा	ईरान, अफगानिस्तान और अजमेर (राजस्थान)
शिलाजीत	हिमालय
गोमेद	गुजरात
सोना	दक्षिण भारत (कर्नाटक)

*सैंधव निवासियों का आंतरिक एवं बाह्य व्यापार उन्नत अवस्था में था। *सिक्कों का प्रचलन नहीं था तथा क्रय-विक्रय वस्तु-विनिमय द्वारा किया जाता था। *लोथल एवं मोहनजोदड़ो से हाथी दांत के बने तराजू के पलड़े मिले हैं। *उनके बाट मुख्यतः घनाकार होते थे। *कुछ बाट बेलनाकार, ढोलाकार, वर्तुलाकार प्रकार के भी मिले हैं। *सारगोन युगीन सुमेरियन लेख से ज्ञात होता है कि मेलुहा, दिलमुन तथा मगन के साथ मेसोपोटामिया के व्यापारिक संबंध थे। *'**मेलुहा**' की पहचान सिंधु क्षेत्र से की गई है। *'दिलमुन' की पहचान फारस की खाड़ी के बहरीन से की गई है। *सुमेरियन अभिलेखों में दिलमुन को **'साफ-सुथरे नगरों का स्थान'** या **'सूर्योदय का क्षेत्र'** और **'हाथियों का देश'** कहा गया है। *मिस्र के साथ व्यापारिक संबंध का पता लोथल से प्राप्त 'ममी' की एक आकृति से चलता है।

*सैंधव सभ्यता में मूर्तिकला, वास्तुकला, उत्कीर्ण कला, मृद्भांड कला आदि के उन्नत होने के प्रमाण मिले हैं। *मोहनजोदड़ो से एक संयुक्त पशुमूर्ति प्राप्त हुई है, जिसमें शरीर भेड़ का तथा मस्तक सूंड़दार हाथी का है। *हड़प्पा की पाषाण मूर्तियों में दो सिर रहित मानव मूर्तियां उल्लेखनीय हैं। ***धातु मूर्तियां लुप्त मोम या मधूच्छिष्ट विधि** (Lost Wax) से बनाई जाती थीं। *मोहनजोदड़ो से प्राप्त नर्तकी की कांस्य मूर्ति अत्यंत प्रसिद्ध है। *लोथल से कुत्ते तथा कालीबंगा से ताम्र मूर्ति प्राप्त हुई है। *चन्हूदड़ो से प्राप्त इक्का गाड़ी एवं बैलगाड़ी की मूर्तियां उल्लेखनीय हैं। *मृण्मूर्तियां पुरुषों, स्त्रियों और पशु-पक्षियों की प्राप्त हुई हैं। *मानव मूर्तियां अधिकतर स्त्रियों की हैं। *सर्वाधिक मृण्मूर्तियां पशु-पक्षियों की प्राप्त हुई हैं।

*सैंधव काल में **सर्वाधिक मुहरें सेलखड़ी की** बनी हैं। *इसके अतिरिक्त कांचली मिट्टी, चर्ट, गोमेद, मिट्टी आदि की बनी मुहरें भी हैं। *अधिकांश मुहरें वर्गाकार या चौकोर हैं; किंतु कुछ मुहरें घनाकार, गोलाकार अथवा बेलनाकार भी हैं। *सिंधु सभ्यता की **मुहरों पर सर्वाधिक अंकन एक शृंगी पशु का** है, उसके बाद कूबड़ वाले बैलों का है। *पशुपति शिव का प्रमाण मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर है, जिस पर योगी की आकृति बनी है। *उस योगी के बाईं ओर बाघ और हाथी तथा दाईं ओर गैंडा एवं भैंसा चित्रित किए गए हैं। सिंहासन के नीचे दो हिरन भी बने हैं। *योगी के सिर पर एक त्रिशूल जैसा आभूषण है तथा इसके तीन मुख हैं। ***मार्शल** महोदय ने इसे **रुद्र (शिव)** से संबंधित किया है।

*सैंधव मृद्भांड मुख्यतया लाल या गुलाबी रंग के हैं। *कुछ मृद्भांडों को लाल रंग से रंगकर काली रेखाओं से चित्र बनाए गए हैं। *कुछ बर्तनों पर मोर, हिरण, कछुआ, मछली, गाय, बकरा, पीपल, नीम, खजूर, केला आदि का अंकन है। *सैंधव मृद्भांडों में मर्तबान, कटोरे, तश्तरियां एवं थालियां प्रमुख हैं। *स्त्री-पुरुष दोनों आभूषण पहनते थे। *सोने-चांदी के अतिरिक्त हाथी दांत, शंख आदि के भी आभूषण तैयार किए जाते थे। *सैंधव सभ्यता में मातृदेवी की पूजा प्रमुख थी। *हड़प्पा से प्राप्त एक स्त्री की मूर्ति में उसके गर्भ से निकलता एक पौधा दिखाया गया है। संभवतः यह देवी धरती की मूर्ति थी, जिसे लोग उर्वरता की देवी समझते थे तथा इसकी पूजा उसी तरह करते थे, जिस प्रकार मिस्र के लोग नील नदी की देवी आइसिस की। *मातृदेवी एवं शिव की पूजा के अतिरिक्त सैंधव निवासी पशुओं, पक्षियों, वृक्षों आदि की उपासना करते थे। ***लोथल, कालीबंगा एवं बनावली के पुरास्थलों से अग्निकुंड अथवा यज्ञ वेदियों के साक्ष्य** मिलते हैं। *उत्तर-दक्षिण दिशा में शव दफनाने की प्रथा प्रचलित थी; किंतु इसके अपवाद भी मिलते हैं। *कालीबंगा में शव दक्षिण-उत्तर, रोपड़ में पश्चिम-पूर्व तथा लोथल में पूर्व-पश्चिम दिशा में प्राप्त हुए हैं। ***आंशिक समाधीकरण के उदाहरण बहावलपुर** से मिले हैं।

सैंधव सभ्यता के विनाश के कारणों पर विभिन्न इतिहासकारों एवं विद्वानों का मत

विनाश का कारण	इतिहासकार/विद्वान
बाढ़	मार्शल, मैके, एस.आर. राव
आर्यों का आक्रमण	गार्डेन चाइल्ड, मार्टीमर ह्वीलर, स्टुअर्ट पिग्गट
जलवायु परिवर्तन	आरेल स्टीन, अमलानंद घोष
भू-तात्विक परिवर्तन	एम.आर. साहनी, एच.टी. लैम्ब्रिक, जी.एफ. डेल्स
महामारी	के.यू.आर. कनेडी
पर्यावरण परिवर्तन	एम. दिमित्रियेव

प्रश्नकोश

1. मानव समाज विलक्षण है; क्योंकि वह मुख्यतया आश्रित होता है—

(a) संस्कृति पर (b) अर्थव्यवस्था पर

(c) धर्म पर (d) विज्ञान पर

U.P. P.C.S. (Spl.) (Mains) 2004

उत्तर—(b)

मानव समाज विलक्षण या विशिष्ट होता है; क्योंकि वह मुख्यतः अर्थव्यवस्था पर आश्रित होता है। अर्थव्यवस्था में जैसे-जैसे परिवर्तन होता जाता है वैसे-वैसे समाज परिवर्तित होता जाता है; जैसे– खाद्य संग्राहक, कृषि उत्पादन, उद्योग आदि। अर्थव्यवस्था में जैसे-जैसे परिवर्तन होता गया, सामाजिक व्यवस्था उसी अनुरूप में बदलती गई। संस्कृति, धर्म, विज्ञान आदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों में परिवर्तन के अनुसार ही परिवर्तित होते रहते हैं।

2. हड़प्पा निम्नलिखित में से किस सभ्यता से संबद्ध है?

(a) सुमेरियन सभ्यता (b) सिंधु घाटी सभ्यता

(c) वैदिक सभ्यता (d) मेसोपोटामिया सभ्यता

M.P.P.C.S. (Pre) 1990

उत्तर—(b)

हड़प्पा नामक पुरास्थल सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित है। सिंधु सभ्यता के प्रथम स्थल के नाम पर सैंधव सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। कालानुक्रम की दृष्टि से यह सभ्यता मिस्र एवं मेसोपोटामिया की प्राचीन सभ्यताओं के समकालिक थी।

3. सिंधु सभ्यता संबंधित है—

(a) प्रागैतिहासिक युग से (b) आद्य-ऐतिहासिक युग से

(c) ऐतिहासिक युग से (d) उत्तर-ऐतिहासिक युग से

U.P.P.C.S. (Pre) 1996

39th B.P.S.C. (Pre) 1994

उत्तर—(b)

सैंधव सभ्यता आद्य-ऐतिहासिक काल की सभ्यता है, क्योंकि यहां पर लेखन कला का ज्ञान तो है; किंतु अभी तक इसे पढ़ा नहीं जा सका है। अतः इतिहास निर्माण में इसका प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

4. सिंधु घाटी की सभ्यता गैर-आर्य थी; क्योंकि—

(a) वह नगरीय सभ्यता थी।

(b) उसकी अपनी लिपि थी।

(c) उसकी खेतिहर अर्थव्यवस्था थी।

(d) उसका विस्तार नर्मदा घाटी तक था।

U.P.P.S.C. (GIC) 2010

उत्तर—(a)

सिंधु घाटी की सभ्यता गैर-आर्य मुख्य रूप से इसलिए थी, क्योंकि वह नगरीय सभ्यता थी, जबकि आर्य सभ्यता ग्रामीण थी।

5. सिंधु घाटी सभ्यता को आर्यों से पूर्व की रखे जाने का महत्वपूर्ण कारक है—

(a) लिपि (b) नगर नियोजन

(c) तांबा (d) मृद्भांड

U.P.P.C.S. (Pre) 1990

उत्तर—(d)

'सिंधु घाटी सभ्यता' लिपि ज्ञान और नगर नियोजन आदि के संदर्भ में आर्यों से अधिक विकसित थी। पुरातात्विक साक्ष्यों में अलग-अलग काल में पाए गए मृद्भांड ही सिंधु घाटी सभ्यता को आर्यों से पूर्व का सिद्ध करते हैं। काले रंग की आकृतियों से चित्रित लाल मृद्भांड जहां हड़प्पा सभ्यता से संबंधित हैं, वहीं धूसर एवं चित्रित धूसर मृद्भांड (जो बाद के हैं) आर्यों से संबंधित माने गए हैं।

6. सिंधु घाटी संस्कृति वैदिक सभ्यता से भिन्न थी; क्योंकि—

(a) इसके पास विकसित शहरी जीवन की सुविधाएं थीं।

(b) इसके पास चित्रलेखीय लिपि थी।

(c) इसके पास लोहे और रक्षा शस्त्रों के ज्ञान का अभाव था।

(d) उपर्युक्त सभी।

U.P.P.C.S.(Spl.) (Mains) 2004

उत्तर—(d)

सिंधु घाटी संस्कृति वैदिक सभ्यता से अनेक बातों में भिन्न थी। सिंधु घाटी सभ्यता नगरीय थी, जबकि वैदिक सभ्यता ग्रामीण थी। सिंधु सभ्यता की लिपि भावचित्रात्मक थी। वैदिक सभ्यता के लोग लोहे तथा रक्षा शस्त्रों के ज्ञान से युक्त थे, जबकि सिंधु घाटी की सभ्यता में लोहे के ज्ञान का अभाव था।

7. हड़प्पा संस्कृति की जानकारी का प्रमुख स्रोत है—

(a) शिलालेख (b) पकी मिट्टी की मुहरों पर अंकित लेख

(c) पुरातात्विक खुदाई (d) उपर्युक्त सभी

U.P.P.C.S. (Pre) 1996

U.P.P.C.S. (Pre) 1994

उत्तर—(c)

हड़प्पा सभ्यता की लिपि का वाचन अभी नहीं हो सका है, अतः सभ्यता से संबद्ध अनेक पुरास्थलों से प्राप्त पुरावशेष ही हड़प्पा संस्कृति के विशिष्ट तत्वों पर प्रकाश डालते हैं।

8. निम्नलिखित में से कौन-सा सिंधु घाटी की सभ्यता पर प्रकाश डालता है?

(a) शिलालेख (b) पुरातत्व संबंधी खुदाई

(c) बर्तनों की मुहरों पर लिखावट (d) धार्मिक ग्रंथ

U.P.P.C.S. (Pre) 1993

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. सिंधु घाटी के निवासियों की सभ्यता को जानने का मूल स्रोत है, वहां पाई गई—

(a) मोहरें (b) बर्तन, जेवर, हथियार तथा औजार

(c) मंदिर (d) लिपि

R.A.S./R.T.S. (Pre) 1996

उत्तर—(a)

सैंधव सभ्यता से संबद्ध विभिन्न पुरास्थलों की खुदाई के फलस्वरूप वहां से प्राप्त 3000 से अधिक मोहरें इस सभ्यता के विषय में जानकारी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन हैं। मुहरों पर अंकित चित्रों के माध्यम से सैंधव सभ्यता के विभिन्न कार्यकलापों एवं विश्वासों पर प्रकाश पड़ता है।

10. हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा सही नहीं है?

(a) एम. रफीक मुगल – हड़प्पा सभ्यता ने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली

(b) ई. जे.एच. मैके – सुमेर से लोगों का पलायन

(c) मार्टीमर ह्वीलर – पश्चिमी एशिया से 'सभ्यता के विचार' का प्रवसन

(d) अमलानंद घोष – हड़प्पा सभ्यता का उद्‌भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता के परिणामस्वरूप हुआ

R.A.S./ R.T.S. (Pre) (Re-Exam) 2013

उत्तर—(a)

हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में अनेक विद्वानों ने अलग-अलग मत प्रस्तुत किए हैं। ई. जे. एच. मैके का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति सुमेर (मेसोपोटामिया) से लोगों के प्रवसन के कारण हुआ। इन्हीं के समरूप प्रवसन के सिद्धांत के इतिहासविद् डी.एच. गार्डेन तथा मार्टीमर ह्वीलर का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार के प्रवसन के कारण हुई। इस संदर्भ में अमलानंद घोष का विचार है कि हड़प्पा सभ्यता का उद्‌भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता के परिणामस्वरूप हुआ। स्टुअर्ट पिग्गट, फेयर सर्विस, जॉर्ज एफ. डेल्स तथा रफीक मुगल आदि विद्वान स्थानीय उत्पत्ति के सिद्धांत को मान्यता देते हैं। एम. रफीक मुगल का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता का विकास रावी नदी क्षेत्र में हड़प्पा में हुआ। इन्होंने इस पुरानी मान्यता का खंडन किया है कि हड़प्पा सभ्यता ने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।

11. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए -

सूची I	**सूची II**
A. हड़प्पा	**1. एन.जी. मजूमदार (1936-37)**
B. हस्तिनापुर	**2. जॉन मार्शल (1913-34)**
C. तक्षशिला	**3. दयाराम साहनी (1923-24 तथा 1924-25)**
D. कौशाम्बी	**4. बी.बी. लाल (1950-52)**

कूट :

	A	**B**	**C**	**D**
(a)	4	2	1	3
(b)	1	3	4	2
(c)	3	4	2	1
(d)	4	1	3	2

U.P. R.O/A.R.O. (Mains) 2017

उत्तर—(c)

सूची I का सूची II से सही सुमेलन है-

सूची I	**सूची II**
हड़प्पा	दयाराम साहनी (1923-24 तथा 1924-25)
हस्तिनापुर	बी.बी. लाल (1950-52)
तक्षशिला	जॉन मार्शल (1913-34)
कौशाम्बी	एन.जी. मजूमदार (1936-37)

12. भारत में चांदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य मिलते हैं—

(a) हड़प्पा संस्कृति में

(b) पश्चिमी भारत की ताम्रपाषाण संस्कृति में

(c) वैदिक संहिताओं में

(d) चांदी के आहत सिक्कों में

I.A.S. (Pre) 1994

उत्तर—(a)

हड़प्पावासियों को चांदी की जानकारी थी। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के निवासियों के मध्य इसके विधिवत प्रयोग के साक्ष्य मिलते हैं। ये लोग मुख्यतः राजस्थान की जावर और अजमेर की खानों से चांदी प्राप्त करते थे।

13. हड़प्पा में मिट्टी के बर्तनों पर सामान्यतः किस रंग का उपयोग हुआ था?

(a) लाल (b) नीला-हरा

(c) पांडु (d) नीला

40th B.P.S.C. (Pre) 1995

उत्तर—(a)

प्रारंभिक हड़प्पा सभ्यता में पैर से चालित चाक का प्रयोग किया जाता था। सभ्यता की परिपक्व अवस्था में हाथ से चालित चाकों का प्रयोग किया जाने लगा। डिजाइन के आधार पर इन बर्तनों की दो श्रेणियां थीं–एक तो बिना डिजाइन वाले मृदभांड की तथा दूसरे चित्रित मृद्भांड की। मृद्भांडों को बनाने वाली मिट्टी में रेत का मिश्रण किया जाता था, जिनको पकाने पर यह हल्के भूरे-लाल रंग का रूप ग्रहण कर लेती थीं। इन मृद्भांडों के ऊपरी हिस्सों में लाल रंग की पुताई कर दी जाती थी तथा निचले हिस्से में काले रंग से विभिन्न प्रकार की चित्रकारी की जाती थी।

14. मूर्ति पूजा का आरंभ कब से माना जाता है?

(a) पूर्व आर्य (Pre Aryan) (b) उत्तर वैदिक काल
(c) मौर्य काल (d) कुषाण काल

U.P.P.C.S. (Pre) 1992

उत्तर–(a)

मूर्ति पूजा का प्रारंभ पूर्व आर्य काल से माना जाता है। सैंधव सभ्यता में मूर्ति पूजा प्रचलित थी, इसके उदाहरण अनेक सैंधव पुरास्थलों से प्राप्त मातृ देवी की मृण्मूर्तियां तथा मुहरों पर प्राप्त चित्र हैं।

15. निम्नलिखित पशुओं में से किस एक का हड़प्पा संस्कृति में पाई मुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण (Representation) नहीं हुआ था?

(a) गाय (b) हाथी
(c) गैंडा (d) बाघ

I.A.S. (Pre) 2001

उत्तर–(a)

हड़प्पा संस्कृति की मुहरों एवं टेराकोटा कलाकृतियों में गाय का चित्रण नहीं मिलता है, जबकि हाथी, गैंडा, बाघ, हिरण, भेड़ा आदि के अंकन मिलते हैं। गाय को महत्व वैदिक काल में प्राप्त हुआ।

16. निम्नलिखित में से कौन-सा एक हड़प्पा स्थल नहीं है?

(a) चन्हूदड़ो (b) कोटदीजी
(c) सोहगौरा (d) देसलपुर

I.A.S. (Pre) 2019

उत्तर–(c)

सोहगौरा उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में राप्ती नदी के किनारे स्थित एक गांव है। यहां से मौर्यकालीन ताम्रपत्र अभिलेख मिला है, जिसमें यहां अन्नागार होने का विवरण मिलता है। चन्हूदड़ो, कोटदीजी और देसलपुर तीनों हड़प्पा सभ्यता से जुड़े नगर थे। चन्हूदड़ो और कोटदीजी वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत में तथा देसलपुर गुजरात राज्य के कच्छ में स्थित है।

17. सूची-I (प्राचीन स्थल) को सूची-II (पुरातत्वीय खोज) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (प्राचीन स्थल)	**सूची-II (पुरातत्वीय खोज)**
A. लोथल	**1. जुता हुआ खेत**
B. कालीबंगा	**2. गोदीबाड़ा**
C. धौलावीरा	**3. पक्की मिट्टी की बनी हुई हल की प्रतिकृति**
D. बनावली	**4. हड़प्पन लिपि के बड़े आकार के दस चिह्नों वाला एक शिलालेख**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	1	4	3
(c)	1	2	4	3
(d)	2	1	3	4

I.A.S. (Pre) 2002

उत्तर–(b)

प्रश्नगत हड़प्पा सभ्यता के स्थलों में से खम्भात की खाड़ी के निकट स्थित लोथल से गोदीबाड़ा के साक्ष्य मिले हैं। राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के किनारे स्थित कालीबंगा से जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं। गुजरात के धौलावीरा से हड़प्पा लिपि के बड़े आकार के 10 चिह्नों वाला एक शिलालेख मिला है। हरियाणा के फतेहाबाद जिले में स्थित बनावली से पकी मिट्टी की बनी हुई हल की प्रतिकृति मिली है।

18. एक जुते हुए खेत की खोज की गई थी-

(a) मोहनजोदड़ो में (b) कालीबंगा में
(c) हड़प्पा में (d) लोथल में

U.P.P.C.S. (Mains) 2005

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. निम्न में से किस हड़प्पन नगर में जुते हुए खेतों के निशान मिले हैं?

(a) कालीबंगा (b) धौलावीरा
(c) मोहनजोदड़ो (d) लोथल
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

66th B.P.S.C. (Pre) 2020

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए।

सूची - I	सूची -II
A. हड़प्पा	**1. शवाधान R - 37**
B. लोथल	**2. गोदी**
C. कालीबंगा	**3. नर्तकी की मूर्ति**
D. मोहनजोदड़ो	**4. जुता हुआ खेत**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	1	4	3
(c)	3	4	1	2
(d)	1	2	4	3

U.P.P.C.S. (Mains) 2017

उत्तर—(d)

सही सुमेलन है–

हड़प्पा	शवाधान R-37
लोथल	गोदी
कालीबंगा	जुता हुआ खेत
मोहनजोदड़ो	नर्तकी की मूर्ति

21. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनिए।

सूची-I	सूची-II
A. हड़प्पा	**1. गोदावरी**
B. हस्तिनापुर	**2. रावी**
C. नागार्जुन कोंडा	**3. गंगा**
D. पैठन	**4. कृष्णा**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	3	4	1
(c)	4	3	2	1
(d)	3	4	1	2

U.P.P.C.S. (Spl.) (Mains) 2008

उत्तर—(b)

हड़प्पा- रावी, हस्तिनापुर- गंगा, नागार्जुन कोंडा- कृष्णा तथा पैठन- गोदावरी नदी से संबंधित स्थल हैं।

22. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए ।

सूची-I (हड़प्पा संस्कृति की बस्ती)	सूची-II (नदी जिस पर अवस्थित है)
A. हड़प्पा	**1. भोगवा**
B. कालीबंगा	**2. घग्गर**
C. लोथल	**3.रावी**
D. रोपड़	**4. सतलुज**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	3	2	1	4
(b)	3	4	1	2
(c)	4	2	3	1
(d)	1	3	2	4

U.P.U.D.A./L.D.A. (Mains) 2010

उत्तर—(a)

सही सुमेलन निम्न प्रकार होगा–

बस्ती		नदी
हड़प्पा	-	रावी
कालीबंगा	-	घग्गर
लोथल	-	भोगवा
रोपड़	-	सतलुज

23. हड़प्पा किस नदी के किनारे अवस्थित है?

(a) व्यास (b) सतलुज
(c) रावी (d) घग्गर

Jharkhand P.C.S. (Mains) 2016

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. सैंधव सभ्यता का महान स्नानागार कहां से प्राप्त हुआ है?

(a) मोहनजोदड़ो (b) हड़प्पा
(c) लोथल (d) कालीबंगा

U.P.P.C.S. (Pre) 1992

उत्तर—(a)

सैंधव सभ्यता के महान स्नानागार के साक्ष्य मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुए हैं। इसकी लंबाई उत्तर से दक्षिण की ओर 55 मीटर और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर 33 मीटर है।

25. 'विशाल स्नानागार' किस पुरातत्व स्थल से पाया गया था?

(a) रोपड़ (b) हड़प्पा
(c) मोहनजोदड़ो (d) कालीबंगा

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Mains) 2007
U.P.P.S.C. (GIC) 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. सिंधु घाटी की सभ्यता के किस पुरास्थल से नाव के चित्र या मॉडल प्राप्त हुए हैं?

(a) हड़प्पा एवं कोटदीजी (b) कालीबंगा और रोपड़

(c) धौलावीरा एवं भगत्राव (d) मोहनजोदड़ो एवं लोथल

U.P.P.C.S. (Pre) 2022

उत्तर—(d)

मोहनजोदड़ो तथा लोथल से नाव के चित्र युक्त मुहरें प्राप्त हुई हैं।

27. सिंधु सभ्यता के बारे में निम्न में से कौन-सा कथन असत्य है?

(a) नगरों में नालियों की सुदृढ़ व्यवस्था थी।

(b) व्यापार और वाणिज्य उन्नत दशा में था।

(c) मातृदेवी की उपासना की जाती थी।

(d) लोग लोहे से परिचित थे।

U.P.P.C.S. (Pre) 1992

उत्तर—(d)

सैंधव सभ्यता कांस्ययुगीन सभ्यता थी तथा यहां के लोग लोहे से परिचित नहीं थे, जबकि सैंधव नगरों में नालियों की सुदृढ़ व्यवस्था थी और व्यापार एवं वाणिज्य उन्नत दशा में था। मातृदेवी की उपासना के अनेक साक्ष्य सैंधव नगरों से मिलते हैं, जिससे प्रमाणित होता है कि मातृदेवी की उपासना की जाती रही होगी।

28. हड़प्पा सभ्यता की खुदाई में मिले अवशेषों के आधार पर क्या सही नहीं

(i) सभी तरह के निर्माण कार्य के लिए एक आकार की ईंट का उपयोग किया जाता था।

(ii) मुख्यतः सभी घर एक मंजिला ही बनाए जाते थे।

(iii) मुख्य सड़कें औसतन दस मीटर चौड़ी होती थीं

(a) (i) और (ii) (b) (ii) और (iii)

(c) (i) और (iii) (d) (i), (ii) और (iii)

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2022

उत्तर—(a)

सैंधव सभ्यता में पक्की एवं कच्ची दोनों प्रकार की ईंटों का प्रयोग किया जाता था। सभी सैंधव नगरों से प्राप्त पक्की ईंटों का सामान्यतः अनुपात 4 : 2 : 1 था, जबकि कालीबंगन से अलंकृत ईंटों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं तो वहीं चन्हूदड़ों से वक्राकार ईंटों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं अतः सैंधव सभ्यता में सभी तरह के निर्माण के लिए एक आकार की ईंटों का प्रयोग नहीं होता था। अतः कथन (i) गलत है। सैंधव सभ्यता में निर्मित घर एक मंजिला ही बनाए जाते थे, परंतु कुछ भवनों से मिली सीढ़ियों के साक्ष्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कुछ घर दो मंजिला भी निर्मित थे। अतः कथन (ii) भी गलत है। सैंधव सभ्यता से प्राप्त मुख्य सड़कों की औसतन चौड़ाई लगभग 10 मीटर होती थी। इस प्रकार कथन (iii) सत्य है।

29. सिंधु घाटी सभ्यता जानी जाती है—

(1) अपने नगर नियोजन के लिए

(2) मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के लिए

(3) अपने कृषि संबंधी कार्य के लिए एवं

(4) अपने उद्योगों के लिए

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

कूट :

(a) 1 और 2 (b) 1, 2 और 3

(c) 2, 3 और 4 (d) उपर्युक्त सभी

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Pre) 2003

उत्तर—(d)

सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषता नगर नियोजन को माना जाता है। साथ ही हड़प्पा और मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख नगर थे। हड़प्पा नामक पुरास्थल सर्वप्रथम ज्ञात होने के कारण इसको 'हड़प्पा सभ्यता' के नाम से भी जाना जाता है। कालीबंगा से कृषि संबंधी साक्ष्य तथा अनेक सैंधव स्थलों से ईंट के भट्ठे, मनका निर्माण के कारखाने आदि उद्योग संबंधी साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार सभी चारों कथन सही हैं।

30. निम्नांकित में किसका सुमेल नहीं है?

(a) आलमगीरपुर – उत्तर प्रदेश

(b) लोथल – गुजरात

(c) कालीबंगा – हरियाणा

(d) रोपड़ – पंजाब

U.P.P.C.S. (Pre) 1996

उत्तर—(c)

कालीबंगा, राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित है। कालीबंगा की खोज इटली के लुइगी पिओ तेस्सीटोरी ने की; जबकि हडप्पा स्थल के रूप में पहचान अमलानंद घोष ने की थी। अन्य तीनों विकल्प सुमेलित हैं।

31. निम्न में से सिंधु सभ्यता से संबंधित कौन-से केंद्र उत्तर प्रदेश में स्थित हैं?

नीचे दिए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—

I. कालीबंगा II. लोथल

III. आलमगीरपुर IV. हुलास

कूट :

(a) I, II, III, IV (b) I, II

(c) II, III (d) III, IV

U.P.P.C.S. (Pre) 2018

उत्तर—(d)

कालीबंगा राजस्थान में तथा लोथल गुजरात में स्थित है। आलमगीरपुर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में तथा हुलास सहारनपुर जिले में स्थित है। अतः स्पष्ट है कि इसका अभीष्ट उत्तर विकल्प (d) है।

32. निम्नलिखित में से कौन-सा हड़प्पाकालीन स्थल गुजरात में है?

(a) लोथल (b) डाबरकोट

(c) कालीबंगा (d) राखीगढ़ी

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

67th B.P.S.C. (Pre) 2022

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. हड़प्पा संस्कृति के स्थल एवं उनकी स्थिति संबंधी निम्नलिखित युग्मों में से कौन एक सही सुमेलित नहीं है?

(a) आलमगीरपुर-उत्तर प्रदेश (b) बनावली-हरियाणा

(c) दैमाबाद-महाराष्ट्र (d) राखीगढ़ी-राजस्थान

U.P. U.D.A./L.D.A. (Pre) 2006

उत्तर—(d)

राखीगढ़ी, हरियाणा के हिसार जिले में घग्गर नदी तट पर स्थित है। अन्य युग्म सुमेलित हैं।

34. निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा संस्कृति के पूर्वी सीमांत का निर्धारण करता है?

(a) माण्डा (b) हड़प्पा

(c) आलमगीरपुर (d) राखीगढ़ी

U.P.P.C.S. (Pre) 2023

उत्तर—(c)

हड़प्पा सभ्यता का सर्वाधिक पश्चिमी पुरास्थल सुत्कागेनडोर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान), पूर्वी पुरास्थल आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश), उत्तरी पुरास्थल माण्डा (जम्मू एवं कश्मीर) तथा दक्षिणी पुरास्थल दैमाबाद (महाराष्ट्र) है।

35. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची-I (हड़प्पीय स्थल)	**सूची-II (स्थिति)**
A. मांडा	**1. राजस्थान**
B. दैमाबाद	**2. हरियाणा**
C. कालीबंगा	**3. जम्मू-कश्मीर**
D. राखीगढ़ी	**4. महाराष्ट्र**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	3	4	1
(c)	3	4	1	2
(d)	4	1	2	3

U.P.P.C.S. (Pre) 2012

उत्तर—(c)

विकल्प में दिए गए हड़प्पीय स्थल एवं उनकी अवस्थिति से संबंधित राज्यों का सुमेलन निम्नानुसार है—

हड़प्पीय स्थल	**स्थिति**
मांडा	जम्मू-कश्मीर
दैमाबाद	महाराष्ट्र
कालीबंगा	राजस्थान
राखीगढ़ी	हरियाणा

36. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए -

सूची - I (हड़प्पा पुरास्थल)	**सूची - II (भारत के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र)**
A. बालू	**1. उत्तर प्रदेश**
B. मांडा	**2. जम्मू एवं कश्मीर**
C. पाडरी	**3. हरियाणा**
D. हुलास	**4. गुजरात**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	3	2	1	4
(b)	2	3	4	1
(c)	2	4	3	1
(d)	3	2	4	1

U.P.P.C.S. (Pre) 2020

उत्तर—(d)

सही सुमेलन इस प्रकार है -

सूची - I (हड़प्पा पुरास्थल)	**सूची - II (भारत के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र)**
बालू	हरियाणा
मांडा	जम्मू एवं कश्मीर
पाडरी	गुजरात
हुलास	उत्तर प्रदेश

37. हड़प्पा संस्कृति के निम्नलिखित स्थलों में कौन सिंध में अवस्थित है?

1. हड़प्पा **2. मोहनजोदड़ो**

3. चन्हूदड़ो **4. सुरकोटडा**

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर निर्दिष्ट कीजिए ।

कूट :

(a) 1 एवं 2 (b) 2 एवं 3

(c) 2, 3 एवं 4 (d) 1, 2, 3 एवं 4

U.P.P.S.C. (GIC) 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त विकल्पों में हड़प्पा, पाकिस्तान के पंजाब में; मोहनजोदड़ो तथा चन्हूदड़ो दोनों सिंध प्रांत में तथा सुरकोटडा, गुजरात में स्थित है।

38. मोहनजोदड़ो निम्नलिखित में से कहां पर स्थित है?

(a) भारत के गुजरात राज्य में (b) भारत के पंजाब राज्य में
(c) पाकिस्तान के सिंध प्रांत में (d) अफगानिस्तान में

M.P. P.C.S. (Pre) 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. चन्हूदड़ो के उत्खनन का निर्देशन किया था—

(a) जे.एच. मैके ने
(b) सर जॉन मार्शल ने
(c) आइ.ई.एम. ह्वीलर ने
(d) सर आरेल स्टीन ने

U.P. Lower Sub. (Pre) 2015

उत्तर—(a)

मोहनजोदड़ो से लगभग 130 किमी. दक्षिण में स्थित चन्हूदड़ो की खोज सर्वप्रथम वर्ष 1931 में एन.जी. मजूमदार ने किया तथा वर्ष 1935-36 में मैके ने यहां उत्खनन करवाया।

40. सिंधु घाटी सभ्यता का कौन-सा स्थान अब पाकिस्तान में है?

(a) कालीबंगा (b) हड़प्पा
(c) लोथल (d) आलमगीरपुर

U.P.P.C.S. (Spl.) (Pre) 1994

उत्तर—(b)

हड़प्पा के अवशेष आधुनिक पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के साहीवाल जिले में स्थित हैं। यह स्थल रावी नदी के तट पर स्थित था, जबकि कालीबंगा, राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में; लोथल, गुजरात प्रांत के अहमदाबाद जिले में तथा आलमगीरपुर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित है।

41. रंगपुर जहां हड़प्पा की समकालीन सभ्यता थी, है—

(a) पंजाब में (b) पूर्वी उत्तर प्रदेश में
(c) सौराष्ट्र में (d) राजस्थान में

R.A.S./R.T.S. (Pre) 1999

उत्तर—(c)

रंगपुर, गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित है। यहां से प्राक्-हड़प्पा, हड़प्पा और उत्तर-हड़प्पाकालीन सभ्यता के साक्ष्य मिले हैं।

42. दधेरी एक परवर्ती हड़प्पीय पुरास्थल है—

(a) जम्मू का (b) पंजाब का
(c) हरियाणा का (d) उत्तर प्रदेश का

U.P.P.C.S. (Mains) 2014

उत्तर—(b)

दधेरी (कोटला दधेरी) एक परवर्ती हड़प्पीय पुरास्थल है, जो भारत के पंजाब प्रांत के फतेहगढ़ साहिब जिले में गोविंदगढ़ के पास स्थित है।

43. सिंधु सभ्यता का कौन-सा स्थान भारत में स्थित है?

(a) हड़प्पा (b) मोहनजोदड़ो
(c) लोथल (d) इनमें से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Pre) 1995

उत्तर—(c)

सिंधु सभ्यता से संबंधित लोथल नामक पुरास्थल गुजरात के अहमदाबाद जिले में भोगवा नामक नदी के तट पर सरगवल गांव के समीप स्थित है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो पाकिस्तान में स्थित हैं।

44 वह हड़प्पीय नगर, जिसका प्रतिनिधित्व लोथल का पुरातत्व स्थल करता है, किस नदी पर स्थित था?

(a) नर्मदा (b) माही
(c) भोगवा (d) भीमा

U.P. P.C.S. (Mains) 2012

उत्तर—(c)

हड़प्पीय नगर 'लोथल' गुजरात के अहमदाबाद जिले में भोगवा नदी के किनारे स्थित है। यहां की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि हड़प्पाकालीन बंदरगाह (पत्तन नगर) है।

45. हड़प्पा सभ्यता स्थल लोथल, स्थित है—

(a) गुजरात में (b) पंजाब में
(c) राजस्थान में (d) सिंध में

U.P.P.C.S. (Mains) 2009
Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. सिंधु घाटी सभ्यता का पत्तन नगर था—

(a) हड़प्पा (b) कालीबंगा
(c) लोथल (d) मोहनजोदड़ो

U.P.P.C.S. (Pre) 1999

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. निम्नलिखित में से कौन-सा एक हड़प्पा का बंदरगाह है?

(a) सिकंदरिया (b) लोथल
(c) महास्थानगढ़ (d) नागपट्टनम

53rd to 55th B.P.S.C. (Pre) 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता क्या है?

(a) पक्की ईंट से बनी इमारत
(b) प्रथम असली मेहराब
(c) पूजा-स्थल
(d) कला और वास्तुकला
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

63rd B.P.S.C (Pre.) 2017

उत्तर—(e)

सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीनतम नगरीय सभ्यता थी। पक्की ईंटों से निर्मित इमारतें, सुनियोजित वास्तुकला, उन्नत व्यापार व वाणिज्य जैसी इस सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं थीं। ध्यातव्य है कि मेसोपोटामिया एवं मिस्र आदि प्राचीन सभ्यताओं की भांति हड़प्पा सभ्यता में पूजा स्थलों के स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिलते हैं। इसी प्रकार भारत में प्रथम असली मेहराब का उदाहरण बलबन के मकबरे में दिखता है। अत: विकल्प (e) सही उत्तर है।

49. निम्नलिखित में से किस सिंधु घाटी स्थल पर, हल की खोज संबंधित टेराकोटा की प्रतिकृति मिली?

(a) धौलावीरा (b) कालीबंगन
(c) राखीगढ़ी (d) बनावली

Jharkhand P.C.S. (Pre) 2023

उत्तर—(*)

प्रश्नगत विकल्पों में, बनावली (हरियाणा) तथा कालीबंगन (राजस्थान) नामक सिंधु घाटी स्थल से हल की खोज से संबंधित टेराकोटा की प्रतिकृति प्राप्त हुई है। आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार, कालीबंगन नामक स्थल के आरंभिक चरण से जुते हुए खेत के साथ-साथ टेराकोटा हल की प्राप्ति हुई है। इसके अतिरिक्त हरियाणा के फतेहाबाद जिले में अवस्थित बनावली नामक पुरास्थल से भी टेराकोटा हल की प्राप्ति हुई है।

50. निम्न में से किस हड़प्पाकालीन स्थल से 'हल' का टेराकोटा प्राप्त हुआ?

(a) धौलावीरा (b) बनावली
(c) कालीबंगा (d) लोथल
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/ उपर्युक्त में से एक से अधिक

60th to 62nd B.P.S.C. (Pre) 2016

उत्तर—(e)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. निम्नलिखित में से कौन-सा सिंधु घाटी की सभ्यता से संबंधित स्थल नहीं है?

(a) कालीबंगा (b) रोपड़
(c) पाटलिपुत्र (d) लोथल

M.P.P.C.S. (Pre) 2013

उत्तर—(c)

कालीबंगा, रोपड़ तथा लोथल सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित स्थल हैं, जबकि पाटलिपुत्र सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित स्थल नहीं है।

52. भारत में हड़प्पा का वृहद स्थल है-

(a) राखीगढ़ी (b) धौलावीरा
(c) कालीबंगा (d) लोथल

Jharkhand P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर—(a)

हरियाणा के हिसार जिले में अवस्थित राखीगढ़ी हड़प्पा सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और गनवेरीवाला (पाकिस्तान) तथा राखीगढ़ी एवं धौलावीरा (भारत) हड़प्पा सभ्यता के पांच वृहद स्थलों की श्रेणी में आते हैं।

53. भारत का सबसे बड़ा हड़प्पन पुरास्थल है—

(a) आलमगीरपुर (b) कालीबंगा
(c) लोथल (d) राखीगढ़ी

U.P.P.C.S. (Spl.) (Mains) 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

54. स्थापित सिंधु घाटी सभ्यता जिन नदियों के तट पर बसी थी, वे थीं

1. सिंधु **2. चेनाब**
3. झेलम **4. गंगा**

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए ।

कूट :

(a) 1 और 2 (b) 1, 2 और 3
(c) 2, 3 और 4 (d) सभी चारों

U.P.P.C.S. (Pre) 2009

उत्तर—(b)

प्रश्नगत विकल्पों में सिंधु घाटी सभ्यता झेलम, सिंधु तथा चिनाब नदी के तट पर बसी थी; परंतु गंगा नदी इसमें शामिल नहीं है।

55. सिंधु घाटी के लोग विश्वास करते थे—

(a) आत्मा और ब्रह्म में
(b) कर्मकांड में
(c) यज्ञ प्रणाली में
(d) मातृ शक्ति में

R.A.S./R.T.S. (Pre) 1993

उत्तर—(*)

सिंधु सभ्यता की लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है, इस कारण उन लोगों के धार्मिक विश्वास के बारे में निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। उत्खनन में प्राप्त स्त्री मूर्तियों की बहुलता से मातृ शक्ति की उपासना का अनुमान लगाया जाता है। पुरुष आकृतियों से शिव की पूजा अनुमानित होती है, अग्निकुंड या यज्ञ वेदिकाएं भी प्राप्त हुई हैं। मृतकों के साथ दैनिक उपयोग की वस्तुओं के दफनाने से आत्मा में विश्वास का भी अनुमान लगाया जाता है। फिर भी कई विद्वान इन्हें मुख्यतः मातृ शक्ति का उपासक मानते हैं, लेकिन निश्चित तौर पर इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता है।

56. सिंधु घाटी के लोग पूजा करते थे–

(a) पशुपति की (b) इंद्र और वरुण की

(c) ब्रह्मा की (d) विष्णु की

Uttarakhand P.C.S. (Mains) 2006

उत्तर–(a)

सिंधु घाटी के लोग पशुपति शिव की पूजा भी करते थे। इसका प्रमाण मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर है, जिस पर योगी की आकृति बनी है।

57. मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की पुरातात्विक खुदाई के प्रभारी थे–

(a) लॉर्ड मैकाले (b) सर जॉन मार्शल

(c) क्लाइव (d) कर्नल टाड

R.A.S./R.T.S. (Pre) 1997

उत्तर–(b)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल के निर्देश पर वर्ष 1921 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा तथा वर्ष 1922 में राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो का उत्खनन प्रारंभ कराया था। हड़प्पा के टीले के विषय में सर्वप्रथम जानकारी चार्ल्स मेंसन ने 1826 ई. में दिया था।

58. सिंधु घाटी सभ्यता को खोज निकालने में जिन दो भारतीयों का नाम जुड़ा है, वे हैं–

(a) राखालदास बनर्जी तथा दयाराम साहनी

(b) जॉन मार्शल तथा ईश्वरी प्रसाद

(c) आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव तथा रंगनाथ राव

(d) माधोस्वरूप वत्स तथा वी. बी. राव

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2003

उत्तर–(a)

प्रश्नानुसार, सिंधु घाटी सभ्यता को खोज निकालने में राखालदास बनर्जी तथा दयाराम साहनी नामक दो भारतीयों का नाम जुड़ा है।

59. निम्नलिखित में से कौन सुमेलित नहीं है?

(a) हड़प्पा - दयाराम साहनी

(b) लोथल - एस.आर. राव

(c) सुरकोटडा - जे.पी. जोशी

(d) धौलावीरा - बी.के. थापड़

U.P.P.C.S. (Mains) 2006

उत्तर–(d)

हड़प्पा का उत्खनन दयाराम साहनी, लोथल का उत्खनन एस.आर. राव तथा सुरकोटडा का उत्खनन जे.पी. जोशी ने कराया था, जबकि धौलावीरा का उत्खनन बी.के. थापड़ ने नहीं, बल्कि आर.एस. बिष्ट ने कराया था। अतः विकल्प (d) सुमेलित नहीं है।

60. हड़प्पा का उत्खनन करने वाला प्रथम पुरातत्वविद, जो इसके महत्व को नहीं समझ पाया था–

(a) ए. कनिंघम (b) सर जॉन मार्शल

(c) मार्टिमर ह्वीलर (d) जॉर्ज एफ.डेल्स

U.P.P.C.S. (Mains) 2006

उत्तर–(a)

ए. कनिंघम महोदय ने भारतीय उपमहाद्वीप के ऐतिहासिक महत्व के हड़प्पा के टीलों का सीमित उत्खनन करार कुछ पुरावस्तुएं प्राप्त की थी; किंतु वह हड़प्पा के टीलों के महत्व को नहीं समझ सके थे।

61. निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के उत्खनन से संबंधित नहीं थे?

(a) आर.डी. बनर्जी (b) के.एन. दीक्षित

(c) एम.एस. वत्स (d) वी.ए. स्मिथ

56th to 59th B.P.S.C. (Pre) 2015

उत्तर–(d)

वर्ष 1921 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा का बृहद स्तर पर उत्खनन प्रारंभ कराया। वर्ष 1926-27 से 1933-34 तक में माधोसरूप वत्स हड़प्पा के उत्खनन से संबंधित रहे। मोहनजोदड़ो की खोज सर्वप्रथम वर्ष 1922 में राखालदास बनर्जी ने की तथा इसके पुरातात्विक महत्व की ओर ध्यान आकर्षित किया। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य विद्वानों के. एन. दीक्षित, अर्नेस्ट मैके, आरेल स्टीन, ए. घोष, जे.पी. जोशी आदि ने भी इस सभ्यता की खोज में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अतः स्पष्ट है कि वी.ए. स्मिथ हड़प्पा सभ्यता की खोज से संबंधित नहीं रहे, बल्कि ये एक आयरिश इंडोलॉजिस्ट एवं इतिहासकार के रूप में प्रसिद्ध थे।

62. निम्नलिखित में से किसके द्वारा 'सुरकोटदा' नामक हड़प्पा संस्कृति के स्थल की खोज की गई थी?

(a) बी.बी. लाल (b) एस.आर. राव

(c) वाई.डी. शर्मा (d) जगतपति जोशी

(e) अनुत्तरित प्रश्न

Raj.P.C.S. (Pre) 2023

उत्तर–(d)

'सुरकोटदा' गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है। सुरकोटडा नामक हड़प्पा संस्कृति के स्थल की खोज एवं उत्खनन जगतपति जोशी (जे. पी. जोशी) ने किया था।

63. सिंधु सभ्यता की विकसित अवस्था में निम्नलिखित में से किस स्थल से घरों में कुओं के अवशेष मिले हैं?

(a) हड़प्पा (b) कालीबंगा
(c) लोथल (d) मोहनजोदड़ो

U.P.P.C.S. (Pre) 2004

उत्तर—(*)

जय नारायण पाण्डेय की पुस्तक 'पुरातत्व विमर्श' के पृष्ठ संख्या 386 (2020 संस्करण) के अनुसार, सिंधु सभ्यता के अधिकांश नगरों के लगभग प्रत्येक घर में निजी कुएं एवं स्नानागार होते थे और पानी के निकास के लिए नालियों की व्यवस्था थी। रामशरण शर्मा की पुस्तक प्राचीन भारत का इतिहास के पृष्ठ संख्या 78 के अनुसार, कालीबंगा के प्रायः सभी घरों में कुएं थे।

64. भारत में निम्नलिखित के आने का सही कालानुक्रम क्या है?

1. सोने के सिक्के 2. आहत मुद्रा चांदी के सिक्के
3. लोहे का हल 4. नगर संस्कृति

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

कूट :

(a)	3	4	1	2
(b)	3	4	2	1
(c)	4	3	1	2
(d)	4	3	2	1

I.A.S. (Pre) 1998

उत्तर—(d)

भारत में सबसे प्राचीन सभ्यता 'हड़प्पा सभ्यता' अपनी नगर योजना के लिए विख्यात है। हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना की आधार सामग्री मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, चन्हूदड़ो, कालीबंगा, लोथल, सुरकोटडा तथा बनावली से प्राप्त होती है। सिंधु घाटी की सभ्यता कांस्यकालीन है। लोहे का ज्ञान कांसे के बाद वैदिक काल के दौरान लगभग 1000 ई.पू. में हुआ। भारत में सबसे प्राचीन सिक्के आहत मुद्रा के रूप में लगभग सातवीं-छठी शताब्दी ई.पू. में अस्तित्व में आएं। सबसे पहले भारत में सोने के सिक्के हिंद-यवन शासकों (द्वितीय शताब्दी ई.पू.) ने जारी किए।

65. सर्वप्रथम मानव ने निम्न धातु का उपयोग किया -

(a) सोना (b) चांदी
(c) तांबा (d) लोहा

R.A.S./R.T.S. (Pre) 2012

उत्तर—(c)

सर्वप्रथम मानव द्वारा तांबा धातु का प्रयोग किया गया। विश्व के विभिन्न भागों में इसके प्रयोग की तिथि में पर्याप्त अंतर है।

66. हाथी दांत का पैमाना हड़प्पीय संदर्भ में मिला है—

(a) कालीबंगा में (b) लोथल में
(c) धौलावीरा में (d) बनावली में

U.P.R.O./A.R.O. (Mains) 2014

उत्तर—(b)

हड़प्पा सभ्यता भारत की प्राचीनतम सभ्यता थी। हड़प्पायी संदर्भ में हाथी दांत का पैमाना लोथल से मिला है। यह गुजरात में स्थित है।

67. हड़प्पाकालीन स्थलों में अभी तक किस धातु की प्राप्ति नहीं हुई है?

(a) तांबा (b) स्वर्ण
(c) चांदी (d) लोहा

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2011

उत्तर—(d)

हड़प्पा सभ्यता एक कांस्ययुगीन सभ्यता थी। यहां से तांबा, कांसा, स्वर्ण और चांदी आदि धातुएं तो मिली हैं; परंतु लोहे की प्राप्ति नहीं हुई है। वस्तुतः हड़प्पा कालीन लोग लोहे से परिचित नहीं थे। भारत में लौह युग का प्रारंभ उत्तर वैदिक काल (लगभग 1000 ई.पू.) से माना जाता है।

68. निम्न में से कौन-सा स्थल घग्गर और उसकी सहायक नदियों की घाटी में स्थित है?

(a) आलमगीरपुर (b) लोथल
(c) मोहनजोदड़ो (d) बनावली

R.A.S./R.T.S. (Pre) 2010

उत्तर—(d)

हरियाणा में स्थित बनावली नामक हड़प्पायी स्थल घग्गर एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित घाटी में स्थित है।

69. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए एवं नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए ।

1. मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, रोपड़ एवं कालीबंगा सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल हैं।
2. हड़प्पा के लोगों ने सड़कों तथा नालियों के जाल के साथ नियोजित शहरों का विकास किया।
3. हड़प्पा के लोगों को धातुओं के उपयोग का पता नहीं था।

कूट :

(a) 1 एवं 2 सही हैं। (b) 1 एवं 3 सही हैं।
(c) 2 एवं 3 सही हैं। (d) 1, 2 एवं 3 सही हैं।

M.P.P.C.S. (Pre) 2008

उत्तर—(a)

हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, रोपड़, लोथल एवं कालीबंगा सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल हैं। सैंधव सभ्यता में सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती (ऑक्सफोर्ड सर्कस) थीं। सड़कों के दोनों किनारों पर पक्की नालियां बनाई जाती थीं, जिन्हें बड़ी ईंटों अथवा पत्थर के टुकड़ों से ढका जाता था। इस समय सोने तथा चांदी के आभूषण बनाए जाते थे। तांबे के साथ टिन मिलाकर कांसा तैयार किया जाता था।

70. कथन (A) : मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा नगर अब विलुप्त हो गए हैं।

कारण (R) : वह खुदाई के दौरान प्रकट हुए थे।

उपर्युक्त के संदर्भ में निम्न में से कौन एक सही है?

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R) सही स्पष्टीकरण है (A) का।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं; किंतु (R) सही स्पष्टीकरण नहीं है (A) का।

(c) (A) सही है; किंतु (R) गलत है।

(d) (A) गलत है; किंतु (R) सही है।

U.P.P.C.S. (Pre) 2009

उत्तर—(b)

मोहनजोदड़ो (वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाएं तट पर) तथा हड़प्पा [वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के साहीवाल जिले में रावी नदी के बाएं तट पर] नगर सैंधव सभ्यता के दो प्रमुख नगर थे, जिनका उत्खनन क्रमशः राखालदास बनर्जी तथा दयाराम साहनी ने प्रारंभ कराया था। वर्तमान में ये नगर मृतप्राय स्थिति में हैं। इस प्रकार कथन और कारण दोनों सही हैं; किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

71. हड़प्पन संस्कृति के संदर्भ में शैलकृत स्थापत्य के प्रमाण कहां से मिले हैं?

(a) कालीबंगा (b) धौलावीरा

(c) कोटदीजी (d) आमरी

U.P.P.C.S. (Pre) 2006

उत्तर—(b)

धौलावीरा हड़प्पा सभ्यता की भारत में स्थित दूसरी सबसे बड़ी (प्रथम राखीगढ़ी) बस्ती है। यह गुजरात के कच्छ के रन में अवस्थित है। यहां से उत्खनन के परिणामस्वरूप हड़प्पा सभ्यता की अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की गईं। इन खोजों में **शैलकृत जलकुंड** (Rock-cut Reservoir) महत्वपूर्ण हैं।

72. धौलावीरा जिस राज्य में स्थित है, वह है—

(a) गुजरात (b) हरियाणा

(c) पंजाब (d) राजस्थान

U.P.P.C.S. (Mains) 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

73. कौन-सा हड़प्पीय (Harappan) नगर तीन भागों में विभक्त है?

(a) लोथल (b) कालीबंगा

(c) धौलावीरा (d) सुरकोटडा

U.P.R.O./A.R.O. (Mains) 2013

उत्तर—(c)

धौलावीरा नगर को तीन भागों-किला, मध्य नगर एवं निचला नगर में विभाजित किया गया था।

74. निम्नलिखित में से कौन-से स्थल में तीन नगरों के अवशेष प्राप्त हुए हैं?

(a) मोहनजोदड़ो (b) संघोल

(c) कालीबंगा (d) धौलावीरा

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

75. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन नगर अपने उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली के लिए सुप्रसिद्ध है, जहां बांधों की शृंखला का निर्माण किया गया था और संबद्ध जलाशयों में नहर के माध्यम से जल को प्रवाहित किया जाता था?

(a) धौलावीरा (b) कालीबंगा

(c) राखीगढ़ी (d) रोपड़

I.A.S. (Pre) 2021

उत्तर—(a)

'धौलावीरा' नामक प्रमुख हड़प्पाई पुरास्थल गुजरात राज्य के कच्छ जनपद में स्थित है। धौलावीरा नियोजित नगर का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। धौलावीरा नगर में अत्यंत नियोजित ढंग से अलग-अलग नगरीय आवासीय क्षेत्र विकसित किए गए थे, जो संभवतः विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों और एक वर्गीकृत समाज पर आधारित थे। यह प्राचीन नगर अपने उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली के लिए सुप्रसिद्ध है, यहां पर बांधों की शृंखलाओं का निर्माण किया गया था तथा संबद्ध जलाशयों में नहर के माध्यम से जल को प्रवाहित किया जाता था। यहां से जल संचयन प्रणालियों तथा जल निकासी प्रणालियों के साथ-साथ वास्तुशिल्प एवं तकनीकी रूप से विकसित सुविधाओं में नजर आने वाली उत्कृष्ट तकनीकी प्रगति, स्थानीय सामग्री की डिजाइन, कार्यान्वयन और प्रभावकारी उपयोग में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

76. एक उन्नत जल-प्रबंधन व्यवस्था का साक्ष्य प्राप्त हुआ है—

(a) आलमगीरपुर से (b) धौलावीरा से

(c) कालीबंगा से (d) लोथल से

U.P.P.C.S. (Mains) 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

77. निम्नलिखित में से किस स्थल से द्वि-शव संस्कार (डबल बरिअल) का प्रमाण मिला है?

(a) कुंतासी (b) धौलावीरा

(c) लोथल (d) कालीबंगा

U.P.P.C.S (Mains) 2016

उत्तर—(*)

लोथल से सर्वाधिक तीन द्वि-शव समाधीकरण के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। कालीबंगा से भी एक युगल समाधीकरण का प्रमाण मिला है। राखीगढ़ी से भी युगल समाधि प्राप्त हुई है। यदि संख्या को आधार माना जाए, तो सही उत्तर विकल्प (c) होगा; किंतु यदि प्रमाण को आधार माना जाए, तो सही उत्तर विकल्प (c) एवं (d) दोनों होंगे।

78. हड़प्पन स्थल सनौली के अभी हाल में उत्खननों से प्राप्त हुए हैं—

(a) मानव शवाधान (b) पशुओं के शवाधान

(c) आवासीय भवन (d) रक्षा दीवार

U.P. Lower (Sub.) (Pre) 2004

उत्तर—(a)

उ.प्र. के बागपत जिले में बारौत तहसील के सनौली नामक हड़प्पन पुरास्थल से क्रमबद्ध रूप से 125 मानव शवाधान प्राप्त हुए हैं, जिनकी दिशा उत्तर से दक्षिण है। इन शवाधानों के साथ दैनिक उपयोग की वस्तुएं भी मिली हैं, जिनमें गहने प्रमुख हैं। इनके साथ ही कुछ जानवरों की हड्डियां भी प्राप्त हुई हैं।

79. हड़प्पा सभ्यता का स्थल मांडी, भारत के किस राज्य में स्थित है?

(a) गुजरात (b) हरियाणा

(c) राजस्थान (d) उत्तर प्रदेश

U.P.P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर—(d)

जून, 2000 में उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले का एक गांव मांडी अचानक चर्चा में आ गया था। बघरा ब्लॉक में स्थित मांडी गांव में एक खेत में खुदाई के दौरान प्राचीन आभूषण, सिक्के, बर्तन आदि मिले थे। इसे हड़प्पा सभ्यता से जोड़कर देखा गया था।

80. वस्त्रों के लिए कपास की खेती का आरंभ सबसे पहले किया गया-

(a) मिस्र में (b) मेसोपोटामिया में

(c) मध्य अमेरिका में (d) भारत में

U.P.P.C.S. (Pre) 2006

उत्तर—(d)

वस्त्रों के लिए कपास की खेती का प्रारंभ सर्वप्रथम भारत में किया गया। वर्ष 1922 में राखालदास बनर्जी के नेतृत्व में सिंधु नदी के किनारे स्थित मोहनजोदड़ो (वर्तमान पाकिस्तान के लरकाना जिले में स्थित) उत्खनन से कपास के सूत की प्राप्ति की गई थी।

81. निम्नलिखित में से कौन-सा/से लक्षण सिंधु सभ्यता के लोगों का सही चित्रण करता है/करते हैं?

1. उनके विशाल महल और मंदिर होते थे।

2. वे देवियों और देवताओं, दोनों की पूजा करते थे।

3. वे युद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे गए रथों का प्रयोग करते थे।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही कथन/कथनों को चुनिए।

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2

(c) 1, 2 और 3

(d) उपर्युक्त कथनों में से कोई भी सही नहीं है।

I.A.S. (Pre) 2013

उत्तर—(b)

वर्तमान तक सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों की खुदाई में किसी मंदिर अथवा पूजा स्थल के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं। अतः इस सभ्यता के धार्मिक जीवन का एकमात्र स्रोत यहां पाई गई मिट्टी और पत्थर की मूर्तियां एवं मुहरें हैं। इनसे यह ज्ञात होता है कि यहां मातृदेवी, पशुपति शिव तथा लिंग एवं योनि की पूजा और पीपल, नीम आदि पेड़ों एवं नाग आदि जीव-जंतुओं की उपासना प्रचलित थी। पशुओं में हाथी, बाघ, भैंसा, गैंडा और घड़ियाल के चित्र मिले हैं, लेकिन घोड़े के चित्र का अभाव है। हालांकि घोड़े की अस्थियां, घोड़े की मृण्मूर्ति लोथल, सुरकोटडा एवं कालीबंगा इत्यादि स्थलों से प्राप्त हुई हैं, फिर भी घोड़े का उपयोग युद्ध के रथ को खींचने में किया जाता था, ऐसे साक्ष्य का अभाव है। अतः विकल्प (b) उचित उत्तर है।

82. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए ।

1. यह प्रमुखतः लौकिक सभ्यता थी तथा उसमें धार्मिक तत्व, यद्यपि उपस्थित था, वर्चस्वशाली नहीं था।

2. उस काल में भारत में कपास से वस्त्र बनाए जाते थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

I.A.S. (Pre) 2011

M.P.P.C.S. (Pre) 2012

उत्तर—(c)

सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में सामान्यत: माना जाता है कि यह प्रधानतया लौकिक सभ्यता थी। इसमें धार्मिक तत्व यद्यपि उपस्थित थे; किंतु वर्चस्वशाली नहीं थे। सिंधु सभ्यता में अनेक स्थलों से कपास के रेशों से निर्मित वस्त्र के साक्ष्य मिले हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि वहां के लोग इसका निर्माण करते थे।

83. निम्न स्थानों पर किस एक स्थान पर सिंधु घाटी सभ्यता से संबद्ध विख्यात वृषभ-मुद्रा प्राप्त हुई थी?

(a) हड़प्पा (b) चन्हूदड़ो

(c) लोथल (d) मोहनजोदड़ो

R.A.S./R.T.S. (Pre) 2008

उत्तर—(d)

मोहनजोदड़ो से प्राप्त कूबड़ वाले बैल की आकृति युक्त मुहर की कलात्मकता की भूरि-भूरि प्रशंसा मार्शल महोदय ने की है। इसमें बैल के अंगों में उभार और शरीर के अनुपात में जो विशिष्टता दिखाई गई है, वह अपूर्व है।

84. सिंधु सभ्यता से प्राप्त मुहरों में कौन-से वृक्ष की आकृति मिलती है?

(a) आम (b) पीपल

(c) पारिजात (d) साल

M.P.P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर—(b)

सिंधु सभ्यता काल में सर्वाधिक मुहरें सेलखड़ी की बनी हैं। इसके अतिरिक्त कांचली मिट्टी, चर्ट, गोमेद आदि से बनी मुहरें भी प्राप्त हुई हैं। अधिकांश मुहरें वर्गाकार या चौकोर हैं; किंतु कुछ मुहरें घनाकार, गोलाकार अथवा बेलनाकार भी हैं। सिंधु सभ्यता से प्राप्त मुहरों में पीपल वृक्ष की आकृति मिलती है।

85. निम्नलिखित में से किस पशु का अंकन हड़प्पा संस्कृति की मुहरों पर नहीं मिलता है?

(a) बैल (b) हाथी

(c) घोड़ा (d) भेड़

U.P.P.C.S.(Spl.) (Mains) 2009

उत्तर—(c)

सिंधु घाटी सभ्यता के कुछ स्थलों से घोड़े के मृण्मूर्ति, अस्थि, जबड़े आदि अवशेष प्राप्त हुए हैं, लेकिन उसका अंकन हड़प्पा की मुहरों पर नहीं मिलता है।

86. किस पशु के अवशेष सिंधु घाटी सभ्यता में प्राप्त नहीं हुए हैं?

(a) शेर (b) घोड़ा

(c) गाय (d) हाथी

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2011

उत्तर—(a)

दिए गए विकल्पों में से गाय और हाथी के अवशेष तो सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त हुए हैं; किंतु घोड़े के अवशेष सिंधु घाटी की सभ्यता से प्राप्त होने के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। आधुनिक उत्खनन के निष्कर्षों के आधार पर अनेक प्रख्यात विद्वानों ने घोड़े के अवशेषों के सिंधु घाटी की सभ्यता से प्राप्त होने के अभिमत की पुष्टि की है। दूसरी ओर सिंधु घाटी के सभ्यता के उत्खनन से शेर के अवशेषों की प्राप्ति का उल्लेख नहीं प्राप्त होता है। अत: इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) अभीष्ट होगा।

87. निम्नलिखित में से कौन-सा जानवर सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों को नहीं

(a) बैल (b) घोड़ा

(c) हाथी (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

69th B.P.S.C (Pre) 2023

उत्तर—(d)

प्रश्नगत विकल्पों में सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों को बैल तथा हाथी की जानकारी थी, परंतु घोड़े के अस्तित्व के विषय में विद्वानों में मतभेद है। हड़प्पा के विभिन्न स्थलों से प्राप्त अस्थियां गधखुर (इक्वयहेमिलोनस खुर) की है या पालतू घोड़े (इक्वय कबालस) की हैं, यह निश्चित कर पाना कठिन है। हड़प्पा, लोथल, सुरकोटदा, कुंतसी एवं कालीबंगा से अश्व या उसी प्रजाति की अन्य जातियों के अवशेषों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। सेन्दोर बोकोनी द्वारा सुरकोटदा से प्राप्त तथाकथित अश्व अवशेषों में से छ: को लगभग 3000 ई.पू. से 2000 ई.पू. के मध्य का वास्तविक अश्व अवशेष बताया गया है। वर्ष 1974 में एएसआई के जे.पी. जोशी तथा ए.के. शर्मा ने यहां से 2100-1700 ई.पू. के मध्य प्रत्येक स्तर पर अश्व अस्थियां प्राप्त होना प्रतिवेदित की है। यद्यपि रामशरण शर्मा, रोमिला थापर तथा मेंडो और पटेल आदि इस तथ्य को नहीं मानते हैं। इसी प्रकार ब्रिगेडियर रौस के द्वारा राना धुंडई के प्रारंभिक हड़प्पा स्तर से जो घोड़े के दांत बताए गए हैं, उसे ज्यूनर महोदय अप्रमाणिक मानते हैं। अत: घोड़े के विषय में यही कहना समीचीन होगा कि हड़प्पा सभ्यता में इसके अस्तित्व को पूर्ण रूप से नकारा नहीं जा सकता, यद्यपि इसका उपयोग अत्यंत सीमित रहा होगा। बिहार लोक सेवा आयोग ने इसका उत्तर विकल्प (b) को माना है।

88. आई.आई.टी. खड़गपुर के अध्ययन दल की रिपोर्ट के अनुसार, लगातार कितने वर्षों की न के बराबर वर्षा का होना सिंधु घाटी सभ्यता के पतन का कारण रहा था?

(a) 600 वर्ष (b) 700 वर्ष

(c) 800 वर्ष (d) 900 वर्ष

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

B.P.S.C. (Pre) 2018

उत्तर—(d)

वर्ष 2018 में आई.आई.टी. खड़गपुर के एक अध्ययन दल द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार लगातार 900 वर्षों तक पड़े सूखे के कारण सिंधु सभ्यता का पतन हो गया। ध्यातव्य है कि ऑरेल स्टीन जैसे विद्वानों ने भी हड़प्पा सभ्यता के पतन हेतु जलवायु परिवर्तन को प्रमुख कारण माना है।

89. मृण-पट्टिका पर उत्कीर्ण सींगयुक्त देवता की कृति प्राप्त हुई है—

(a) बनावली से (b) कालीबंगा से

(c) लोथल से (d) सुरकोटडा से

U.P. Lower Sub. (Spl.) (Pre) 2008

उत्तर—(b)

कालीबंगा के मृण-पट्टिका पर एक ओर दोहरे सींग वाले देवता का अंकन है। इसके अतिरिक्त मोहनजोदड़ो से भी सींगयुक्त देवता का चित्र प्राप्त होता है।

90. निम्नलिखित में से कौन-सी सभ्यता नील नदी के तट पर पनपी?

(a) रोमन सभ्यता

(b) सिंधु घाटी की सभ्यता

(c) यूनानी सभ्यता

(d) मिस्र की सभ्यता

U.P.P.C.S. (Mains) 2004

उत्तर—(d)

मिस्र की सभ्यता का विकास नील नदी की द्रोणी में हुआ। नील नदी विश्व की इस प्राचीन सभ्ता का आधार थी। मिस्र को नील नदी का वरदान/ उपहार कहा जाता है; क्योंकि इस नदी के अभाव में यह भू-भाग रेगिस्तान होता। मिस्र अफ्रीका महाद्वीप में स्थित है। इसकी समकालीन सभ्यताएं सिंधु घाटी सभ्यता (भारत) तथा मेसोपोटामिया की सभ्यता (इराक) थी।

91. निम्नलिखित सभ्यताओं का उत्तर से दक्षिण का सही क्रम कौन-सा है?

(a) माया - एजटेक - मुइस्का - इंका

(b) माया - मुइस्का - इंका - एजटेक

(c) एजटेक - मुइस्का - माया - इंका

(d) एजटेक - माया - मुइस्का - इंका

U.P.R.O/A.R.O. (Pre) 2016

उत्तर—(d)

एजटेक सभ्यता का विस्तार मेसोअमेरिका के उत्तरी भाग पर था। मेसोअमेरिका के अंतर्गत मध्य मेक्सिको से लेकर बेलिज, ग्वाटेमाला, अल सल्वाडोर, होंडुरास, निकारागुआ तथा उत्तरी कोस्टारिका तक के क्षेत्र शामिल हैं। इस प्रकार एजटेक सभ्यता का विस्तार मध्य मेक्सिको में, माया सभ्यता का विस्तार मेसोअमेरिका के दक्षिणी भाग अर्थात दक्षिणी मेक्सिको से लेकर ग्वाटेमाला, उत्तरी बेलिज तथा अलसल्वाडोर एवं होंडुरास के पश्चिमी भाग तक था। इसके अलावा मुइस्का सभ्यता दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के कोलम्बिया के पूर्वी भाग में विस्तृत थी, जबकि इंका सभ्यता का विस्तार दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी भाग में उत्तर में क्वीटो (Quito) से लेकर दक्षिण में सेंटियागो तक था। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि प्रश्नानुसार दी गई सभ्यताओं का क्रम क्रमशः उत्तर से दक्षिण की ओर इस प्रकार है—एजटेक, माया, मुइस्का तथा इंका। अतः विकल्प (d) सही उत्तर है।

92. लेखन कला की उचित प्रणाली विकसित करने वाली सर्वप्रथम प्राचीन सभ्यता थी—

(a) सिंधु (b) मिस्र

(c) सुमेरिया (d) चीन

R.A.S. / R.T.S. (Pre) 1992

उत्तर—(c)

सुमेरिया सभ्यता के लोग प्राचीन विश्व के प्रथम लिपि आविष्कारकर्ता थे। इनकी प्रारंभिक लिपि का स्वरूप अत्यंत सरल एवं आदिम था। सुमेरिया की क्यूनीफार्म लिपि को सामान्यतः प्राचीनतम लिपि माना जाता है।

वैदिक काल

नोट्स

*वैदिक शब्द **'वेद'** से बना है। वेद का अर्थ **ज्ञान** होता है। *भारत में सैंधव संस्कृति के पश्चात जिस नवीन सभ्यता का विकास हुआ, उसे 'वैदिक सभ्यता' या 'आर्य सभ्यता' के नाम से जाना जाता है। *'आर्य' शब्द भाषा सूचक है, जिसका अर्थ है- श्रेष्ठ या कुलीन। *क्लासिकीय संस्कृति में **'आर्य'** शब्द का अर्थ है- **एक उत्तम व्यक्ति**। *आर्यों का इतिहास मुख्यतः वेदों से ज्ञात होता है। *सामान्यतः वैदिक साहित्य की रचना का श्रेय आर्यों को दिया जाता है। *आर्यों के मूल निवास स्थान को लेकर मतभेद है। प्रमुख इतिहासकारों ने इस पर अलग-अलग विचार व्यक्त किए हैं।

आर्यों का मूल निवास स्थान	विद्वान
कश्मीर अथवा हिमालय क्षेत्र	एल.डी. कल्ल
ब्रह्मर्षि देश	पं. गंगानाथ झा
सप्त-सैंधव प्रदेश	डॉ. अविनाश चंद्र दास
देविका प्रदेश (मुल्तान)	डी.एस. त्रिवेदी
दक्षिणी रूस	गार्डन चाइल्ड
मध्य एशिया	मैक्स मूलर
उत्तरी ध्रुव	पं. बाल गंगाधर तिलक
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
जर्मनी	हर्ट एवं पेन्का
डेन्यूब नदी की घाटी	पी. गाइल्स

*वैदिक काल को दो भागों में विभाजित किया जाता है- ऋग्वैदिक अथवा पूर्व वैदिक काल (1500 ई.पू.-1000 ई.पू.) तथा उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू.-600 ई.पू.)।

*ऋग्वैदिक काल का इतिहास पूर्णतया ऋग्वेद से ज्ञात होता है। *ऋग्वेद में लोहे का उल्लेख नहीं है। *उत्तर वैदिक ग्रंथों में लोहे का उल्लेख मिलता है।*ऋग्वेद के नदी सूक्त में 19 नदियों का वर्णन है, जिसमें सबसे पश्चिम में कुभा तथा सबसे पूर्व में गंगा है। *ऋग्वेद में अफगानिस्तान की चार नदियों क्रुमु, कुभा, गोमती और सुवास्तु का उल्लेख मिलता है। *ऋग्वेद में सप्त सैंधव प्रदेश की सात नदियों का उल्लेख मिलता है। ये नदियां हैं- सरस्वती, विपासा, परुष्णी, वितस्ता, सिंधु, शुतुद्रि तथा अस्किनी। *ऋग्वेद में **यमुना नदी का तीन बार,** जबकि **गंगा नदी का एक बार उल्लेख** हुआ है। *इसमें कश्मीर की एक नदी मरुद्वृधा का उल्लेख मिलता है। *ऋग्वेद में **सिंधु नदी का सर्वाधिक बार उल्लेख** हुआ है, जबकि ऋग्वैदिक आर्यों की **सबसे पवित्र नदी सरस्वती** थी, जिसे **'मातेतमा,' 'देवीतमा'** एवं **'नदीतमा'** (नदियों में प्रमुख) कहा गया है। सिंधु नदी को उसके आर्थिक महत्व के कारण **'हिरण्यायी'** (Hiranyayi) कहा गया है। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में सिंधु नदी के गिरने की जगह 'सिंधुसागर' अर्थात अरब सागर बताई गई है। *गंगा-यमुना के दोआब एवं उसके समीपवर्ती क्षेत्रों को आर्यों ने **'ब्रह्मर्षि देश'** कहा। *आर्यों ने हिमालय और विंध्याचल पर्वतों के बीच का नाम **'मध्य देश'** रखा। *कालांतर में आर्यों ने संपूर्ण उत्तर भारत में अपना विस्तार कर लिया, जिसे 'आर्यावर्त' कहा जाता था। *1400 ई. पू. के बोगजकोई (एशिया माइनर) के अभिलेख में ऋग्वैदिक काल के देवताओं (इंद्र, वरुण, मित्र तथा नासत्य) का उल्लेख मिलता है।

ऋग्वैदिक काल की नदियां	
प्राचीन नाम	**आधुनिक नाम**
अस्किनी	चिनाब
विपासा	ब्यास
परुष्णी	रावी
वितस्ता	झेलम
कुभा	काबुल
क्रुमु	कुर्रम
गोमती	गोमल
सुवास्तु	स्वात
सदानीरा	गंडक
शुतुद्रि	सतलुज
दृशद्वती	घग्गर

*वैदिक साहित्य को **'श्रुति'** भी कहा जाता है। *'श्रुति' का शाब्दिक अर्थ है- सुना हुआ। *भारतीय साहित्य में वेद सर्वाधिक प्राचीन हैं। वेद चार हैं-ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद। ***ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' या 'त्रयी'** कहा जाता है। *वेद के चार भाग होते हैं-संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषद। *ऋग्वेद में कुल 10 मंडल तथा 1028 सूक्त और 10552 ऋचाएं हैं। *1017 सूक्त साकल में तथा 11 सूक्त बालखिल्य में हैं। *ऋग्वेद के 2 से 7 तक के मंडल प्राचीन माने जाते हैं।

ऋग्वेद के मंडल एवं उसके रचयिता	
ऋग्वेद के मंडल	**रचयिता**
प्रथम मंडल	मधुच्छम्दा, मेधातिथि
द्वितीय मंडल	गृत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम् मंडल	अत्रि
षष्ठम् मंडल	भारद्वाज
सप्तम् मंडल	वशिष्ठ
अष्टम् मंडल	कण्व एवं आंगिरस
नवम् मंडल	आंगिरस और अन्य ऋषि
दशम् मंडल	विमदा, इंद्रा, शची और अन्य

*ऋग्वेद के तृतीय मंडल में 'गायत्री मंत्र' का उल्लेख है। इसके **रचनाकार विश्वामित्र** हैं। *यह **सवितृ (सूर्य देवता)** को समर्पित है। *ऋग्वेद के नौवें मंडल के सभी 114 सूक्त 'सोम' को समर्पित हैं। *प्रारंभ में हम **तीन वर्णों का** उल्लेख पाते हैं- **ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य** । *'शूद्र' वर्ण का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में हुआ है। *ऋग्वेद के मंत्रों का उच्चारण करके यज्ञ संपन्न कराने वाले पुरोहित को 'होता' कहा जाता था। ***ऐतरेय** तथा **कौषीतकी** ऋग्वेद के **दो ब्राह्मण ग्रंथ** हैं। *ऐतरेय ब्राह्मण में शुन:शेप आख्यान का वर्णन मिलता है।

*यजुर्वेद में स्तोत्र एवं कर्मकांड वर्णित हैं। *यह वेद गद्य एवं पद्य दोनों में है। *यजुर्वेद के कर्मकांडों को संपन्न कराने वाले पुरोहित को **'अध्वर्यु'** कहा जाता था। *यजुर्वेद की दो शाखाएं हैं- कृष्ण यजुर्वेद जो **पद्य और गद्य दोनों** में है और शुक्ल यजुर्वेद जो **केवल पद्य** में है। *यजुर्वेद का अंतिम भाग

'ईशोपनिषद' है, जिसका संबंध याज्ञिक अनुष्ठान से न होकर आध्यात्मिक चिंतन से है। *शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ **कण्व** तथा **माध्यन्दिन** हैं। *शुक्ल यजुर्वेद की संहिताओं को **'वाजसनेय'** भी कहा गया है; क्योंकि वाजसनी के पुत्र याज्ञवल्क्य इसके द्रष्टा थे। *कृष्ण यजुर्वेद की मुख्य शाखाएं हैं- तैत्तिरीय, काठक, मैत्रायणी तथा कठ कपिष्ठल। *शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ है। *इसमें पुनर्जन्म का सिद्धांत, जल-प्लावन कथा, पुरुरवा-उर्वशी आख्यान तथा पुरुषमेध यज्ञ का वर्णन है। ***'साम' का अर्थ 'संगीत' अथवा 'गान'** होता है। *सामवेद में यज्ञों के अवसर पर गाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। *जो व्यक्ति इन मंत्रों को गाता था, उसे **'उद्गाता'** कहा जाता था। *सामवेद में कुल **1875 ऋचाएं** हैं, जिनमें से **75** जबकि कुछ विद्वानों के अनुसार 99 को छोड़कर शेष सभी ऋग्वेद में भी उपलब्ध हैं। *सामवेद की प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ हैं-कौथुम, राणायनीय एवं जैमिनीय आदि।

* अथर्ववेद में 20 कांड, 730 सूक्त तथा 5987 मंत्र हैं। इसमें 1200 मंत्र ऋग्वेद के हैं। *अथर्ववेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाले पुरोहित को **'ब्रह्मा'** कहा जाता था। *अथर्ववेद में मगध तथा अंग दोनों को दूरस्थ प्रदेश कहा गया है। *इसमें **सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां** कहा गया है। *इसमें सामान्य मनुष्य के विचारों, विश्वासों तथा अंधविश्वासों का विवरण मिलता है। *अथर्ववेद की दो शाखाएं उपलब्ध हैं-पिप्पलाद तथा शौनक। *याज्ञवल्क्य-गार्गी के प्रसिद्ध संवाद का उल्लेख **बृहदारण्यक उपनिषद** में है। *कठोपनिषद में यम और नचिकेता का संवाद उल्लिखित है। ***'कठोपनिषद'** कृष्ण यजुर्वेद का उपनिषद है। ***'सत्यमेव जयते'** शब्द **मुंडकोपनिषद** से लिया गया है। *अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण **गोपथ ब्राह्मण** है। *इसका कोई आरण्यक नहीं है। ***उपनिषद दर्शन पर आधारित** पुस्तकें हैं, इन्हें **वेदांत** भी कहा जाता है। *उपनिषद का अर्थ शिष्य द्वारा ज्ञान प्राप्ति हेतु गुरु के समीप बैठना है। *उपनिषद में प्रथम बार **मोक्ष** की चर्चा मिलती है। *यह शब्द **श्वेताश्वतर उपनिषद** में पहली बार आया है। ***वेदांग की संख्या छः** है, ये हैं-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद तथा ज्योतिष। ***शुल्व सूत्र** में यज्ञीय वेदियों को मापने, उनके स्थान-चयन तथा निर्माण आदि का वर्णन है। ***पुराणों की संख्या 18** है। *ये हैं- (1) मत्स्य, (2) मार्कंडेय, (3) भविष्य, (4) भागवत, (5) ब्रह्मांड, (6) ब्रह्मवैवर्त, (7) ब्रह्म, (8) वामन, (9) वराह, (10) विष्णु, (11) वायु, (12) अग्नि, (13) नारद, (14) पद्म, (15) लिंग, (16) गरुड़, (17) कूर्म तथा (18) स्कंद पुराण। *इनकी रचना लोमहर्ष ऋषि तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा द्वारा की गई थी। *इनमें भविष्यत काल शैली में कलियुग के राजाओं का विवरण मिलता है। *हिंदू पौराणिक कथा के अनुसार, समुद्र मंथन हेतु मथानी के रूप में मंद्राचल पर्वत तथा रस्सी के रूप में सर्पों के राजा वासुकी का प्रयोग किया गया था। *इसमें **विष्णु** ने कूर्मावतार धारण कर मंद्राचल पर्वत को अपने ऊपर रखा था।

*अनु, द्रुह्यु, पुरु, यदु तथा तुर्वस को **'पंचजन'** कहा गया है। *जन के अधिपति को **'राजा'** कहा जाता था। *कुलप परिवार का स्वामी, पिता अथवा बड़ा भाई होता था। *ग्राम का मुखिया **'ग्रामणी'** तथा विश का प्रमुख **'विशपति'** कहलाता था। *दशराज्ञ युद्ध का उल्लेख ऋग्वेद के 7वें मंडल में मिलता है। *इस युद्ध में प्रत्येक पक्ष में आर्य एवं अनार्य थे। *यह युद्ध परुष्णी नदी (आधुनिक रावी नदी) के तट पर लड़ा गया था। *दशराज्ञ युद्ध भरतों के राजा सुदास (त्रित्सु राजवंश) तथा दस राजाओं के एक संघ (इसमें पंचजन तथा पांच लघु जनजातियों-**अलिन**, पक्थ, भलान, शिवि तथा विषाणिन के राजा सम्मिलित) के मध्य हुआ था। *इस युद्ध में सुदास की विजय हुई। *सुदास के पुरोहित वशिष्ठ थे। *ऋग्वैदिक युग में राजा भूमि का स्वामी नहीं था। वह प्रधानतः युद्ध में जन का नेता होता था। *विदथ आर्यों की प्राचीन संस्था थी। *ऋग्वेद में पुरोहित, सेनानी तथा ग्रामणी का उल्लेख मिलता है। *पुरोहित, युद्ध के समय राजा के साथ जाता था। *स्पश (गुप्तचर) तथा दूत नामक कर्मचारियों का भी उल्लेख मिलता है।

*ऋग्वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई **परिवार या कुल** होती थी। *ऋग्वैदिक समाज **पितृसत्तात्मक समाज** था। *वरुण सूक्त के **शुनःशेप आख्यान** से ज्ञात होता है कि पिता अपनी संतान को बेच सकता था।

*ऋग्वैदिक कालीन समाज प्रारंभ में वर्ग-विभेद से रहित था। *ऋग्वेद में 'वर्ण' शब्द रंग के अर्थ में तथा कहीं-कहीं व्यवसाय चयन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। *ऋग्वेद के **दसवें मंडल** के पुरुष सूक्त में सर्वप्रथम **'शूद्र'** वर्ण का उल्लेख मिलता है। *इसमें 'विराट पुरुष' के विभिन्न अंगों से चारों वर्णों की उत्पत्ति बताई गई है। *विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से राजन्य (क्षत्रिय), उरु (जंघा) भाग से वैश्य तथा पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए। ***गोत्र शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में** हुआ था। *गोत्र शब्द का मूल अर्थ है- गोष्ठ अथवा वह स्थान जहां समूचे कुल का गोधन पाला जाता था; परंतु बाद में इसका अर्थ एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न लोगों का समुदाय हो गया। *गोत्र प्रथा की स्थापना **उत्तर वैदिक काल** में हुई थी। *आर्यों द्वारा अनार्यों को दिए गए विभिन्न नाम हैं- अब्रह्मन (वेदों को न मानने वाले), अयज्वन् (यज्ञ न करने वाले), अनासः (बिना नाक वाले), अदेवयु (देवताओं को न मानने वाले), अव्रत (वैदिक व्रतों का पालन न करने वाले) तथा मृधवाक् (कटु वाणी बोलने वाले)।

***शतपथ ब्राह्मण में पत्नी को पति की अर्धांगिनी** कहा गया है। *ऋग्वेद में **'जायेदस्तम'** अर्थात पत्नी ही गृह है, कहकर उसके महत्व को स्वीकार किया गया है। *कन्या के विदाई के समय जो उपहार एवं द्रव्य दिए जाते थे, उसे **'वहतु'** कहा जाता था। *स्त्रियों में पुनर्विवाह एवं नियोग प्रथा प्रचलित थी। *नियोग प्रथा से उत्पन्न संतान **'क्षेत्रज'** कहलाती थी। *समाज में सती प्रथा के प्रचलन का उदाहरण नहीं मिलता है। *जो कन्याएं जीवन भर कुंवारी रहती थीं, उन्हें **'अमाजू'** कहा जाता था। *ऋग्वेद में घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला आदि स्त्रियां शिक्षित थीं तथा जिन्होंने कुछ मंत्रों की रचना भी की थी। *लोपामुद्रा, अगस्त्य ऋषि की पत्नी थीं।

*आर्य मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। *भोजन में दूध, घी, दही आदि का विशेष महत्व था। *दूध में पकी हुई

खीर (क्षीर पाकौदन) का उल्लेख मिलता है। *जौ के सत्तू को दही में मिलाकर **'करंभ'** नामक खाद्य पदार्थ बनाया जाता था। *ऋग्वैदिक काल में तीन प्रकार के वस्त्र प्रचलित थे- नीवी, वासस् एवं अधिवासस्। *स्त्री एवं पुरुष आभूषण पहनते थे।

*ऋग्वैदिक आर्य आमोद-प्रमोद का जीवन व्यतीत करते थे। *रथदौड़, घुड़दौड़ तथा पासा खेल उनके मनोरंजन के साधन थे। *वाद्यों में झांझ-मंजीरे, दुंदुभि, कर्करि, वीणा, बांसुरी आदि का उल्लेख मिलता है।

*आर्यों की संस्कृति मूलतः ग्रामीण थी। *कृषि और पशुपालन उनके आर्थिक जीवन का मूल आधार था। *ऋग्वेद में पशुपालन की तुलना में कृषि का उल्लेख बहुत कम मिलता है। *ऋग्वेद के मात्र 24 मंत्रों में ही कृषि का उल्लेख प्राप्त होता है। *'उर्वरा' या 'क्षेत्र' कृषि योग्य भूमि को कहा जाता था। *बुआई, कटाई, मड़ाई आदि क्रियाओं से लोग परिचित थे। *ऋग्वेद में कुल्या (नहर), कूप तथा अवट (खोदकर बने हुए गड्ढे), अश्मचक्र (रहट की चरखी) आदि का उल्लेख है। *ऋग्वैदिक समाज में व्यवसाय आनुवंशिक (Hereditary) नहीं थे। *ऋग्वेद में तक्षा (बढ़ई), स्वर्णकार, चर्मकार, वाय (जुलाहे), कर्मा (धातु कर्म करने वाले), कुंभकार आदि का उल्लेख मिलता है। *कताई-बुनाई का कार्य स्त्री-पुरुष दोनों करते थे। *ऋग्वेद से पता चलता है कि सिंध तथा गांधार प्रदेश सुंदर ऊनी वस्त्रों के लिए विख्यात थे। *व्यापार अदला-बदली प्रणाली पर आधारित था। *विनिमय के माध्यम के रूप में **'निष्क'** का भी उल्लेख हुआ है। *व्यापार-वाणिज्य प्रधानतः **'पणि'** वर्ग के लोग करते थे। *ऋग्वैदिक आर्य लोहे से परिचित नहीं थे।

ऋग्वैदिककालीन शब्दावली एवं अर्थ	
नीवी	- कमर के नीचे पहना जाने वाला वस्त्र
वासस्	- कमर के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र
अधिवासस्	- ऊपर से धारण किया जाने वाला चादर या ओढ़नी
तक्षा	- बढ़ई
कर्मा	- धातु कर्म करने वाले
वेकनाट	- सूदखोर
अरित्र	- पतवार
अरितृ	- नाविक

*वैदिक साहित्य में ऋग्वेद प्राचीनतम ग्रंथ है, जिसमें हमें सर्वप्रथम बहुदेववाद के दर्शन प्राप्त होते हैं। *ऋग्वेद में एक अन्य स्थल पर प्रत्येक लोक में 11 देवताओं का निवास मानकर उनकी संख्या 33 बताई गई है। *ऋग्वैदिक देवताओं का वर्गीकरण तीन वर्गों में किया गया है– ***पृथ्वी के देवता**–पृथ्वी, अग्नि, बृहस्पति, सोम आदि। ***आकाश के देवता**–वरुण, सूर्य, मित्र, पूषन, विष्णु, अश्विन आदि। ***अंतरिक्ष के देवता**–इंद्र, पर्जन्य, रुद्र, आपः, वायु-वात आदि। ***इंद्र को विश्व का स्वामी** कहा गया है। *इन्हें **पुरंदर** अर्थात **'किलों को तोड़ने वाला'** कहा गया है। *ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त (250) इंद्र को समर्पित हैं। *इंद्र को आर्यों का युद्ध नेता तथा वर्षा का देवता माना जाता है। *ऋग्वेद में अग्नि को 200 सूक्त समर्पित हैं और वह इस काल के दूसरे सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता हैं। *ऋग्वैदिक देवताओं में सोम को तीसरा स्थान प्राप्त था। ***वरुण को समुद्र का देवता एवं ऋत् का नियामक** माना जाता है। *वरुण को वैदिक सभ्यता में नैतिक व्यवस्था का प्रधान माना जाता था। इसी कारण उन्हें **'ऋतस्यगोपा'** भी कहा जाता था। * ईरान में वरुण को **'अहुरमज्दा'** तथा यूनान में **'ओरनोज'** नाम से जाना जाता है। *ऋग्वेद के **नौवें मंडल** के सभी 114 सूक्त **'सोम'** को समर्पित हैं। ***वनस्पतियों एवं ओषधियों के देवता पूषन** हैं। इनके रथ को बकरे द्वारा खींचते हुए प्रदर्शित किया गया है। ***जंगल की देवी 'अरण्यानी',** जबकि ज्ञान की देवी **'सरस्वती'** थीं।

*उत्तर वैदिक काल में अनु, द्रुह्य, तुर्वश, क्रिवि, पुरु तथा भरत आदि जनों का लोप हो गया। *शतपथ ब्राह्मण में कुरु और पांचाल को वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि बताया गया है। *छांदोग्योपनिषद से ज्ञात होता है कि कुरु जनपद में कभी ओले नहीं पड़े और न ही टिड्डियों के उपद्रव के कारण अकाल ही पड़ा। *उत्तर वैदिक काल में **काशी, कोशल, कुरु, पांचाल, विदेह, मगध, अंग** आदि प्रमुख राज्य थे। *उपनिषद में कुछ क्षत्रिय राजाओं के उल्लेख प्राप्त होते हैं। *विदेह के **जनक**, पांचाल के राजा **प्रवाहणजाबालि,** केकय के राजा **अश्वपति** और काशी के राजा **अजातशत्रु** प्रमुख थे।

विभिन्न दिशाओं में राजा के विभिन्न नाम	
पूर्व	सम्राट
पश्चिम	स्वराट्
उत्तर	विराट
दक्षिण	भोज
मध्य	राजा

*ऐतरेय ब्राह्मण में सर्वप्रथम राजा की उत्पत्ति का सिद्धांत मिलता है। *ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है कि ''समुद्रपर्यंत पृथ्वी का शासक एकराट होता है''।

*अथर्ववेद में एकराट सर्वोच्च शासक को कहा गया है। *अथर्ववेद में परीक्षित को **'मृत्युलोक का देवता'** कहा गया है। *छांदोग्योपनिषद और बृहदारण्यक उपनिषद में उद्दालक आरुणि एवं उनके पुत्र श्वेतकेतु के बीच ब्रह्म एवं आत्मा की अभिन्नता के विषय में संवाद है। *अथर्ववेद में सभा और समिति को **'प्रजापति की दो पुत्रियां'** कहा गया है। *वैदिक काल में सभा एवं समिति नामक दो संस्थाएं राजा की निरंकुशता पर नियंत्रण रखती थीं। *संभवतः **सभा कुलीन** या **वृद्ध मनुष्यों की संस्था** थी, जिसमें उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति ही भाग ले सकते थे। इसके विपरीत समिति सर्वसाधारण की सभा थी, जिसमें जनों के सभी व्यक्ति अथवा परिवारों के प्रमुख भाग ले सकते थे। ***सभा** का ऋग्वेद में **8 बार उल्लेख** मिलता है। *ऋग्वेद में **समिति का 9 बार उल्लेख** मिलता है। *उत्तर वैदिक काल में सभा में महिलाओं की भागीदारी बंद कर दी गई।

*संहिता एवं ब्राह्मण काल तक समिति का प्रभाव कम हो गया और यह केवल परामर्शदायिनी परिषद ही रह गई। राजसूय यज्ञ में रत्न

हविस् उत्सव के समय राजा रत्निन के घर जाता था। अलग-अलग ग्रंथों में रत्निनों की संख्या अलग-अलग प्राप्त होती है। ***शतपथ ब्राह्मण** में सर्वाधिक **12 रत्निनों का उल्लेख** है जिनमें मुख्य निम्न है–

पुरोहित	राजा का प्रमुख परामर्शदाता
सेनानी	सेना का प्रमुख
ग्रामणी	ग्राम का मुखिया
महिषी	राजा की पत्नी
सूत	रथ सेना का नायक
संग्रहीता	कोषाध्यक्ष
भागदुध	कर जमा करने वाला अधिकारी
अक्षवाप	आय-व्यय गणनाध्यक्ष एवं द्यूत क्रीड़ा में राजा का मित्र
क्षात्रि/क्षता	प्रतिहारी या दौवारिक

*शतपथ ब्राह्मण तथा काठक संहिता में गोविकर्तन (गवाध्यक्ष), तक्षा (बढ़ई) तथा रथकार (रथ बनाने वाला) का नाम भी रत्नियों की सूची में मिलता है। *शतपथ ब्राह्मण में राजसूय यज्ञ का विस्तृत वर्णन है। ***राजसूय यज्ञ में राजा का अभिषेक 17 प्रकार के जल से** किया जाता था।

*उत्तर वैदिक कालीन पारिवारिक जीवन ऋग्वैदिक काल के समान था। *समाज पितृसत्तात्मक था। * ऐतरेय ब्राह्मण से पता चलता है कि अजीगर्त ने अपने पुत्र शुनःशेप को 100 गायें लेकर बलि के लिए बेच दिया था। *उत्तर वैदिक काल में समाज चार वर्णों में विभक्त था-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। *ऐतरेय ब्राह्मण में चारों वर्णों के कर्तव्यों का वर्णन मिलता है। *क्षत्रिय या राजा भूमि का स्वामी होता था। *वैश्य दूसरे को कर देते थे (अन्यस्यबलिकृत)। *शूद्र को तीनों वर्णों का सेवक (अन्यस्य प्रेष्यः) कहा गया है। *ऐतरेय ब्राह्मण में कन्या को चिंता का कारण माना गया है। *मैत्रायणी संहिता में स्त्री को पासा तथा सुरा के साथ तीन प्रमुख बुराइयों में गिनाया गया है। ***बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य-गार्गी संवाद** का उल्लेख है। *उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा में गिरावट आई।

***छांदोग्योपनिषद में केवल तीन आश्रमों का उल्लेख** है, जबकि **सर्वप्रथम चारों आश्रमों का उल्लेख जाबालोपनिषद में** मिलता है। ये थे - ब्रह्मचर्य (25 वर्ष), गृहस्थ (25-50 वर्ष), वानप्रस्थ (50-75 वर्ष) तथा संन्यास (75-100 वर्ष)। *मनुष्य की आयु 100 वर्ष मानकर प्रत्येक आश्रम के लिए 25-25 वर्ष आयु निर्धारित की गई। *बौधायन धर्मसूत्र के अनुसार, गायत्री मंत्र द्वारा ब्राह्मण बालक का उपनयन संस्कार, वसंत ऋतु में 8 वर्ष की अवस्था में किया जाता था। *त्रिष्टुप मंत्र द्वारा क्षत्रिय बालक का उपनयन संस्कार ग्रीष्म ऋतु में 11 वर्ष की अवस्था में होता था। *जगती मंत्र द्वारा वैश्य बालक का उपनयन संस्कार शरद ऋतु में 12 वर्ष की अवस्था में होता था। *वैदिक काल में जीविकोपार्जन हेतु **वेद-वेदांग** पढ़ाने वाला अध्यापक **उपाध्याय** कहलाता था। *ब्रह्मवादिनी वे कन्याएं थीं, जो जीवनभर आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करती थीं। *जबकि साद्योवधू विवाह पूर्व तक शिक्षा प्राप्त करने वाली कन्याएं थीं। *गृहस्थ आश्रम में मनुष्य को **5 महायज्ञ** का अनुष्ठान करना पड़ता था। ये पंच महायज्ञ हैं– ***ब्रह्म यज्ञ**–प्राचीन ऋषियों के प्रति श्रद्धा प्रकट करना। ***देव यज्ञ**–देवताओं का सम्मान। ***भूत यज्ञ**–सभी प्राणियों के कल्याणार्थ। ***पितृ यज्ञ**–पितरों के तर्पण हेतु। ***मनुष्य यज्ञ**–मानव मात्र के कल्याण हेतु।

*शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चारों क्रियाओं का उल्लेख हुआ है। ये हैं–जुताई, बुवाई, कटाई तथा मड़ाई। *काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा हलों को खींचने का उल्लेख मिलता है। *उत्तर वैदिक काल में उत्तर भारत में लोहे का प्रचार हुआ। *उत्तर वैदिक साहित्य में लोहे को **'कृष्ण अयस'** कहा गया है। *तैत्तिरीय संहिता में ऋण के लिए **'कुसीद'** तथा शतपथ ब्राह्मण में उधार देने वाले के लिए **'कुसीदिन'** शब्द मिलता है। *माप की विभिन्न इकाइयां थीं–निष्क, शतमान, **कृष्णल**, पाद आदि। ***'कृष्णल'** संभवतः बाट की मूलभूत इकाई थी। *गुंजा तथा रत्तिका भी उसी के समान थे। *रत्तिका को साहित्य में **'तुलाबीज'** कहा गया है। *शतपथ ब्राह्मण में पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्रों का उल्लेख हुआ है। *वाजसनेयी संहिता एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में विभिन्न व्यवसायों की लंबी सूची मिलती है। *इनमें प्रमुख हैं–रथकार, स्वर्णकार, लुहार, सूत, कुंभकार, चर्मकार, रज्जुकार आदि। *स्त्रियां रंगाई, सुईकारी आदि में निपुण थीं। *उत्तर वैदिक काल में व्यापार मुख्यतः वस्तु-विनिमय पर आधारित था।

*उत्तर वैदिक काल में धर्म और दर्शन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। *ऋग्वैदिक काल के वरुण, इंद्र आदि का स्थान प्रजापति, विष्णु एवं रुद्र-शिव ने ले लिया। *यज्ञों में पशुबलि को प्राथमिकता दी गई तथा अन्य आहुतियां गौण होने लगीं। *राजसूय, अश्वमेध तथा वाजपेय जैसे विशाल यज्ञों का अनुष्ठान किया जाने लगा। *अग्निष्टोम यज्ञ सात दिनों तक चलता था। *पहली बार **शतपथ ब्राह्मण में पुनर्जन्म के सिद्धांत** का उल्लेख मिलता है। *उपनिषदों में ब्रह्म एवं आत्मा के संबंधों की व्याख्या की गई। *पुरुषार्थ की संख्या चार है–धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष। *धर्म, अर्थ तथा काम को **त्रिवर्ग** कहा गया है। ***गृह्य सूत्रों में 16 प्रकार के संस्कारों** का उल्लेख है। *ये हैं–गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशांत, समावर्तन, विवाह एवं अंत्येष्टि। ***स्मृति ग्रंथों में आठ प्रकार के विवाहों का** उल्लेख है। *ये हैं–ब्रह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, गांधर्व, आसुर, राक्षस एवं पैशाच विवाह।

प्रश्नकोश

1. 'आर्य' शब्द इंगित करता है–

(a) नृजाति समूह को (b) यायावरी जन को
(c) भाषा समूह को (d) श्रेष्ठ वंश को

I.A.S. (Pre) 1999
U.P.P.C.S. (Pre) 1999

उत्तर–(d)

आर्य शब्द प्राचीन भारोपीय एवं प्राचीन ईरानी भाषा बोलने वालों के लिए प्रयुक्त शब्द है। वैदिक संस्कृति में आर्य शब्द श्रेष्ठ, शिष्ट अथवा सज्जन तथा नैतिक अर्थ में महाकुल, कुलीन, सभ्य, साधू, आदि के लिए प्रयुक्त हुआ है। सायणाचार्य ने अपने ऋग्भाष्य में आर्य का अर्थ विज्ञ, यज्ञ का अनुष्ठाता, विज्ञ स्रोता, आदरणीय अथवा सर्वत्र गंतव्य, उत्तम वर्ष, मनु, कर्मयुक्त और कर्मानुष्ठान से श्रेष्ठ आदि बताया है। अतः आर्य का शाब्दिक अर्थ 'श्रेष्ठ' या 'कुलीन' है।

2. क्लासिकीय संस्कृति में 'आर्य' शब्द का अर्थ है—

(a) ईश्वर में विश्वासी

(b) एक वंशानुगत जाति

(c) किसी विशेष धर्म में विश्वास रखने वाला

(d) एक उत्तम व्यक्ति

U.P. Lower Sub. (Pre) 1998

उत्तर—(d)

क्लासिकीय संस्कृति में 'आर्य' शब्द का अर्थ है—एक उत्तम व्यक्ति। आर्य शब्द भाषा सूचक है, जिसका अर्थ है— श्रेष्ठ या कुलीन।

3. सबसे पुराना वेद कौन-सा है?

(a) यजुर्वेद (b) ऋग्वेद

(c) सामवेद (d) अथर्ववेद

U.P.P.C.S. (Pre) 1995

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2010

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Pre) 2007

उत्तर—(b)

भारतीय साहित्य में वेद चार हैं—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद। इनमें ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है।

4. 'त्रयी' नाम है—

(a) तीन वेदों का (b) धर्म, संघ व युद्ध का

(c) हिंदू धर्म के तीन देवताओं का (d) तीन मौसमों का

U.P.P.S.C. (GIC) 2010

उत्तर—(a)

ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' या 'त्रयी' कहा जाता है।

5. किस वैदिक ग्रंथ में 'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम नामोल्लेख मिलता है?

(a) ऋग्वेद (b) अथर्ववेद

(c) सामवेद (d) यजुर्वेद

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2012

उत्तर—(a)

'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद में 'वर्ण' शब्द रंग के अर्थ में तथा कहीं-कहीं व्यवसाय-चयन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। आर्यों को गौर वर्ण तथा दासों को कृष्ण वर्ण का कहा गया है। ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में सर्वप्रथम 'शूद्र' वर्ण का उल्लेख मिलता है।

6. वर्णव्यवस्था से संबंधित 'पुरुष सूक्त' मूलतः पाया जाता है—

(a) अथर्ववेद (b) सामवेद

(c) ऋग्वेद (d) मनुस्मृति

(e) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. सुमेलित कीजिए—

A. अथर्ववेद	**1. ईश्वर महिमा**
B. ऋग्वेद	**2. बलिदान विधि**
C. यजुर्वेद	**3. ओषधियों से संबंधित**
D. सामवेद	**4. संगीत**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	3	1	2	4
(b)	1	2	3	4
(c)	2	3	4	1
(d)	3	4	1	2

M.P.P.C.S. (Pre) 1999

उत्तर—(a)

अथर्ववेद ओषधियों से संबंधित है। ऋग्वेद में ईश्वर महिमा (देवताओं की स्तुति), यजुर्वेद में कर्मकांड (बलिदान विधि) एवं सामवेद में संगीत का विस्तृत उल्लेख है।

8. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए एवं नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए—

सूची-I	**सूची-II**
A. ऋग्वेद	**1. संगीतमय स्तोत्र**
B. यजुर्वेद	**2. स्तोत्र एवं कर्मकांड**
C. सामवेद	**3. तंत्र-मंत्र एवं वशीकरण**
D. अथर्ववेद	**4. स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	4	2	1	3
(b)	3	2	4	1

(c) 4 1 2 3
(d) 2 3 1 4

U.P.P.C.S. (Pre) 2003
U.P. U.D.A./L.D.A. (Pre) 2002

उत्तर—(a)

ऋग्वेद में स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं हैं, इसमें कुल 1028 सूक्त तथा 10552 ऋचाएं या मंत्र या श्लोक हैं। यजुर्वेद में स्तोत्र एवं कर्मकांड वर्णित हैं। सामवेद के पद गेय रूप में (संगीतमय स्तोत्र) हैं, जिनको 'उद्गाता' नामक पुरोहित गाता था। अथर्ववेद के कुल 20 अध्यायों एवं 730 सूक्तों में तंत्र-मंत्र एवं वशीकरण के संदर्भ में साक्ष्य हैं।

9. निम्नलिखित चार वेदों में से किस एक में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है?
(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद
(c) अथर्ववेद (d) सामवेद

Jharkhand P.C.S. (Pre) 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. ऋग्वेद में.....ऋचाएं हैं—
(a) 1028 (b) 1017
(c) 1128 (d) 1020

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2011

उत्तर—(*)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. ऋग्वेद है—
(a) स्तोत्रों का संकलन (b) कथाओं का संकलन
(c) शब्दों का संकलन (d) युद्ध का ग्रंथ

U.P.R.O/A.R.O. (Pre) 2016

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें एवं निम्न दिए हुए कूट में से सही उत्तर का चयन करें :

सूची-I	**सूची-II**
(A) ऋग्वेद	**(i) गोपथ**
(B) सामवेद	**(ii) शतपथ**
(C) अथर्ववेद	**(iii) ऐतरेय**
(D) यजुर्वेद	**(iv) पंचविश**

कूट :
(a) (A)-(iv), (B)-(ii), (C)-(iii), (D)-(i)
(b) (A)-(ii), (B)-(iv), (C)-(iii), (D)-(i)
(c) (A)-(iii), (B)-(iv), (C)-(i), (D)-(ii)
(d) (A)-(i), (B)-(ii), (C)-(iv), (D)-(iii)

R.A.S./R.T.S. (Pre) 2013

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है—

ऋग्वेद	–	ऐतरेय
सामवेद	–	पंचविश
अथर्ववेद	–	गोपथ
यजुर्वेद	–	शतपथ

13. निम्नलिखित में से कौन-सा ब्राह्मण ग्रंथ ऋग्वेद से संबंधित है?
(a) ऐतरेय ब्राह्मण (b) गोपथ ब्राह्मण
(c) शतपथ ब्राह्मण (d) तैत्तिरीय ब्राह्मण

M.P.P.C.S. (Pre) 2017

उत्तर—(a)

'ब्राह्मण ग्रंथ' यज्ञों तथा उनके अनुष्ठान के विधि-विधानों के संबंध में जानकारी देते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण तथा कौषीतकी (शंखायन) ब्राह्मण ऋग्वेद से, पंचविश या ताण्ड्य ब्राह्मण तथा जैमिनीय ब्राह्मण सामवेद से, शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद से, जबकि 'गोपथ ब्राह्मण' अथर्ववेद से संबद्ध है।

14. 'गोपथ ब्राह्मण' संबंधित है—
(a) यजुर्वेद से (b) ऋग्वेद से
(c) अथर्ववेद से (d) सामवेद से

U.P.R.O./A.R.O. (Pre) 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. निम्नलिखित में से कौन शुल्क यजुर्वेद की संहिता है?
(a) वाजसनेयी (b) मैत्रायणी
(c) तैत्तिरीय (d) काठक

U.P.P.C.S. (Pre) 2018

उत्तर—(a)

शुक्ल यजुर्वेद की संहिता 'वाजसनेयी संहिता' है। शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएं कण्व तथा माध्यन्दिन हैं। ध्यातव्य है कि वाजसनेयी संहिता पूर्णतः पद्य शैली में रचित है। इसमें गद्य का प्रयोग नहीं है।

16. ऋग्वेद का कौन-सा मंडल पूर्णतः 'सोम' को समर्पित है?
(a) सातवां मंडल (b) आठवां मंडल
(c) नौवां मंडल (d) दसवां मंडल

42nd B.P.S.C. (Pre) 1997

उत्तर—(c)

ऋग्वेद में कुल 10 मंडल हैं। इसके नौवें मंडल के सभी 114 सूक्त 'सोम' को समर्पित हैं।

17. ऋग्वेद संहिता का नौवां मंडल पूर्णतः किसको समर्पित है?

(a) इंद्र और उनका हाथी
(b) उर्वशी एवं स्वर्ग
(c) पौधों और जड़ी-बूटियों से संबंधित देवतागण
(d) सोम और इस पेय पर नामाकृत देवता

40th B.P.S.C. (Pre) 1995

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'यज्ञ' संबंधी विधि-विधानों का पता चलता है—

(a) ऋग्वेद से (b) सामवेद से
(c) ब्राह्मण ग्रंथों से (d) यजुर्वेद से

R.A.S./R.T.S. (Pre) 1999

उत्तर—(d)

'यज्ञ' संबंधी विधि-विधानों का पता यजुर्वेद से चलता है। यजुर्वेद के दो भाग हैं—शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद।

19. निम्नलिखित में से किसका संकलन ऋग्वेद पर आधारित है?

(a) यजुर्वेद (b) सामवेद
(c) अथर्ववेद (d) इनमें से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Pre) 1997

उत्तर—(b)

सामवेद में कुल 1875 ऋचाएं हैं, जिनमें से सामान्य मत के अनुसार 75, जबकि कुछ विद्वानों के अनुसार 99 को छोड़कर शेष सभी ऋग्वेद में भी उपलब्ध हैं। अतः सामवेद का संकलन ऋग्वेद पर आधारित है।

20. भारत के किस स्थल की खुदाई से लौह धातु के प्रचलन के प्राचीनतम प्रमाण मिले हैं?

(a) तक्षशिला (b) अतरंजीखेड़ा
(c) कौशाम्बी (d) हस्तिनापुर

U.P.P.C.S. (Pre) 1998

उत्तर—(b)

अहिच्छत्र, अतरंजीखेड़ा, आलमगीरपुर, मथुरा, रोपड़, श्रावस्ती, काम्पिल्य आदि स्थलों की खुदाइयों से लौह युगीन संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं। अतरंजीखेड़ा से लौह धातु मल तथा धातु शोधन में प्रयुक्त होने वाली भट्ठियां मिली हैं, जिनसे यह संकेत मिलता है कि यहां लौह धातु को गलाने का कार्य स्थानीय रूप से होता था।

21. भारतीय उपमहाद्वीप में लोहे का प्रयोग कब शुरू हुआ?

(a) प्रायः 9000 वर्ष पूर्व (b) प्रायः 12000 वर्ष पूर्व
(c) प्रायः 6000 वर्ष पूर्व (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं

68th B.P.S.C (Pre) 2022

उत्तर—(e)

भारतीय उपमहाद्वीप में लोहे के प्रयोग के प्रारंभ के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों का मत है कि विश्व में सर्वप्रथम 'हित्ती' नामक जाति ने ही लोहे का प्रयोग प्रारंभ किया था और इसके पश्चात ही विश्व के अन्य देशों में इसका प्रचलन हुआ, जबकि थाईलैंड के बनैची नामक पुरास्थल की खुदाई से ढला हुआ लोहे की प्राप्ति हुई है जिसकी तिथि 1600-1200 ई. पू. के लगभग निर्धारित की गई है। भारत में नोह (राजस्थान) के दोआब क्षेत्र से लोहा, कृष्ण लोहित मृद्भांडों के साथ प्राप्त होता है, जिसकी संभावित तिथि 1400 ई.पू. के लगभग है। सर्वप्रथम उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) के ग्रंथों में हमें इस धातु के स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद में लोहा का उल्लेख 'श्यामअयस्' के रूप में प्राप्त होता है। इसमें लोहे के बने हुए फाल का भी उल्लेख प्राप्त होता है। अतरंजीखेड़ा (उत्तर प्रदेश) के उत्खनन से गेहूं, जौ तथा चावल के अवशेषों के साथ-साथ प्राचीनतम कृषि लौह उपकरण की प्राप्ति हुई है। पुरातत्वविदों ने इसका काल 1000 ई.पू. निर्धारित किया है जो अधिकांश विद्वानों के द्वारा स्वीकार्य है।

22. उपनिषद पुस्तकें हैं—

(a) धर्म पर (b) योग पर
(c) विधि पर (d) दर्शन पर

U.P.P.C.S. (Pre) 2002
U.P.P.C.S. (Mains) 2004

उत्तर—(d)

'उपनिषद' दर्शन पर आधारित पुस्तकें हैं। इन्हें वेदांत भी कहा जाता है।

23. उपनिषदों का मुख्य विषय है—

(a) सामाजिक व्यवस्था (b) दर्शन
(c) विधि (d) राज्य

U.P.Lower Sub. (Pre) 1998

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. निम्नलिखित में से किस एक वैदिक साहित्य में मोक्ष की चर्चा मिलती है?

(a) ऋग्वेद (b) परवर्ती संहिताएं
(c) ब्राह्मण (d) उपनिषद

U.P.P.C.S. (Mains) 2003

उत्तर—(d)

वेदों में मोक्ष शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है। उपनिषदों में प्रथम बार मोक्ष की चर्चा मिलती है। यह शब्द श्वेताश्वतर उपनिषद में पहली बार आया है।

25. अध्यात्म ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम का संवाद किस उपनिषद में प्राप्त होता है?

(a) बृहदारण्यक उपनिषद में (b) छांदोग्य उपनिषद में

(c) कठोपनिषद में (d) केन उपनिषद में

I.A.S. (Pre) 1997
U.P.P.C.S. (Pre) 1999
U.P.U.D.A./L.D.A. (Pre) 2002
Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2005

उत्तर—(c)

कठोपनिषद में यम और नचिकेता का संवाद उल्लिखित है। इसमें आचार्य यम ने नचिकेता को उपदेश दिया है—''न इस आत्मा का कभी जन्म होता है और न इसकी कभी मृत्यु होती है। यह अजन्मा, नित्य तथा शाश्वत है।'' 'कठोपनिषद' कृष्ण यजुर्वेद का उपनिषद है।

26. नचिकेता आख्यान का उल्लेख मिलता है—

(a) अथर्ववेद में (b) शतपथ ब्राह्मण में
(c) कठोपनिषद में (d) बृहदारण्यक उपनिषद में

U.P.P.C.S. (Mains) 2006

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. उपनिषद काल के राजा अश्वपति शासक थे—

(a) काशी के (b) केकय के
(c) पांचाल के (d) विदेह के

U.P.P.C.S. (Pre) 1999

उत्तर—(b)

उपनिषदों में वर्णित राजाओं में—विदेह के राजा जनक, पांचाल के राजा प्रवाहणजाबालि, केकय के राजा अश्वपति और काशी के राजा अजातशत्रु प्रमुख थे।

28. निम्नलिखित में से वैदिक साहित्य का सही क्रम कौन-सा है?

(a) वैदिक संहिताएं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद
(b) वैदिक संहिताएं, उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण
(c) वैदिक संहिताएं, आरण्यक, ब्राह्मण, उपनिषद
(d) वैदिक संहिताएं, वेदांग, आरण्यक, स्मृतियां

U.P.P.C.S. (Mains) 2014

उत्तर—(a)

वैदिक साहित्य का सही क्रम है—वैदिक संहिताएं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद।

29. आरंभिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी है—

(a) सिंधु (b) शुतुद्री
(c) सरस्वती (d) गंगा

I.A.S. (Pre) 1996

उत्तर—(a)

सिंधु नदी का ऋग्वैदिक काल में सर्वाधिक महत्व था, इसी कारण इसका उल्लेख ऋग्वेद में सर्वाधिक बार हुआ है। सिंधु नदी को उसके आर्थिक महत्व के कारण 'हिरण्यायी' कहा गया है।

30. वैदिक नदी अस्किनी की पहचान निम्नांकित नदियों में से किस एक के साथ की जाती है?

(a) ब्यास (b) रावी
(c) चेनाब (d) झेलम

U.P.P.S.C. (GIC) 2010

उत्तर—(c)

वैदिक नदी अस्किनी की पहचान चेनाब (चिनाब) नदी से की गई है। अतः विकल्प (c) सही उत्तर है।

31. ऋग्वेद में निम्नांकित किन नदियों का उल्लेख अफगानिस्तान के साथ आर्यों के संबंध का सूचक है?

(a) अस्किनी (b) परुष्णी
(c) कुभा, क्रुमु (d) विपाशा, शुतुद्री

U.P.C.S. (Pre) 2010

उत्तर—(c)

ऋग्वेद में उल्लिखित कुभा (काबुल), क्रुमु (कुर्रम), गोमती (गोमल) एवं सुवास्तु (स्वात) नदियां अफगानिस्तान में बहती थीं। इन नदियों के उल्लेख से स्पष्ट होता है कि आर्यों का अफगानिस्तान के साथ घनिष्ठ संबंध था।

32. वैदिक नदी कुभा का स्थान कहां निर्धारित होना चाहिए?

(a) अफगानिस्तान में (b) चीनी तुर्किस्तान में
(c) कश्मीर में (d) पंजाब में

U.P.P.C.S. (Pre) 1999

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I (वैदिक नदियां)	**सूची-II (आधुनिक नाम)**
A. कुभा	**1. गंडक**
B. परुष्णी	**2. काबुल**
C. सदानीरा	**3. रावी**
D. शुतुद्रि	**4. सतलुज**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	4	3
(b)	2	3	1	4

(c) 3 4 2 1
(d) 4 1 3 2

U.P.P.C.S. (Pre) 2012

उत्तर—(b)

विकल्प में दी गई वैदिक नदियां एवं उनके आधुनिक नामों का सुमेलन निम्नानुसार है—

(वैदिक नदियां)		(आधुनिक नाम)
कुभा	–	काबुल
परुष्णी	–	रावी
सदानीरा	–	गंडक
शुतुद्री या शतुद्रि	–	सतलुज

34. महाभारत काल में महानदी का नाम था—

(a) कावेरी (b) ताप्ती
(c) महानंदा (d) गंगा
(e) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर—(e)

महाभारत काल में महानदी का नाम चित्रोत्पला था। महानदी का उल्लेख महाभारत के भीष्म पर्व में प्राप्त होता है।

35. वायु पुराण में महानदी का पौराणिक नाम क्या है?

(a) चित्रोत्पला (b) नीलोत्पला
(c) कनक नंदिनी (d) महानंदा

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2022

उत्तर—(b)

महानदी का पौराणिक नाम वायु पुराण में 'नीलोत्पला' बताया गया है। मत्स्य पुराण और ब्रह्म पुराण में महानदी को चित्रोत्पला कहा गया है।

36. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रथा उत्तर-वैदिक काल (Post vedic) में प्रचलित हुई?

(a) धर्म - अर्थ - काम - मोक्ष
(b) ब्राह्मण - क्षत्रिय - वैश्य - शूद्र
(c) ब्रह्मचर्य - गृहस्थाश्रम - वानप्रस्थ - संन्यास
(d) इंद्र - सूर्य - रुद्र - मरुत

I.A.S. (Pre) 1994

उत्तर—(a&c)

चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष) तथा आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास) की अवधारणा का प्रारंभ उत्तर-वैदिक काल में हुआ था। वस्तुतः पुरुषार्थ का पूर्णरूपेण क्रियान्वयन आश्रमों के माध्यम से होता था। ये चारों पुरुषार्थ मानव जीवन के आधार स्तम्भ थे, जिनकी सफलता आश्रम पर निर्भर करती थी। ध्यातव्य है कि 'जाबालोपनिषद' में सर्वप्रथम चारों आश्रमों का उल्लेख प्राप्त होता है।

37. ''धर्म'' तथा ''ऋत'' भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के एक केंद्रीय विचार को चित्रित करते हैं। इस संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. धर्म व्यक्ति के दायित्वों एवं स्वयं तथा दूसरों के प्रति व्यक्तिगत कर्तव्यों की संकल्पना था।
2. ऋत मूलभूत नैतिक विधान था, जो सृष्टि और उसमें अंतर्निहित सारे तत्वों के क्रिया-कलापों को संचालित करता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

I.A.S. (Pre) 2011

उत्तर—(c)

प्रश्नगत दोनों कथन भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के संदर्भ में सही हैं। अतः सही उत्तर विकल्प (c) होगा। 'वरुण' देवता को वैदिक सभ्यता में 'नैतिक व्यवस्था' का प्रधान माना जाता था। इसी कारण उन्हें 'ऋतस्यगोपा' भी कहा जाता था।

38. भारतीय संस्कृति के अंतर्गत 'ऋत' का अर्थ है-

(a) प्राकृतिक नियम (b) कृत्रिम नियम
(c) मानवीय नियम (d) सामाजिक नियम
(e) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर—(a)

ऋग्वेद में हमें धर्म के अतिरिक्त दूसरा शब्द ऋत मिलता है। सभी देवताओं का संबंध ऋत (विश्व की नैतिक एवं भौतिक व्यवस्था) से माना गया है। ऋग्वेद में इसका वर्णन है। सृष्टि के आदि में सर्वप्रथम ऋत की उत्पत्ति हुई थी। ऋत के द्वारा विश्व में सुव्यवस्था तथा प्रतिष्ठा स्थापित होती है। यह विश्व की व्यवस्था का नियामक है।

39. निम्नलिखित वैदिक देवताओं में किसे उनका पुरोहित माना जाता था?

(a) अग्नि (b) बृहस्पति
(c) द्यौस (d) इन्द्र

U.P.P.C.S. (Mains) 2013

उत्तर—(b)

बृहस्पति को वैदिक देवताओं का पुरोहित माना जाता था।

40. निम्नलिखित में कौन-सी वह ब्रह्मवादिनी थी, जिसने कुछ वेद मंत्रों की रचना की थी?

(a) लोपामुद्रा (b) गार्गी
(c) लीलावती (d) सावित्री

I.A.S. (Pre) 1995

उत्तर—(a)

वैदिक साहित्य में कई ऐसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने वेद मंत्रों की रचना की थी। यथा–अपाला, घोषा, विश्ववारा, लोपामुद्रा आदि। 'लोपामुद्रा' अगस्त्य ऋषि की पत्नी थीं।

41. ऋग्वैदिक काल में निष्क शब्द का प्रयोग एक आभूषण के लिए होता था; किंतु परवर्ती काल में उसका प्रयोग इस अर्थ में हुआ–

(a) शस्त्र (b) कृषि औजार

(c) लिपि (d) सिक्का

I.A.S. (Pre) 1993

उत्तर–(d)

वैदिक काल में सोने के हार को 'निष्क' कहा जाता था; किंतु परवर्ती काल में इसका प्रयोग विनिमय के माध्यम (सिक्कों) के रूप में किया जाने लगा।

42. ऋग्वैदिक काल में निष्क किस अंग का आभूषण था?

(a) कान का (b) गला का

(c) बाहु का (d) कलाई का

U.P.P.C.S. (Mains) 2007

उत्तर–(b)

ऋग्वैदिक काल में निष्क गले में पहना जाने वाला एक प्रकार का हार था। जिसे निष्क-ग्रीवा कहा जाता था। साथ ही निष्क, वैदिक काल में विनिमय का एक माध्यम भी था।

43. प्राचीन भारत में 'निशाका' जाने जाते थे–

(a) स्वर्ण आभूषण (b) गायें

(c) तांबे के सिक्के (d) चांदी के सिक्के

U.P.P.C.S. (Pre) 2005

उत्तर–(a)

प्राचीन भारत में 'निष्क' (Niska) या 'निशाका' मूल रूप से गले में पहना जाने वाला एक सोने का आभूषण था, जिसे 'निष्क-ग्रीवा' कहा जाता था। इसे पुरुषों तथा महिलाओं दोनों द्वारा सामान्यतः पहना जाता था। बाद में निश्चित वजन तथा मानक को अपनाने के कारण इसका प्रयोग विनिमय के माध्यम के रूप में किया जाने लगा।

44. बोगजकोई महत्वपूर्ण है; क्योंकि–

(a) यह मध्य एशिया एवं तिब्बत के मध्य एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था।

(b) यहां से प्राप्त अभिलेखों में वैदिक देवताओं का नामोल्लेख प्राप्त होता है।

(c) वेद के मूल ग्रंथों की रचना यहां हुई थी।

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

U.P.P.C.S. (Pre) 1996

39thB.P.S.C. (Pre) 1994

उत्तर–(b)

एशिया माइनर स्थित बोगजकोई अभिलेख से चौदहवीं शताब्दी ई. पू. के अभिलेख में ऋग्वैदिक काल के देवताओं (इंद्र, वरुण, मित्र तथा नासत्य) का उल्लेख मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि वैदिक आर्य ईरान से होकर ही भारत में आए होंगे।

45. निम्नलिखित अभिलेखों में से कौन-सा ईरान से भारत में आर्यों के आने की सूचना देता है?

(a) मानसेहरा (b) शहबाजगढ़ी

(c) बोगजकोई (d) जूनागढ़

U.P.P.C.S. (Mains) 2009

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. 14वीं सदी ई.पू. का एक अभिलेख जिसमें वैदिक देवताओं का वर्णन है, प्राप्त हुआ है -

(a) एकबटाना से (b) बोगजकोई से

(c) बेबीलोन से (d) बिसोटुन से

U.P.P.C.S (Mains) 2016

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. निम्नलिखित में से किसने आर्यों के आदि देश के बारे में लिखा था?

(a) शंकराचार्य (b) एनी बेसेंट

(c) विवेकानंद (d) बाल गंगाधर तिलक

U.P.P.C.S. (Pre) 1996

उत्तर–(d)

बाल गंगाधर तिलक ने आर्यों के आदि देश के बारे में लिखा था। तिलक ने यह मत व्यक्त किया था कि आर्यों का आदि देश उत्तरी ध्रुव था। किंतु तिलक का यह मत इतिहासकारों में मान्य नहीं है।

48. जिस ग्रंथ में 'पुरुषमेध' का उल्लेख हुआ है, वह है–

(a) कृष्ण यजुर्वेद (b) शुक्ल यजुर्वेद

(c) शतपथ ब्राह्मण (d) पंचविश ब्राह्मण

U.P. P.C.S. (Spl.) (Pre) 2008

उत्तर–(*)

'पुरुषमेध' एक प्रमुख यज्ञ है। यह शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण तथा कृष्ण यजुर्वेद के तैत्तिरीय ब्राह्मण में वर्णित है। अतः प्रश्न के दिए गए विकल्पों में तीनों मौजूद होने के कारण कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता। यद्यपि अनेक इतिहासकार केवल शतपथ ब्राह्मण की चर्चा करते समय उसमें पुरुषमेध यज्ञ की चर्चा करते हैं।

49. शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित राजा विदेध माधव से संबंधित ऋषि थे—

(a) ऋषि भारद्वाज (b) ऋषि वशिष्ठ
(c) ऋषि विश्वामित्र (d) ऋषि गौतम राहुगण

U.P. Lower Sub. (Pre) 2015

उत्तर—(d)

आर्यों के पूर्व दिशा की ओर प्रसार के विषय में शतपथ ब्राह्मण में वर्णित विदेध माधव की आख्यायिका उल्लेखनीय है। इसके अनुसार, राजा विदेध माधव, जो सरस्वती नदी के तट पर निवास करते थे, ने वैश्वानर अग्नि को मुख में धारण किया था। घृत का नाम लेते ही वह अग्नि मुख से निकलकर पृथ्वी पर आ गई तथा नदियों को जलाते हुए पूर्व की और बढ़ गई। विदेध माधव तथा उनके पुरोहित गौतम राहुगण ने उसका अनुगमन किया; किंतु उत्तरगिरि (हिमालय) से प्रवाहित होने वाली सदानीरा नदी को वह नहीं जला सका। विदेध माधव द्वारा अपने निवास स्थान के विषय में पूछे जाने पर अग्नि ने उनसे सदानीरा नदी के पूर्व की ओर रहने का आदेश दिया।

50. उत्तर वैदिक काल में निम्नलिखित में से किनको आर्य संस्कृति का धुर समझा जाता था?

(a) अंग, मगध (b) कोसल, विदेह
(c) कुरु, पांचाल (d) मत्स्य, शूरसेन

U.P.P.C.S. (Mains) 2007

उत्तर—(c)

उत्तर वैदिक काल में नगरीकरण की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी थी। कुरु, पांचाल इस समय के प्रमुख नगर बन गए थे तथा ये नगर उत्तर वैदिक सभ्यता के मुख्य केंद्र या धुर (Hub) थे।

51. गोत्र शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम हुआ था—

(a) अथर्ववेद में (b) ऋग्वेद में
(c) सामवेद में (d) यजुर्वेद में

U.P.P.C.S (Mains) 2005

उत्तर—(b)

गोत्र शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में हुआ था। गोत्र शब्द का मूल अर्थ है–'गोष्ठ' अथवा वह स्थान जहां समूचे कुल का गोधन पाला जाता था।

52. पूर्व-वैदिक आर्यों का धर्म प्रमुखतः था—

(a) भक्ति (b) मूर्ति पूजा और यज्ञ
(c) प्रकृति पूजा और यज्ञ (d) प्रकृति पूजा और भक्ति

I.A.S. (Pre) 2012

उत्तर—(c)

पूर्व वैदिक आर्यों का धर्म मुख्यतः प्रकृति पूजा और यज्ञ पर आधारित था।

53. ऋग्वेद काल में जनता निम्न में से मुख्यतया किसमें विश्वास करती थी?

(a) मूर्ति पूजा (b) एकेश्वरवाद
(c) देवी पूजा (d) बलि एवं कर्मकांड

U.P.P.C.S. (Pre) 1993

उत्तर—(d)

ऋग्वैदिक काल में लोग प्रकृति की शक्तियों-वैदिक देवता एवं देवियों की प्रार्थना, यज्ञ (जिसमें बलि और कर्मकांड निहित थे) में विश्वास करते थे।

54. प्रसिद्ध दस राजाओं का युद्ध किस नदी के तट पर लड़ा गया?

(a) गंगा (b) ब्रह्मपुत्र
(c) कावेरी (d) परुष्णी

42nd B.P.S.C. (Pre) 1997

उत्तर—(d)

दशराज्ञ युद्ध (दस राजाओं का युद्ध) परुष्णी नदी (आधुनिक रावी नदी) के तट पर लड़ा गया, जिसमें भरतों के राजा सुदास की विजय हुई।

55. ऋग्वेद में उल्लिखित प्रसिद्ध 'दस-राजाओं' का युद्ध किस नदी के किनारे लड़ा गया था?

(a) परुष्णी (b) सरस्वती
(c) विपाशा (d) अस्किनी

U.P.P.C.S. (Mains) 2008

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

56. निम्न में से किस नदी को ऋग्वेद में 'मातेतमा' 'देवीतमा' एवं 'नदीतमा' संबोधित किया गया है?

(a) सिंधु (b) सरस्वती
(c) वितस्ता (d) यमुना

U.P.P.C.S. (Spl.) (Mains) 2008

उत्तर—(b)

ऋग्वेद में सरस्वती को 'मातेतमा', 'देवीतमा' एवं 'नदीतमा' कहा गया है; अर्थात सबसे अच्छी मां, सबसे अच्छी देवी तथा सबसे अच्छी नदी।

57. उस जनजाति का नाम बतलाइए, जो ऋग्वैदिक आर्यों के पंचजन से संबंधित नहीं है—

(a) यदु (b) पुरु
(c) तुर्वसु (d) किकट

U.P.P.C.S. (Mains) 2009

उत्तर—(d)

ऋग्वैदिक आर्यों के पंचजनों में यदु, द्रुह्यु, पुरु, अनु, तुर्वसु शामिल थे। किकट इनसे संबंधित नहीं है।

58. प्राचीन काल में आर्यों के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन था—

(a) कृषि (b) शिकार
(c) शिल्पकर्म (d) व्यापार

U.P.P.C.S. (Pre) 1993

उत्तर—(a)

आर्य संस्कृति मूलतः पशुपालक और कृषक संस्कृति रही है। ऋग्वेद में कई मंत्रों में कृषि तथा उसके कार्यकलापों का वर्णन है। अच्छी कृषि के लिए वर्षा की कामना की गई है तथा पशुओं को चराने और पालने का अनेक स्थलों पर वर्णन है। उत्तर वैदिक काल तो कृषि प्रधान संस्कृति ही था।

59. ऋग्वेद में उल्लिखित 'यव' शब्द किस कृषि उत्पाद हेतु प्रयुक्त किया गया है?

(a) जौ (b) चना
(c) चावल (d) गेहूं

U.P.P.C.S. (Spl.) (Mains) 2008

उत्तर—(a)

ऋग्वेद में उल्लिखित 'यव' शब्द का जौ से तादात्म्य स्थापित किया गया है।

60. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए—

सूची-I	**सूची-II**
(A) व्रीही	**(i) गन्ना**
(B) मुद्‌ग	**(ii) चावल**
(C) यव	**(iii) मूंग**
(D) इक्षु	**(iv) जौ**

कूट :

(a) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)
(b) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)
(c) A-(iii), B-(iv), C-(i), D-(ii)
(d) A-(ii), B-(iii), C-(iv), D-(i)

R.AS./R.T.S (Pre) 2021

उत्तर—(d)

सही सुमेलन इस प्रकार है—

सूची-I	**सूची-II**
व्रीही	चावल
मुद्‌ग	मूंग
यव	जौ
इक्षु	गन्ना

61. ऋग्वैदिक 'पणि' किस वर्ग के नागरिक थे?

(a) पुरोहित (b) लोहार
(c) स्वर्णकार (d) व्यापारी

M.P.P.C.S. (Pre) 2019

उत्तर—(d)

व्यापार-वाणिज्य प्रधानतः 'पणि' लोग करते थे। ऋग्वेद में 'पणि' शब्द का उल्लेख कई स्थानों पर हुआ है। पणि ऋण देते थे तथा ब्याज बहुत अधिक लेते थे। उन्हें 'वेकनाट' (सूदखोर) कहा गया है।

62. वैदिक युग में प्रचलित लोकप्रिय शासन प्रणाली थी—

(a) निरंकुश (b) प्रजातंत्र
(c) गणतंत्र (d) वंश परंपरागत राजतंत्र

R.A.S./R.T.S. (Pre) 1993

उत्तर—(d)

वैदिक काल में प्रचलित लोकप्रिय शासन प्रणाली वंश परंपरागत राजतंत्र प्रणाली थी। यद्यपि जनता द्वारा चुनाव के भी कुछ उदाहरण मिलते हैं।

63. वैदिकयुगीन सभा—

(a) गांवों के व्यावसायिक लोगों की संस्था थी
(b) राज-दरबार होता था
(c) मंत्रिपरिषद थी
(d) राज्य के समस्त लोगों की एक राष्ट्रीय सभा थी

R.A.S./R.T.S. (Pre) 1994

उत्तर—(c)

वैदिक काल में सभा एवं समिति नामक दो संस्थाएं राजा की निरंकुशता पर नियंत्रण रखती थीं। संभवतः सभा कुलीन या वृद्ध मनुष्यों की संस्था थी, जिसमें उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति ही भाग ले सकते थे।

64. किस वेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है?

(a) ऋग्वेद (b) सामवेद
(c) यजुर्वेद (d) अथर्ववेद

U.P.P.C.S. (Mains) 2009

उत्तर—(d)

अथर्ववेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।

65. ऋग्वैदिक जन सभा जो न्यायिक कार्यों से संबंधित थी-

(a) सभा (b) समिति
(c) विधाता (d) उपर्युक्त में से सभी

Jharkhand P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर—(a)

सभा, समिति एवं विदथ ऋग्वैदिक कालीन जनतांत्रिक संस्थाएं थीं। इन संस्थाओं में सभा न्यायिक कार्यों से संबंधित थी। ऋग्वेद में सभा का आठ बार उल्लेख हुआ है।

66. वैदिककालीन प्रशासन में 'भागदुह' कौन अधिकारी था?

(a) जुआ विभाग का प्रधान अधिकारी
(b) राजस्व कर जमा करने वाला
(c) समाचार पहुंचाने वाला दूत
(d) जंगलों का प्रधान अधिकारी

U.P.P.C.S. (Pre) 2023

उत्तर—(b)

वैदिककालीन प्रशासन में 'भागदुह' राजस्व कर जमा करने वाला अधिकारी (अर्थमंत्री) होता था, जबकि अक्षवाप द्यूत अधिकारी एवं आय-व्यय गणनाध्यक्ष होता था।

67. 'आयुर्वेद' अर्थात 'जीवन का विज्ञान' का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है—

(a) आरण्यक में (b) सामवेद में
(c) यजुर्वेद में (d) अथर्ववेद में

U.P.P.C.S. (Pre) 1994

उत्तर—(d)

अथर्ववेद में सामान्य मनुष्यों के विचारों तथा अंधविश्वासों का विवरण मिलता है। इसमें विविध विषयों यथा—रोग-निवारण, समन्वय, राजभक्ति, विवाह तथा प्रणय-गीतों आदि के विवरण सुरक्षित हैं।

68. ऋग्वैदिक धर्म था—

(a) बहुदेववादी (b) एकेश्वरवादी
(c) अद्वैतवादी (d) निवृत्तमार्गी

U.P.P.C.S. (Mains) 2014

उत्तर—(a)

ऋग्वेद में हमें प्रथम दृष्टया बहुदेववाद (Polytheism) के दर्शन होते हैं। आर्य विभिन्न देवताओं के अस्तित्व में विश्वास करते थे। मुख्यतः वैदिक देवताओं के तीन वर्ग हैं– 1. द्युस्थान (आकाश) के देवता, 2. अंतरिक्ष के देवता तथा 3. पृथ्वी के देवता। इन देवताओं की स्तुति करते समय वैदिक ऋषि जब जिस देवता की स्तुति करते हैं, उसे ही प्रमुख या सर्वश्रेष्ठ देवता कहते हैं। इसे एकैक्यवाद भी कहा जाता है। इसके अलावा ऋग्वेद में ''एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति'' कहकर एकेश्वरवाद का भी समर्थन किया गया है। ऋग्वेद में आर्यों के प्रधान देवता प्राकृतिक शक्तियों के प्रतिनिधि थे, जिनका मानवीकरण किया गया था।

69. सर्वाधिक ऋग्वैदिक सूक्त समर्पित हैं—

(a) अग्नि को (b) इंद्र को
(c) रुद्र को (d) विष्णु को

U.P.P.C.S. (Mains) 2002

उत्तर—(b)

ऋग्वेद में इंद्र का वर्णन सर्वाधिक प्रतापी देवता के रूप में किया गया है, जिसे 250 सूक्त समर्पित हैं। यह ऋग्वैदिक काल में सर्वाधिक लोकप्रिय देवता थे। इंद्र को आर्यों का युद्ध नेता तथा वर्षा का देवता माना जाता है। ऋग्वेद में अग्नि को 200 सूक्त समर्पित हैं और वह इस काल के दूसरे सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता हैं।

70. निम्नलिखित में से किसे ऋग्वेद में युद्ध-देवता समझा जाता है?

(a) अग्नि (b) इंद्र
(c) सूर्य (d) वरुण

U.P.P.C.S. (Mains) 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

71. ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में मंत्र संबंधित हैं—

(a) अग्नि से (b) वरुण से
(c) विष्णु से (d) यम से

U.P.P.C.S. (Mains) 2010

उत्तर—(a)

ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में मंत्र इंद्र को समर्पित हैं; किंतु वह इस प्रश्न के विकल्प में नहीं है। दूसरे स्थान पर अग्नि को 200 सूक्त समर्पित हैं। अतः सही उत्तर विकल्प (a) है।

72. ऋग्वेद के सर्वाधिक मंत्र किस वैदिक देवता को समर्पित हैं?

(a) अग्नि (b) इंद्र
(c) वरुण (d) आदित्य

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

73. वैदिक देवता इंद्र के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए–

1. झंझावत के देवता थे।
2. पापियों को दंड देते थे।
3. नैतिक व्यवस्था के संरक्षक थे।
4. वर्षा के देवता थे।

कूट :

(a) 1 एवं 2 सही हैं। (b) 1 एवं 3 सही हैं।
(c) 2 एवं 4 सही हैं। (d) 1 एवं 4 सही हैं।

U.P.P.C.S. (Mains) 2017

उत्तर—(d)

ऋग्वेद में इंद्र का वर्णन सर्वाधिक प्रतापी देवता के रूप में किया जाता है, जिसे 250 सूक्त समर्पित हैं। यह ऋग्वैदिक काल में सर्वाधिक लोकप्रिय देवता थे। इंद्र को आर्यों का युद्ध नेता तथा वर्षा, आंधी, तूफान का देवता माना जाता है। इंद्र को वृत्तासुरहंता (वृत्तासुर नामक राक्षस का वध करने वाला), पुरभिद (किला को भेदने वाला), सोमापा (सोम का अत्यधिक पान करने वाला), शतक्रति (एक सौ शक्तियों का स्वामी) आदि नामों से जाना जाता है। नैतिक व्यवस्था का संरक्षक वरुण को कहा गया है। इसके अतिरिक्त कुछ मंत्रों में पापियों को दंड देने के लिए इंद्र और सोम से प्रार्थना की गई है। इससे स्पष्ट होता है कि इंद्र पापियों को दंड भी देते थे। प्रश्न विकल्प में कथन 1, 2, 4 न होने के कारण विकल्प (d) 1 एवं 4 ज्यादा उपयुक्त उत्तर है।

74. निम्नलिखित में से पूर्व वैदिक आर्यों का सर्वाधिक लोकप्रिय देवता कौन था?

(a) वरुण (b) विष्णु
(c) रुद्र (d) इंद्र

U.P.P.C.S. (Mains) 2008

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

75. वैदिक देवमंडल में निम्न में से कौन देवता युद्ध का देवता माना जाता है?

(a) वरुण (b) इंद्र
(c) मित्र (d) अग्नि

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर—(b)

ऋग्वैदिक आर्यों के सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रतापी देवता इंद्र थे। इन्हें ऋग्वेद में विभिन्न नामों से पुकारा गया है। इन्हें पुरंदर; अर्थात किलों को तोड़ने वाला कहा गया है। यह युद्ध के नेता के रूप में चित्रित हैं। इंद्र को वृत्तासुर हंता (वृत्तासुर नामक राक्षस का वध करने वाला), पुरभिद (दुर्ग या किला को भेदने वाला), सोमापा (सोम का अत्यधिक पान करने वाला), शतक्रति (एक सौ शक्तियों का स्वामी), आदि नामों से जाना जाता है।

76. 800 से 600 ईसा पूर्व का काल किस युग से जुड़ा है?

(a) ब्राह्मण युग (b) सूत्र युग
(c) रामायण युग (d) महाभारत युग

U.P.P.C.S. (Pre) 2002

उत्तर—(a)

800 से 600 ईसा पूर्व का काल ब्राह्मण ग्रंथों के प्रणयन युग से जुड़ा है। प्रायः सातवीं या छठी शताब्दी ई. पू. से लेकर तीसरी शताब्दी ई. पू. तक का समय सूत्र काल कहा जाता है।

77. गायत्री मंत्र किस पुस्तक में मिलता है?

(a) उपनिषद (b) भगवद्गीता
(c) ऋग्वेद (d) यजुर्वेद

39th B.P.S.C. (Pre) 1994

उत्तर—(c)

'गायत्री मंत्र' ऋग्वेद में उल्लिखित है। इसके रचनाकार विश्वामित्र हैं। यह सवितृ (सूर्य देवता) को समर्पित है। यह मंत्र ऋग्वेद के तृतीय मंडल में वर्णित है।

78. गायत्री मंत्र के नाम से प्रसिद्ध मंत्र सर्वप्रथम किस ग्रंथ में मिलता है?

(a) भगवद्गीता (b) अथर्ववेद
(c) ऋग्वेद (d) मनुस्मृति

U.P. P.C.S. (Pre) 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

79. गायत्री मंत्र की रचना किसने की थी?

(a) वशिष्ठ (b) विश्वामित्र
(c) इंद्र (d) परीक्षित

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2006

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

80. सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित संकेतक हैं—

(a) वेदों के (b) पुराणों के
(c) उपनिषदों के (d) सूत्रों के

U.P. P.C.S. (Pre) (Re-Exam) 2015

उत्तर—(b)

पुराणों में पांच प्रकार के विषयों का वर्णन सिद्धांततः इस प्रकार है – सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर तथा वंशानुचरित। सर्ग बीज या आदि सृष्टि का पुराण है। प्रतिसर्ग प्रलय के बाद की पुनर्सृष्टि को कहते हैं। वंश में देवताओं या ऋषियों के वंश वृक्षों का वर्णन है। मन्वन्तर में कल्प के महायुगों का वर्णन है और वंशानुचरित पुराणों के वे अंग हैं, जिनमें राजवंशों की तालिकाएं दी हुई हैं और राजनीतिक अवस्थाओं, कक्षाओं तथा घटनाओं के वर्णन हैं।

81. पुराणों की संख्या है—

(a) 16 (b) 18
(c) 19 (d) 21

U.P.P.S.C. (GIC) 2010
U.P.P.C.S. (Pre) 2009

उत्तर—(b)

पुराणों की संख्या 18 है। इनकी रचना लोमहर्ष ऋषि तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा द्वारा की गई थी।

82. पुराणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है?
1. विष्णु पुराण से मौर्य वंश की जानकारी मिलती है।
2. वायु पुराण गुप्त वंश की शासन व्यवस्था पर प्रकाश डालता है।

(a) केवल 1 (b) न तो 1 ना ही 2
(c) केवल 2 (d) दोनों 1 तथा 2

U.P.P.C.S. (Pre) 2023

उत्तर—(d)

विष्णु पुराण से मौर्य वंश की जानकारी मिलती है, जबकि वायु, विष्णु और ब्राह्मण से गुप्त वंश की जानकारी प्राप्त होती है। वायु पुराण से गुप्त वंश की शासन व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है।

83. 'श्रीमद्भागवद्गीता' मौलिक रूप में किस भाषा में लिखी गई थी?

(a) संस्कृत (b) उर्दू
(c) पालि (d) हिंदी

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Pre) 2007

उत्तर—(a)

'श्रीमद्भागवद्गीता' मौलिक रूप से संस्कृत भाषा में लिखी गई थी। यह प्राचीन धार्मिक ग्रंथ 'महाभारत' का एक भाग है।

84. महाभारत मूलतः किस रूप में जानी जाती थी?

(a) वृहत्कथा (b) ब्राह्मण
(c) वृहत्संहिता (d) जयसंहिता

U.P.R.O./A.R.O. (Pre) 2014

उत्तर—(d)

महाभारत के प्रारंभिक रचना काल में 8,800 श्लोक थे और इसे 'जयसंहिता' के नाम से जाना जाता था। महाभारत का दूसरा संस्करण 'भारत' था, जिसमें श्लोकों की संख्या 24,000 थी। वर्तमान महाभारत में एक लाख श्लोक प्राप्त हैं। यह इसका अंतिम संस्करण है, जिसे 'शतसहस्री संहिता' या 'महाभारत' कहा गया।

85. शतसाहस्त्री-संहिता उपनाम निम्नलिखित में से किस ग्रंथ का है?

(a) ऋग्वेद (b) अथर्ववेद
(c) रामायण (d) महाभारत

U.P.B.E.O. (Pre) 2019

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

86. हिंदू पौराणिक कथा के अनुसार, समुद्र मंथन हेतु किस सर्प ने रस्सी के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया?

(a) कालिया (b) वासुकी
(c) पुष्कर (d) शेषनाग

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Pre) 2007

उत्तर—(b)

हिंदू पौराणिक कथा के अनुसार, समुद्र मंथन हेतु मथानी के रूप में मंद्राचल पर्वत तथा रस्सी के रूप में सर्पों के राजा वासुकी का प्रयोग किया गया था।

87. किस काल में अछूत की अवधारणा स्पष्ट रूप से उद्धृत हुई थी?

(a) ऋग्वैदिक काल में (b) उत्तर वैदिक काल में
(c) उत्तर-गुप्त काल में (d) धर्मशास्त्र के समय में

39th B.P.S.C. (Pre) 1994

उत्तर—(d)

धर्मशास्त्रों के समय में (सूत्र काल में) चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) के अतिरिक्त समाज में अन्य अनेक जातियों यथा—अम्बष्ठ, उग्र, निषाद, मागध, वैदेहक, रथकार आदि का आविर्भाव अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाहों के फलस्वरूप हो गया। पाणिनि ने दो प्रकार के शूद्रों का उल्लेख किया है—निरवसित एवं अनिरवसित। इनमें पहले प्रकार के शूद्र ही अस्पृश्य माने जाते थे।

88. 'सत्यमेव जयते' शब्द किस उपनिषद से लिए गए हैं?

(a) मुंडकोपनिषद (b) कठोपनिषद
(c) छांदोग्योपनिषद (d) इनमें से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Spl.) (Pre) 2004
U.P.P.C.S. (Mains) 2004

उत्तर—(a)

'सत्यमेव जयते' शब्द मुंडकोपनिषद से लिया गया है, जिसका अर्थ है—'सत्य की ही विजय होती है।' यह भारत के राजचिह्न पर भी अंकित है।

89. 'सत्यमेव जयते' शब्द कहां से लिया गया है?

(a) मनुस्मृति (b) भगवद्गीता
(c) ऋग्वेद (d) मुंडक उपनिषद

U.P.P.C.S. (Pre) 1991
M.P. P.C.S. (Pre) 1992, 1994
I.A.S. (Pre) 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

90. भारतीय प्रतीक पर उत्कीर्ण 'सत्यमेव जयते' लिया गया है-

(a) ऋग्वेद से (b) भगवद्गीता से
(c) मुंडकोपनिषद से (d) मत्स्यपुराण से

U.P.P.S.C. (R.I.) 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

91. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' कथन है, मूलतः

(a) उपनिषदों का (b) महाकाव्यों का
(c) पुराणों का (d) षड्दर्शन का
(e) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर—(a)

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' कथन बृहदारण्यक उपनिषद से लिया गया है। इस कथन का अर्थ है- 'अंधकार से प्रकाश की ओर'।

92. किस उपनिषद का शाब्दिक अर्थ सफेद घोड़ा है?

(a) कठोपनिषद (b) छांदोग्य उपनिषद
(c) तैत्तिरीय उपनिषद (d) ईशोपनिषद
(e) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर—(e)

विकल्प में दिए गए किसी उपनिषद का तात्पर्य सफेद घोड़ा नहीं है। श्वेताश्वतर उपनिषद का अर्थ 'सफेद घोड़ों द्वारा खीचा गया' (Drawn by white Steeds) है।

93. सत्यकाम जाबाल की कथा, जो अनब्याही मां होने के लांछन को चुनौती देती है, उल्लेखित है—

(a) जाबाल उपनिषद (b) प्रश्नोपनिषद
(c) छांदोग्य उपनिषद (d) कठोपनिषद

R.A.S./R.T.S (Pre) 2016

उत्तर—(c)

सत्यकाम जाबाल महर्षि गौतम के शिष्य थे, जिनकी माता का नाम जाबाला था। सत्यकाम जाबाल की कथा जो अनब्याही मां होने के लांछन को चुनौती देती है, इनकी कथा छांदोग्य उपनिषद में उल्लेखित है।

94. ऋग्वेद की मूल लिपि थी—

(a) देवनागरी (b) खरोष्ठी
(c) पालि (d) ब्राह्मी

U.P.P.C.S. (Spl.) (Pre) 2004

उत्तर—(d)

ऋग्वेद की मूल लिपि ब्राह्मी थी। ऋग्वेद में कुल 10 मंडल हैं तथा 1028 सूक्त हैं। ऋग्वेद के पुरोहित को 'होता' कहा जाता था।

95. वैदिक कर्मकांड में 'होता' का संबंध है -

(a) ऋग्वेद से (b) यजुर्वेद से
(c) सामवेद से (d) अथर्ववेद से

U.P.R.O./A.R.O. (Mains) 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

96. अवेस्ता और ऋग्वेद में समानता है। अवेस्ता किस क्षेत्र से संबंधित है?

(a) भारत से (b) ईरान से
(c) इस्राइल से (d) मिस्र से

U.P. Lower Sub. (Spl.) (Pre) 2004

उत्तर—(b)

अवेस्ता और ऋग्वेद दोनों में कुछ भाषिक समानता हैं। अवेस्ता ईरान के क्षेत्र से संबंधित है, जबकि ऋग्वेद का संबंध आर्यों से हैं।

97. वैदिक काल में किस जानवर को ''अघन्या'' माना गया है?

(a) बैल (b) भेड़
(c) गाय (d) हाथी

U.P.P.C.S. (Pre) 2008

उत्तर—(c)

वैदिक काल में गाय को 'अघन्या' (न मारे जाने योग्य) माना गया है। गाय की हत्या अथवा उसे घायल करने वाले व्यक्ति को मृत्युदंड तथा देश निकाला की व्यवस्था वेदों में दी गई है।

98. ऋग्वेद में अघन्या का प्रयोग हुआ है—

(a) बकरी के लिए (b) गाय के लिए
(c) हाथी के लिए (d) घोड़े के लिए

U.P. U.D.A./L.D.A. (Spl.) (Pre) 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

99. ऋग्वेद में कई परिच्छेदों में प्रयुक्त 'अघन्य' शब्द संदर्भित है-

(a) पुजारी के लिए (b) स्त्री के लिए
(c) गाय के लिए (d) ब्राह्मण के लिए

U.P.P.C.S. (Pre) 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

100. ऋग्वेद-कालीन आर्यों और सिंधु घाटी के लोगों की संस्कृति के बीच अंतर के संबंध में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

1. ऋग्वेद-कालीन आर्य कवच और शिरस्त्राण (हेलमेट) का उपयोग करते थे, जबकि सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों में इनके उपयोग का कोई साक्ष्य नहीं मिलता।
2. ऋग्वेद-कालीन आर्यों को स्वर्ण, चांदी और ताम्र का ज्ञान था, जबकि सिंधु घाटी के लोगों को केवल ताम्र और लौह का ज्ञान था।

3. ऋग्वेद-कालीन आर्यों ने घोड़े को पालतू बना लिया था, जबकि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि सिंधु घाटी के लोग इस पशु को जानते थे।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए-

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

I.A.S. (Pre) 2017

उत्तर—(a)

ऋग्वेद में कवच (वर्म) का उल्लेख है तथा संभवतः ऋग्वेद-कालीन आर्य लौह एवं स्वर्ण से निर्मित कवच और शिरस्त्राण (हेलमेट) का प्रयोग करते थे। जबकि सैंधव सभ्यता के लोगों में इसके उपयोग का कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं होता। सिंधु सभ्यता के स्थलों के उत्खनन से प्राप्त युद्ध संबंधी उपकरण अत्यंत साधारण कोटि के हैं, जो इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उन्होंने भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर ही विशेष ध्यान दिया था। ऋग्वेद-कालीन आर्यों को स्वर्ण, चांदी और ताम्र का ज्ञान था। सिंधु कालीन लोगों को केवल ताम्र एवं कांसे का ही ज्ञान था। लोहे का प्रचलन उत्तर भारत में 1000 ई.पू.- 600 ई.पू. के मध्य हुआ था। अतः कथन (2) गलत है। ऋग्वैदिक-कालीन आर्यों ने घोड़े को पालतू बना लिया था, जिसकी सहायता से वे युद्धों में विजय प्राप्त करते थे। सिंधु सभ्यता के विभिन्न स्थलों में भी घोड़े के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। अतः कथन (3) भी गलत है। इस प्रकार कथन (1) ही सही है। अतः सही उत्तर विकल्प (a) होगा।

101. ऋग्वैदिक काल के प्रारंभ में निम्न में से किसे महत्वपूर्ण मूल्यवान संपत्ति समझा जाता था?

(a) भूमि को (b) गाय को

(c) स्त्रियों को (d) जल को

U.P. P.C.S. (Pre) (Re-Exam) 2015

उत्तर—(b)

ऋग्वैदिक काल के प्रारंभ में गाय को महत्वपूर्ण संपत्ति समझा जाता था। इस काल में गायें मुख्यतः विनिमय का माध्यम होती थीं। ऋग्वेद के कुछ सूक्तों में गाय को देवता के रूप में कल्पित किया गया है।

102. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए :

सूची - I	**सूची - II**
A. सिंधु घाटी सभ्यता	**1. चारागाह**
B. उत्तर वैदिक समाज	**2. जमींदारी**
C. ऋग्वैदिक समाज	**3. कृषक**
D. मध्य काल	**4. नगरीय**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	4	2	3	1
(b)	2	1	4	3
(c)	3	4	1	2
(d)	4	3	1	2

U.P.P.C.S. (Pre) 2020

उत्तर—(d)

सूची - I का सूची - II से सही सुमेलन है-

सूची - I	**सूची - II**
सिंधु घाटी सभ्यता	नगरीय
उत्तर वैदिक समाज	कृषक
ऋग्वैदिक समाज	चारागाह
मध्य काल	जमींदारी

103. प्राचीन भारतीय समाज के प्रसंग में, निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द शेष तीन के वर्ग का नहीं है?

(a) कुल (b) वंश

(c) कोश (d) गोत्र

I.A.S. (Pre) 1996

उत्तर—(c)

प्राचीन भारतीय समाज के संदर्भ में कुल, वंश तथा गोत्र परिवार से संबंधित हैं, जबकि कोश परिवार से संबंधित न होकर भंडार से संबंधित है।

104. संस्कारों की कुल संख्या कितनी है?

(a) 10 (b) 12

(c) 15 (d) 16

M.P. P.C.S. (Pre) 2015

उत्तर—(d)

'संस्कार' का शाब्दिक अर्थ है—परिष्कार, शुद्धता अथवा पवित्रता। गौतम धर्मसूत्र में इसकी संख्या चालीस (40) मिलती है। मनु ने गर्भाधान से मृत्यु-पर्यंत तेरह संस्कारों का उल्लेख किया है। बाद की स्मृतियों में इनकी संख्या सोलह (16) स्वीकार किया गया। आज यही सर्वप्रचलित है।

105. जीविकोपार्जन हेतु 'वेद-वेदांग' पढ़ाने वाला अध्यापक कहलाता था—

(a) आचार्य (b) अध्वर्यु

(c) उपाध्याय (d) पुरोहित

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Mains) 2007

उत्तर—(c)

वैदिक काल में जीविकोपार्जन हेतु 'वेद-वेदांग' पढ़ाने वाला अध्यापक उपाध्याय कहलाता था। आचार्य गुरुकुल की स्थापना करके अपने शिष्यों को पढ़ाता था तथा कोई फीस नहीं लेता था; किंतु शिष्य के द्वारा दी गई दक्षिणा स्वीकार कर लेता था।